

ख़ानकाहे बरकातिया मारहरा शरीफ़ का दीनी व समाजी तर्जुमान

तिमाही पयामे

बरकात

अप्रैल ता जून 2016

जि० 1 शुमारा 1

सरपरस्ते आला

अमीने मिल्लत हज़रत प्रोफ़ेसर सय्यद मुहम्मद अमीन मियाँ कादरी
सज्जादा नशीन ख़ानकाहे बरकातिया, मारहरा शरीफ़, एटा, (यूपी)

मजलिसे मुशावरत

शरफ़े मिल्लत हज़रत सय्यद मुहम्मद अशरफ़ मारहरवी
चीफ़ इन्कमटैक्स कमिशनर कोलकाता (पश्चिम बंगाल)

फ़ज़ले मिल्लत हज़रत सय्यद मुहम्मद अफ़ज़ल कादरी
ए.डी.जी (लोकायुक्त) भोपाल, (मध्य प्रदेश)

रफ़ीके मिल्लत हज़रत सय्यद नजीब हैदर नूरी
सज्जादा नशीन ख़ानकाहे बरकातिया, मारहरा शरीफ़, एटा, (यूपी)

मजलिसे इदारत

डॉ० अहमद मुजतबा सिद्दीकी
सय्यद मुहम्मद उस्मान कादरी

सय्यद मुहम्मद अमान कादरी
सय्यद हसन हैदर कादरी

मुदीर

तौहीद अहमद बरकाती

कम्पोज़र व डिज़ाइनर

मुहम्मद हाशिम ख़ान बरकाती

ख़त व किताबत का पता:

तिमाही पयामे बरकात

Payam-e-Barkaat (Quarterly)

कीमत फी शुमारा : 30 / — ₹

Al-Barkaat Islamic Research & Training
Institute, Jamalpur, Aligarh (U.P) 202122

सालाना : 100 / — ₹

[E-mail: pyamebarkaat@gmail.com](mailto:pyamebarkaat@gmail.com)

पब्लिशर और प्रोपराइटर सय्यद मुहम्मद अमान कादरी ने A to Z प्रिन्टर्स 7476 गली जगन्नाथ मन्दिर, नई कोतवाली, दरियागंज
नई दिल्ली 2 से छपवाकर दफ़्तर तिमहाही पयामे बरकात (ABIRTI) अलबरकात अलीगढ़ से शाए किया। एडीटर तौहीद अहमद बरकाती

नोट: रिसाले से मुताल्लिक कोई भी मुकद्दमा सिर्फ़ अलीगढ़ की अदालत में काबिले समाअत होगा।

तिमाही पयामे बरकात

अप्रैल ता जून 2016

कॉलम	मजामीन	मजमून निगार	पेज न०
पैग़ाम	अपने गुनाहों को मामूली न समझें	हज़रत मीर अब्दुल वाहिद बिलग्रामी	3
इदारिया	अपनी बात	एडीटर	4
अनवारे कुरआन	सूरह फ़ातिहा की तफ़सीर	मौ० नोमान अहमद अज़हरी	5
तजल्लियाते हदीस	तौबा की अहमियत व फ़ज़ीलत	मौ० मुहम्मद इरफ़ान अज़हरी	9
इस्लामी अक़ीदा	ज़रूरियाते दीन की वज़ाहत	मौ० साजिद अली मिस्बाही	12
मजामीन	हलाल रोज़ी की फ़ज़ीलत	मौ. अब्दुल मुबीन नोमानी	15
	वाक़या-ए-मेराज के कुछ सीखें!	मौ० सादिक़ रज़ा मिस्बाही	19
	...अल्लाह का साया ख़्वाजा	तौहीद अहमद बरकाती	24
	माहे शाबान के फ़ज़ाइल	मौ० ज़ियाउलहक़ बरकाती	28
गोशा-ए-ख़ानकाह	ख़ानकाहे बरकातिया: एक तज़ारूफ़	डॉ० अहमद मुजतबा सिद्दीकी	31
	मशाइख़े सिलसिला-ए-बरकातिया	सय्यद मुहम्मद अमान कादरी	34
	बरकाते ख़ानदाने बरकात	हज़रत सय्यद नजीब हैदर नूरी	36
	हज़रत शाह अबुल हुसैन अहमद नूरी	सय्यद हसन हैदर कादरी	37
नात व मन्क़वत	महबूबे खुदा हो	सय्यद मुहम्मद अशरफ़ मारहरवी	41
	मक़ामे अबुल हुसैन	इमाम अहमद रज़ा ख़ान अलैहिर्रहमा	42
इंटरव्यू	डॉ० अलीमुद्दीन से एक मुलाकात	इदारा	43
तिब व सेहत	कैंसर को जानिये!	डॉ० शाहिद हुसैन सिद्दीकी	46
बच्चों का कॉलम	इम्तिहान के तनाव से कैसे बचें?	ताहिरा हुसैन सिद्दीकी	49
तब्लीगी दौरे	मुर्शिदाने किराम के तब्लीगी दौरे	मुहम्मद अकबर कादरी/ कारी मुहम्मद कौसर बरकाती	51
बरकाती ख़बरें	ख़ानकाह की सरगर्मियाँ	इदारा	55
ख़ुतूत	नामा बर	क़ारेईने किराम	62
हल-ए-लुगात	मुश्किल अलफ़ाज़ की तशरीह	इदारा	64



नोट: मजमून निगार के अफ़कार व ख़्यालात से इदारे का मुत्तफ़िक़ होना ज़रूरी नहीं है।



अपने गुनाहों को मामूली न समझें।

(हज़रत मीर अब्दुल वाहिद बिलग्रामी अलैहिर्रहमा)

इस कॉलम के तहत मारहरा व बिलग्राम के मशाइखें किराम में से किसी एक शेख का पैग़ाम हर शुमारे में शाए किया जायेगा। इस शुमारे में हज़रत मीर अब्दुल वाहिद बिलग्रामी अलैहिर्रहमा की मशहूरे ज़माना किताब “सबअ सनाबिल” से एक इक्तेबास पेशे ख़िदमत है। (इदारा)

ऐ भाई! अल्लाह वाले अपनी एताअत (फ़रमोबरदारी) और इबादत को अगरचे बे क़द्र और बे कीमत जानते हैं, मगर अल्लाह तआला के नज़दीक वह बेश कीमत (बहुत कीमती) होती है और लगज़िशों (ग़लतियों) और गुनाहों को जितना वह बोझल और बुरा समझते हैं, वह उतने ही हल्के और छोटे रह जाते हैं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के दोनों रूख़्सारों (गालों) पर दो काली लकीरें पड़ गयी थीं, ताकि लोगों को मालूम हो जाए कि दोस्तों का रोना मासियत (गुनाह) का रोना नहीं, गिरिया-ए-मारेफ़त है कि वह अपने वजूद को सर से पैर तक नाक़िस और ऐबी जानते हैं, कि तेरा वजूद एक गुनाह है इसके बराबर किसी गुनाह का क़यास (अन्दाज़ा) नहीं किया जा सकता। और अपने नक्स और ऐबों पर जितनी मारेफ़त बढ़ती जाती है उतनी ही गिरिया व ज़ारी (रोने) में तरक्की होती जाती है। अगर गुनाहगार और आसी अपने गुनाहों को नदामत (शर्मिन्दगी) के पानी से न धोता रहे तो वह हलाक हो जाए।

नक़ल है कि एक मर्तबा सुफ़ियान सौरी और शैबान राई एक जगह जमा हुए। हज़रत सुफ़ियान सौरी तमाम रात रोते रहे। इमाम शैबान ने दरियाफ़त किया (पूछा) कि “ऐ सुफ़ियान! इतना क्यों रोते हो? अगर

गुनाहों के सबब रोते हो तो अल्लाह तआला की नाफ़रमानी मत करो।” आपने जवाब दिया कि “मेरे रोने का सबब अपने ख़ातमे (मौत) का ख़ौफ़ है, इसलिए कि मैंने और चन्द और लोगों ने एक शेख़ मुजतहिद से चालीस साल इल्म हासिल किया, और उन्होंने साठ बरस तक ख़ाना-ए-काबा की मुजावरी की थी, लेकिन जब जान दी तो कुफ़र पर दी। ख़ातमा बिल ख़ैर नसीब न हुआ।” जवाब दिया कि ऐ सुफ़ियान वह उसके गुनाहों की शामत थी। अगरचे जो तुम कहते हो, वह भी उसमें था लेकिन जुर्म करना भी था। (मज़म्मत व तौबा के बग़ैर) तुम अल्लाह तआला की नाफ़रमानी और उसके हुक्म की किसी आन मुख़ालफ़त न करो।

मरवी है कि इब्राहीम नख़्ई एक फ़कीह के शार्गिद थे। लोगों ने उनके मरने के बाद उन्हें ख़्वाब में देखा कि मजूसियों की टोपी सर पर रखे हुए हैं। लोगों ने उसका सबब पूछा। फ़कीह ने जवाब दिया कि जब मुस्तफ़ा ﷺ का नाम शरीफ़ आता मैं दुख़द शरीफ़ न पढ़ता, उसी की नहूसत से मारेफ़त और ईमान सलब कर लिया गया। اللهم صل وسلم وبارك عليه وعلى كل من هو محبوب ومرضى لديه كما نحب وترضى” (सबअ सनाबिल शरीफ़ मुतर्जम पे० 100/101)

औलिया-ए-किराम और बुजुर्गाने दीन के मज़ारात पर जाना जाइज़ व मुस्तहब है और उनके उसों में शरीक होना कारे सवाब है। हदीसे पाक में साफ़ लफ़्ज़ों में कब्रों पर जाने की इजाज़त मौजूद है। हुज़ूर ﷺ फ़रमाते हैं: मैंने तुम्हें कब्रों की ज़ियारत से रोका था अब तुम कब्रों की ज़ियारत करो, इसलिए कि इससे आख़िरत की याद ताज़ा होती है। (तिर्मिज़ी शरीफ़: जि० 1 किताबुल जनाइज़)

आम तौर पर साहबे मज़ार के विसाल के दिन उर्स का एहतमाम किया जाता है जिसमें लोग हज़िर होकर साहबे मज़ार के फ़यूज़ो बरकात हासिल करते हैं। बुजुर्गाने दीन के विसाल के दिन ही क्यों उर्स मनाया जाता है इसके बारे में इमाम अहमद रज़ा ख़ान बरैलवी अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं: “औलिया-ए-किराम की अरवाहे तय्यबा को उनके विसाल के दिन कुबूरे करीमा की तरफ़ तवज्जोह ज़्यादा होती है, चुनाँचे वह वक़्त जो विसाल का है अख़ज़े बरकत के लिये ज़्यादा मुनासिब होता है।

आम तौर पर “उर्स” का नाम आते ही लोगों के ज़ेहन में ऐसे मनाज़िर दिखाई देने लगते हैं जो हिन्दो पाक की कुछ दरगाहों पर हुआ करते हैं, यानी बिदआत व खुराफ़ात जिनकी वजह से उसों का तक्हुस पामाल होता है। लेकिन अल्हम्दुलिल्लाह ख़ानकाहे बरकातिया मारहरा शरीफ़ का उर्स मुबारक हर किस्म के ग़ैर शरई उमूर से पाक व साफ़ होता है। अभी हाल ही में मुजहिदे बरकातियत हज़रत सय्यद शाह इस्माईल हसन उर्फ़ शाह जी मियाँ अलैहिर्रहमा का 89 वाँ उर्स पाक मनाया गया जो देखने लायक़ था। मुर्शिदाने मारहरा की तरफ़ से मुकम्मल इन्तेज़ाम किया गया था कि जायरीने उर्स

शरीअत के दायरे में रहकर हज़िरी के आदाब बजालायें।

इस बार का उर्स कासमी “बरकत नामा” के हवाले से यादगारी रहा। बरकत नामा को हमारे बरकाती भाईयों ने दिल व जान से कुबूल किया और अ़वाम तक पहुँचाने में हमारी पूरी मदद की जिसके नतीजे में उम्मीद से कहीं ज़्यादा रिसाले के मेम्बर बनें। अल्लाह तआला उनकी ख़िदमात को कुबूल फ़रमाए। (आमीन)

कारेईन-ए-किराम को बता दें कि “बरकत नामा” के नाम से इस रिसाले का सरकारी रजिस्ट्रेशन नहीं हो सका इसलिए इसका नाम बदलकर “पयामे बरकात” रख दिया गया है। अब इंशाअल्लाह इसी नाम से रिसाला छपा करेगा। रिसाले को रजिस्ट्रेशन कराने में बिरादरम नजमुल हसन बरकाती ने बड़ी मदद फ़रमाई, अल्लाह तआला उन्हें इसका अज़्र अता फ़रमाए। (आमीन)

“पयामे बरकात” के इस शुमारे में “बरकाते ख़ानदाने बरकात” “तआरुफ़े मशाइखे सिलसिला-ए-बरकातिया” और “इंटरव्यू” के नाम से 3 कॉलमों का इज़ाफ़ा किया जा रहा है। पहले कॉलम के तहत हुज़ूर रफीके मिल्लत सय्यद शाह नजीब हैदर नूरी दामा ज़िल्लुहू की इजाज़त से ख़ानदाने बरकात की दुआयें और वज़ीफ़े छापे जायेंगे, दूसरे कॉलम के ज़रिए बरकाती सिलसिले के बुजुर्गों का मुख़्तसर तआरुफ़ छपेगा और तीसरे कॉलम में ख़ानकाह से वाबस्ता हज़रात के इंटरव्यू। पिछला शुमारा अरबी महीने के हिसाब से छपा था लेकिन कुछ क़ानूनी मजबूरियों की वजह से इसे अरबी महीने के हिसाब से छापना मुमकिन नहीं है, इसलिए अब अंग्रेज़ी महीने के हिसाब से छपा जायेगा। ★★★



सूरह फ़ातिहा की तफ़सीर

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ مَلِكِ يَوْمِ الدِّينِ ۝ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ ۝ اهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ۝

صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ ۝ (आमिन)

तर्जुमा: अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहम वाला।

सब ख़ूबियाँ अल्लाह को जो मालिक सारे जहानों का, बहुत मेहरबान रहमत वाला रोज़े जज़ा का मालिक हम तुझी को पूजें और तुझी से मदद चाहें, हमको सीधा रास्ता चला, रास्ता उनका जिन पर तूने एहसान किया, ना उनका जिन पर तेरा ग़ज़ब हुआ और ना बहके हुआओं का।

हैं। यह सूरह “मक्की” है, अलबत्ता एक कौल यह भी है कि हिजरते मदीना के बाद दुबारा नाज़िल हुई इसलिए “मदनी” भी है।

किसी सूरह के मक्की या मदनी होने का मतलब अक्सर उलमा के नज़दीक यह है कि जो सूरह हिजरते रसूल ﷺ के पहले नाज़िल हुई वह मक्की सूरह कहलाती है और जो हिजरते रसूल ﷺ के बाद नाज़िल हुई वह मदनी कहलाती है, चाहे वह सूरतें किसी भी मक़ाम पर नाज़िल हुई हों।

तफ़सीर

सूरह फ़ातिहा के कई नाम हैं और सब नाम हदीसों से साबित हैं।

1. **सूरह फ़ातिहा** क्योंकि यहीं से कुरआन की शुरूआत होती है, 2. **फ़ातिहतुल किताब** यानी किताब की शुरूआत, 3. **फ़ातिहतुल कुरआन** यानी कुरआन की शुरूआत, 4. **उम्मुल कुरआन** यानी कुरआन की माँ, 5. **सूरह कन्ज़** यानी ख़ज़ाने की सूरह, 6. **सूरह शाफ़िया** और **सूरह शिफ़ा** यानी शिफ़ा देने वाली सूरह, 7. **सूरह दुआ** यानी दुआ वाली सूरह। इनके अलावा और भी नाम हैं जो तफ़सीर की किताबों में मौजूद हैं।

इस सूरत में 7 आयतें हैं और सब मुहक़म

शाने नुजूल: कुरआन शरीफ़ की आयतों के शाने नुजूल का मतलब है कि आयत किस मौक़े पर, किस के हक़ में नाज़िल हुई? इसके जानने का सबसे बड़ा फ़ायदा यह है कि आप को मालूम हो जायेगा कि जो आयतें कुफ़्र व मुशिरकीन के हक़ में नाज़िल हुई, आज के दौर में कुछ लोग जान बूझ कर उन आयतों को मुख़लिस मुसलमानों पर चिस्पाँ करते हैं जो सरासर जुल्म है।

इस सूरत की शाने नुजूल के बारे में हज़रत अम्र बिन शरहबील रज़ियल्लाहु अन्हु से मन्कूल है कि नबी-ए-करीम ﷺ ने हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमाया: मैं एक आवाज़ सुना करता हूँ जिसमें

“इक़रा” यानी पढ़िये कहा जाता है। वरक़ा बिन नौफल को ख़बर दी गई। अर्ज़ किया जब यह आवाज़ आए आप इतमिनान से सुनें। उसके बाद हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने हाज़िरे ख़िदमत होकर अर्ज़ किया पढ़िये! “بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ”

“الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ”: का मतलब है तमाम तारीफ़ें उसी अल्लाह को सजती हैं जो उनका हकीकी हक़दार है। वह कुल कायनात का पालनहार है। इस आयते करीमा में अल्लाह ने ख़बर दी है कि असली तारीफ़ का हक़दार अल्लाह ही है।

पहली आयत में “الْعَالَمِينَ” जमा का लफ़्ज़ इरशाद फ़रमा कर यह पैग़ाम दिया कि इन्सानो! आलम और भी बहुत से हैं, तरक्की करोगे तो जानोंगे। पर जब-जब कोई नया आलम तुम्हारी निगाहों के सामने आ जाए, फ़ौरन तुम्हें याद करना होगा कि उसका भी पालनहार मैं ही हूँ। किसी चीज़ को पैदा कर के उसको छोड़ना यह ज़्यादा आसान है ब निस्बत उसकी देख रेख़ के, अल्लाह पाक कुल कायनात का ख़ालिफ़ (पैदा करने वाला) भी है और मालिक भी है। मगर उसने अपनी ज़ाते गिरामी को हम्द व तारीफ़ का हक़दार जिसकी वजह से बनाया वह यह कि उसने कुल कायनात को महज़ पैदा करके छोड़ न दिया, बल्कि उसका पालनहार भी है। उसकी देख-रेख़ भी करता है, रोज़ी भी देता है और उसे ज़िन्दा भी रखता है।

“الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ”: वह रहमान है, वह रहीम है। मतलब यह कि वह रहम करने वाला है। वह बहुत ज़्यादा मेहरबान है।

“مَالِكِ يَوْمِ الدِّينِ”: इसका मतलब है रोज़े

जज़ा का मालिक। हज़रत ज़िह्राक़ ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया कि रोज़े जज़ा का मालिक का मतलब है कि उस दिन हुक्म सादिर करने में अल्लाह के साथ कोई दूसरा शामिल न होगा, जबकि दुनिया में बादशाह ऐसा करते थे। मख़लूक के साथ हिसाब व किताब के दिन को रोज़े जज़ा का दिन इसलिए कहा गया कि अच्छाई और बुराई का बदला दिया जायेगा।

“إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ”: इबादत अरबी ज़बान में इन्केसारी को कहते हैं और शरीअते मुहम्मदी में इबादत उस काम को कहते हैं जो मुहब्बत, खुजूअ और ख़ौफ़ की इन्तिहा को जमा करे। “इबादत” और “इस्तिआनत” को सिर्फ़ अल्लाह ही के लिये ख़ास इसलिए किया गया कि इताअत व बन्दगी का कमाल इसी में है कि बन्दा अपने माबूद का हुक्म माने और उसी से उस पर अज़्र का तलबगार भी हो।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया कि “إِيَّاكَ نَعْبُدُ”: का मतलब है कि ऐ हमारे रब! हम तेरी तौहीद के गुन गाते हैं, सिर्फ़ तुझी से डरते हैं और सिर्फ़ तुझी से उम्मीद लगाते हैं और “وإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ” का मतलब है कि तेरी इताअत पर और अपने तमाम मुआमलात में सिर्फ़ तुझी से मदद चाहते हैं।

“اهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ” अक्सर मुफ़स्सिरीन के नज़दीक सिराते मुस्तकीम से मुराद या तो इस्लाम है या किताबुल्लाह। लफ़्ज़ी तौर पर माना यह है सीधा रास्ता जिसमें टेढ़ापन न हो। लिहाज़ा इस आयत में सारे इख़्तेलाफ़ात के बा वजूद सबका हासिल

एक चीज़ में जमा होगा और वह है अल्लाह व रसूल की फरमोबंदारी। लिहाज़ा इस आयत का मतलब हुआ कि अल्लाह तआला से इस्लाम पर या किताबुल्लाह पर कायम व दायम रहने की तौफ़ीक़ का सवाल करना है। हज़रत मुजाहिद ने कहा कि सिराते मुस्तकीम से मुराद “हक़” है यानी हमें हक़ पर चला।

صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ
अल्लाह के ईनाम याफ़्ता बन्दे वही हैं जिनको अल्लाह ने सूरह निसा में खुद ज़िक्र फ़रमाया है: और जो अल्लाह व रसूल की इताअत करे तो वह उनके साथ होगा जिन पर अल्लाह ने ईनाम किया नबियों में से, सिद्दीकों में से, शोहदा में से और सालेहीन (नेक बन्दों) में से और वह बेहतरीन साथी हैं। यह फ़ज़ल खास अल्लाह की तरफ़ से है और अल्लाह बेहतर जानने वाला है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा की तफ़सीर भी है।

अल्लाह ने जिन पर ग़ज़ब नाज़िल किया वह यहूदी हैं और जो गुमराह हुए वह नसारा (इसाई) हैं। अहले सुन्नत व जमाअत का तरीक़ा यह है कि उन्हें हक़ का इल्म हुआ तो उस पर अमल किया, लेकिन यहूदियों ने अमल छोड़ा और ईसाइयों ने इल्म छोड़ा। क्योंकि जो अमल छोड़ता है, वह ग़ज़ब का मुस्तहक़ होता है और जो इल्म छोड़ता है वह गुमराह होता है।

“आमिन”: रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत है कि जब सूरह फ़ातिहा ख़त्म हो तो आमीन कहना चाहिए, क्योंकि जिसकी आमीन फ़रिश्तों के आमीन से मिल गई तो उसके तमाम पिछले गुनाह बर्ख़्श दिए गए। बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी

है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: जब इमाम आमीन कहे तो तुम भी आमीन कहो, कि बेशक जिसकी आमीन फ़रिश्तों के आमीन कहने से मिल जाए उसके तमाम पिछले गुनाह माफ़ हो गए और आमीन का माना होता है “ऐ अल्लाह! कुबूल फ़रमा।”

बिस्मिल्लाह सूरह फ़ातिहा का हिस्सा नहीं है:

मदीना शरीफ़, बसरा और मुल्के शाम के कुरा और फुक्हा इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं कि बिस्मिल्लाहिर्रहमा निर्रहीम सूरह फ़ातिहा का जुज़ (हिस्सा) नहीं है। इसी वजह से हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा अलैहिर्रहमा जहरी (फ़जर, मगरिब और इशा) नमाज़ों में बिस्मिल्लाह को तेज़ आवाज़ से पढ़ने से मना करते हैं। मक्का मुर्करमा और कूफ़ा के कुरा और फुक्हा बिस्मिल्लाह को सूरह फ़ातिहा का हिस्सा मानते हैं। इसीलिए हज़रत इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाह अलैहि जहरी नमाज़ों में बिस्मिल्लाह को बुलन्द आवाज़ से पढ़ने का हुक्म देते हैं।

बिस्मिल्लाह को सूरह फ़ातिहा का हिस्सा मानने और न मानने वाले दोनों उलमा के नज़दीक इसमें कुल 7 आयतें हैं। जो लोग इसको सूरह फ़ातिहा का हिस्सा समझते हैं वह बिस्मिल्लाह को पहली आयत का नम्बर देते हैं और “أَنعَمْتَ عَلَيْهِمْ” पर नम्बर नहीं लगाते और जो लोग सूरह फ़ातिहा का हिस्सा नहीं मानते वह बिस्मिल्लाह पर पहली आयत का नम्बर नहीं लगाते, अलबत्ता “أَنعَمْتَ عَلَيْهِمْ” पर अलग आयत शुमार करके आयत नम्बर 5 का निशान लगाते हैं। इस तरह दोनों मुहक्किकीन के नज़दीक बिल इत्तेफ़ाक़ बिस्मिल्लाह सूरह फ़ातिहा का हिस्सा मानने और न

मानने दोनों सूरतों में आयतों की तादाद नहीं घटती बढ़ती बल्कि वह सात की सात ही रहती है। नीज़ बिस्मिल्लाह बहर ह़ाल कुरआन का जुज़ ज़रूर है।

सूरह फ़ातिहा की फ़ज़ीलत: हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ हज़रत उबइ बिन कअब रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ़ तशरीफ़ ले गए फिर उनसे फ़रमाया कि “क्या तुम्हें अच्छा लगेगा कि मैं ऐसी सूरह बताऊँ जैसी न तौरैत न इन्जील न ज़बूर और न ही कुरआन में नाज़िल हुई?” उन्होंने अर्ज़ किया: हाँ या रसूलुल्लाह! तो आपने इरशाद फ़रमाया: कसम उस ज़ात की जिसके कब्ज़ा-ए-कुदरत में मेरी जान है। सूरह फ़ातिहा जैसी न तौरैत, न इन्जील, न ज़बूर और न कुरआन में कोई दूसरी सूरह नाज़िल हुई। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

एक हदीस में रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: सूरह फ़ातिहा हर बीमारी के लिए शिफ़ा है। एक दूसरी हदीस में रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: सूरह फ़ातिहा सौ मर्तबा पढ़कर (इसके वसीले से) जो दुआ (जाईज़) की जायेगी, अल्लाह तआला कुबूल फ़रमायेगा। (सुनने दारमी)

फ़िज़्ही मसाइल: नमाज़ में सूरह फ़ातिहा पढ़ना वाजिब है। रसूलुल्लाह ﷺ की हदीस है, आपने फ़रमाया: “जो सूरह फ़ातिहा न पढ़े उसकी नमाज़ नहीं होगी।” लिहाज़ा सूरह फ़ातिहा के बग़ैर नमाज़ दुरुस्त नहीं। हज़रत इमाम आजम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह अलैहि के नज़दीक इमाम की क़िरात मुक्त्तदी के लिये काफ़ी है, लिहाज़ा इमाम के साथ मुक्त्तदी सूरह फ़ातिहा न पढ़े, जब अकेले नमाज़ पढ़े तो सूरह फ़ातिहा पढ़े।

सूरह नमल की बिस्मिल्लाह चूँकि बीच में है, इसलिए उसकी तिलावत बुलन्द आवाज़ से की जाती है। बाकी सूरतों के शुरू में आहिस्ता पढ़ी जाती हैं।

सूरह फ़ातिहा की तिलावत के बाद जो आमीन कही जाती है, वह कुरआन का हिस्सा नहीं, बल्कि नमाज़ और नमाज़ के बाहर जब भी सूरह फ़ातिहा की तिलावत मुकम्मल हो तो उस पर आमीन कहना सुन्नत है। हज़रत इमामे आजम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह अलैहि के नज़दीक नमाज़ के अन्दर सूरह फ़ातिहा के बाद आमीन आहिस्ता कहना है और सहीह हदीसों से यही साबित भी है। तफ़्सील के लिये फ़िज़्ही किताबों का मुतालआ करें। ★★★

★ शोबा-ए-दीनियात अलबरकात अलीगढ़।



खुश ख़बरी



आपको इत्तिला दी जाती है कि इस साल **उर्स नूरी** 10,11,12 रजब 1437 हि० मुताबिक 18,19,20 अप्रैल 2016 ई० बरोज़ सोमवार, मंगलवार और बुधवार को मनाया जायेगा। इस उर्स में शरीक होकर बुजुर्गों के फ़ैज़ान से मालामाल हों।



खुश ख़बरी



आपको इत्तिला दी जाती है कि इस साल **उर्स कासमी** 11,12,13 नवम्बर 2016 ई० बरोज़ जुमा, सनीचर और इतवार को मनाया जायेगा। इस उर्स पाक में शरीक होकर बुजुर्गों के फ़ैज़ान से मालामाल हों।

तौबा की अहमियत व फ़ज़ीलत



عن ابن موسى الأ شعري رضى الله عنه عن النبي ﷺ قال: ان الله تعالى ييسط يده بالليل ليتوب مسيء النهار وييسط يده بالنهار ليتوب مسيء الليل حتى تطلع الشمس من مغربها. (صحيح بخارى)

तर्जुमा: हज़रत अबू मूसा अशअरी शर्मिन्दा होकर अल्लाह तआला की तरफ़ लौटना और दुबारा गुनाह न करने का वादा करना।”

रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले अकरम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: अल्लाह तआला हर रात अपना दस्ते रहमत फैलाता है ताकि दिन के गुनाह करने वाले तौबा करें, और दिन को दस्ते रहमत फैलाता है ताकि रात के गुनाह करने वाले तौबा करें, यह सिलसिला सूरज के मगरिब से निकलने तक जारी रहेगा।

हदीस की शरह: इन्सान से ग़लती और भूल हो जाती है, जिसके नतीजे में वह गुनाह कर बैठता है, लेकिन एक मुसलमान को अल्लाह तआला की रहमत से मायूस नहीं होना चाहिए। अगर वह नादिम व शर्मिन्दा होकर अल्लाह तआला की बारगाह में अपने किए हुए गुनाहों और ग़लतियों से सच्चे दिल से तौबा करता है, तो अल्लाह तआला उसके गुनाहों को बर्खा देता है और तौबा करने वाला ऐसा हो जाता है जैसे उसने कोई गुनाह किया ही नहीं है। हुजुरे अकरम ﷺ इरशाद फ़रमाते हैं:

तर्जुमा: गुनाह से तौबा करने वाला ऐसा है जैसे उसने कोई गुनाह किया ही न हो। (सहीह बुख़ारी)

तौबा का माना: तौबा की अहमियत व फ़ज़ीलत जानने से पहले तौबा का माना जान लेना ज़रूरी है। तौबा का माना है: “गुनाह को छोड़ देना और उसके करने पर

तौबा की शर्तें: अगर किसी से कोई गुनाह हो जाए और वह तौबा करना चाहे तो उसके लिए तीन चीज़ें ज़रूरी हैं। पहली यह कि जो गुनाह किया है उससे बाज़ आ जाए। दूसरी यह कि उसके करने पर नादिम व शर्मिन्दा हो। तीसरी यह कि पक्का इरादा करे कि आइन्दा कभी वह गुनाह नहीं करेगा। अगर यह तीनों चीज़ें पाई जायें तो सच्ची तौबा कहलाएगी, और अगर उनमें से कोई एक चीज़ भी नहीं पाई गई तो तौबा सही नहीं होगी। यह उस वक़्त है कि गुनाह बन्दे के हक़ से मुताल्लिक न हो। लेकिन अगर गुनाह बन्दे के हक़ से मुताल्लिक हो तो तौबा में चार चीज़ों का पाया जाना ज़रूरी है। तीन तो वही जो ऊपर बयान हुई और चौथी यह कि वह उस बन्दे के हक़ से बरी (अलग) हो जाये। मिसाल के तौर पर किसी ने किसी का माल हड़प कर लिया और अब वह तौबा करना चाहता है तो उसके लिए ज़रूरी है कि किसी का माल हड़पने से बाज़ आये, दूसरा यह कि उस काम पर शर्मिन्दा हो, तीसरा यह कि पक्का इरादा करे कि अब कभी वह किसी का माल हड़प नहीं करेगा, चौथा यह कि जो माल हड़प लिया है उसको मालिक तक पहुँचा दे।

तौबा की फज़ीलत कुरआन में: कुरआने करीम में तौबा की बड़ी अहमियत व फज़ीलत आई है। अल्लाह तआला तौबा करने वालों को बहुत पसन्द फ़रमाता है। अल्लाह तआला कुरआने करीम में इरशाद फ़रमाता है:

तर्जुमा: बेशक अल्लाह तआला ख़ूब तौबा करने वालों और ख़ूब पाकी हासिल करने वालों को पसन्द फ़रमाता है। (अल-बकरा: 222)

एक आयत में इरशादे बारी तआला है:

तर्जुमा: ऐ ईमान वालो! अल्लाह की बारगाह में सच्ची तौबा करो। (अल-तहरीम: 8)

इस आयते करीमा में अल्लाह तआला ने मुसलमानों को सिर्फ़ तौबा का हुक्म नहीं दिया बल्कि तौबा-ए-नसूह का मुतालबा किया है। तौबा-ए-नसूह क्या है? इस बारे में खुद रसूले पाक ﷺ ने हमें उसकी तरफ़ रहनुमाई फ़रमाई है। हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु अर्ज़ करते हैं। ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ! “तौबा-ए-नसूह” क्या है?, तो आपने इरशाद फ़रमाया: “बन्दा किए हुए गुनाह पर शर्मिन्दा हो फिर अल्लाह के हुज़ूर मआफी पेश करे और पक्का इरादा करे कि वह दोबारा गुनाह की तरफ़ न लौटेगा जैसे दूध दोबारा थन में नहीं लौट सकता।” मतलब यह कि अगर इन्सान गुनाह की तरफ़ न लौटने का पुख़्ता इरादा करले तो यही सच्ची तौबा है।

तौबा की फज़ीलत हदीस में: अहदीसे मुबारका में भी तौबा की बहुत फज़ीलतें आई हैं। अल्लाह के रसूल ﷺ ने हमें तौबा करने और अल्लाह तआला की तरफ़ रूजूअ करने का हुक्म दिया है। हदीसों में है कि खुद रसूलुल्लाह ﷺ बहुत ज़्यादा

तौबा व इस्तिग़फ़ार करते थे। हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है। फ़रमाते हैं। मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फ़रमाते हुए सुना: मैं दिन में 70 बार से भी ज़्यादा अल्लाह तआला से बख़्शिश माँगता हूँ और तौबा करता हूँ” (सहीह बुख़ारी)

एक दूसरी हदीस में है कि नबी-ए-अकरम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: “ऐ लोगो! अल्लाह तआला की तरफ़ तौबा करो, और उससे बख़्शिश माँगो। मैं दिन में सौ मर्तबा तौबा करता हूँ।” (सहीह मुस्लिम)

प्यारे मुसलमानों! रसूलुल्लाह ﷺ को अल्लाह तआला ने मासूम पैदा फ़रमाया है कि आप से कोई गुनाह हो ही नहीं सकता, मगर इसके बावजूद आप अल्लाह तआला की बारगाह में रोज़ाना सत्तर से ज़्यादा मर्तबा तौबा व इस्तिग़फ़ार करते हैं, और आज हमारी हालत है कि हम गुनाह पर गुनाह करते रहते हैं, अपने मालिके हकीकी की नाफ़रमानी करते हैं, मगर उसकी बारगाह में तौबा नहीं करते। हमें इन अहदीसे मुबारका से सबक़ लेना चाहिए और अपने किये हुये गुनाहों से तौबा करके अपने ख़ालिक को राज़ी कर लेना चाहिए। अगर हमने ऐसा किया तो हमारी तमाम परेशानियाँ दूर हो जायेंगी और हम अमन, सुकुन और चैन की ज़िन्दगी गुज़ारेंगे।

प्यारे मुसलमानों! जब बन्दा अल्लाह तआला की बारगाह में तौबा करता है। तो अल्लाह अपने बन्दे की तौबा से बहुत खुश होता है। हदीस में है कि अल्लाह तआला अपने बन्दे की तौबा से उससे भी ज़्यादा खुश होता है जितना कोई शख्स जंगल में अपना ऊँट गुम कर दे और पाले। (सहीह मुस्लिम)

हज़रत इमरान बिन हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु

से रिवायत है कि कबीला-ए-जुहैना की एक औरत जो ज़िना से हामिला थी बारगाहे नबवी में हाज़िर हुई। उसने अर्ज़ किया: या रसूलुल्लाह! मुझसे ऐसा गुनाह हुआ है, जो हृद (सज़ा) के काबिल है, लिहाज़ा मुझ पर हद जारी कीजिए। नबी-ए-अकरम ﷺ ने उसके वली को बुलाकर फ़रमाया: इससे अच्छा सुलूक करो। जब बच्चा पैदा हो जाए तो मेरे पास लाना। चुनाँचे उसने ऐसा ही किया। नबी-ए-अकरम ﷺ के हुक्म से उसके कपड़े उस पर बाँध दिए गए और संगसार कर दिया गया। फिर आपने उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया: या रसूलुल्लाह! आप उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ते हैं जिसने ज़िना किया है। आपने फ़रमाया: उसने ऐसी तौबा की है कि अगर 70 अहले मदीना में बाँट दिया जाए तो सबको काफी हो जाए। क्या तुम उससे अफ़ज़ल पाते हो कि जिसने अल्लाह तआला के लिये अपनी जान कुर्बान कर दी।

तौबा दिल को पाक व साफ़ कर देती है:

एक हदीस में है कि मोमिन जब गुनाह करता है तो उसके दिल पर एक काला धब्बा पड़ जाता है। फिर जब वह तौबा व इस्तिग़फ़ार करता है तो उसके दिल को साफ़ कर दिया जाता है, और अगर वह गुनाह करता ही रहता है, तो वह धब्बा बढ़ता रहता है यहाँ तक की पूरे दिल पर छा जाता है। यही वह ज़ुंज है जिसका अल्लाह तआला ने कुरआने करीम में ज़िक्र फ़रमाया है कि उनके दिलों पर उनके गुनाहों का ज़ुंज लग गया है। (सुनने तिर्मिज़ी)

इस हदीसे पाक का मतलब यह है कि जिस तरह ज़ुंज लोहे को खाकर मिट्टी बना देती है, और

उसकी सारी ताक़त व कुव्वत को ख़त्म कर देती है, ऐसे ही गुनाह मोमिन की ताक़त व कुव्वत को ख़त्म कर देता है और वह बेहिंस व ज़लील होकर ज़िन्दगी के दिन गुज़ारने लगता है। लेकिन ऐसे हाल में भी बन्दा अल्लाह तआला की रहमत से मायूस न हो, अल्लाह तआला बड़ा ही मेहरबान है। वही गुनाहों की सियाही को दूर करने, और नेकियों के नूर से दिलों को रौशन कर देने वाला है। अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है: जिसने तौबा की और ईमान ले आया और नेक अमल किये तो यह वह लोग हैं कि अल्लाह उनकी बुराइयों को नेकियों से बदल देगा। (सूरह अल-फ़ुरक़ान: 70)

तौबा की ख़ैर व बरकत: हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: जो शख्स इस्तिग़फ़ार में पाबन्दी करेगा, अल्लाह तआला उसकी हर तंगी को दूर कर देगा और हर ग़म से छुटकारा देगा और उसको ऐसी जगह से रोज़ी देगा जहाँ से उसको ख़याल भी न होगा।

खुलासा यह कि हम सब गुनाहगार हैं, ख़ताकार हैं, हम से गुनाह होते ही हैं। अल्लाह के रसूल ﷺ इरशाद फ़रमाते हैं: आदम की सारी औलाद गुनाह करने वाली है और बेहतरीन गुनाह करने वाले वो हैं, जो तौबा कर लेते हैं। इसलिए अगर हमसे कोई गुनाह हो जाये तो हमें चाहिए कि फ़ौरन तौबा कर लें। हमारा रब ज़रूर हमारी तौबा को कुबूल फ़रमायेगा और हम से राज़ी (खुश) हो जायेगा। ★★★

★ उस्ताद ज़ामिया अहसनुल बरक़त, मारहरा शरीफ़ (एटा)

ज़रूरियाते दीन और ज़रूरियाते मज़हबे

अहले सुन्नत की वज़ाहत

पहली किस्त

दीनी उलूम और शरई मसाइल के जानकार लोगों पर यह हकीकत सूरज की तरह रौशन है कि शरई अहकाम और फुरूई मसाइल के मरातिब और दरजात अलग-अलग हैं, क्योंकि उनमें कुछ का सबूत आयात व अहदीस वगैरह के ज़रिए इतना वाज़ेह और साफ़ होता है कि उसमें किसी शुब्हे और तावील की कोई गुन्जाईश बाकी नहीं रहती और उनमें उलमा-ए-किराम व फुक्हा-ए-ऐज़ाम के बीच कोई इख़िलाफ़ भी नहीं होता, इसलिए ऐसे अहकाम व मसाइल के मुन्किर (इंकार करने वाले) को काफ़िर कहा जाता है। और कुछ अहकाम व मसाइल ऐसी दलीलों से साबित होते हैं जिनमें तावील की गुन्जाईश बाकी रहती है, इसलिए उनके मुन्किर को काफ़िर नहीं बल्कि गुमराह या बद दीन कहा जाता है। और कुछ अहकाम व मसाइल ऐसे हैं जिनका सबूत उनसे भी कम दर्जे की दलीलों से होता है, इसलिए उनके मुन्किर को गुमराह और बद मज़हब भी नहीं कहा जाता, बल्कि गुनहगार या सिर्फ़ कुसूर वार कहा जाता है।

इस बारे में हमारे फुक्हा-ए-किराम की किताबों में “ज़रूरियाते दीन” और “ज़रूरियाते मज़हबे अहले सुन्नत व जमाअत” के अलफ़ाज़ बहुत ज़्यादा इस्तेमाल होते हैं। इसलिए हम चाहते हैं कि सबसे पहले “ज़रूरियाते दीन” और “ज़रूरियाते मज़हबे अहले सुन्नत व जमाअत” की थोड़ी सी वज़ाहत (खुलासा) कर दी जाए।

ज़रूरियाते दीन की तारीफ़: ज़रूरियाते दीन वह अहकाम व मसाइल हैं जो कुरआने करीम या हदीसे मुतवातिर व इजमा से इस तरह साबित हों कि उनमें न किसी शुब्हे की गुन्जाईश हो, न तावील की कोई राह हो और उन अहकाम व मसाइल का दीन से होना ख़वास व आवाम सभी जानते हों। जैसे अल्लाह तआला की वहदानियत (एक होना), नबियों और रसूलों की नबुव्वत व रिसालत और उनकी अज़मते शान का एतकाद (अक़ीदा रखना) य़ूही हुज़ूर ﷺ का आख़िरी नबी होना वगैरह।

यहाँ ख़वास से मुराद उलमा-ए-किराम हैं और अवाम से मुराद वह मुसलमान हैं जो उलमा-ए-किराम के साथ रहते हैं और मसाइले दीनिया का ज़ौक व शौक रखते हैं, न कि दिहातों, जंगलों और पहाड़ों के रहने वाले वह इन्सान जो कलमा भी सही से नहीं पढ़ सकते, कि ऐसे लोगों का ज़रूरियाते दीन से ना वाकिफ़ (जाहिल) होना इस ज़रूरी को ग़ैर ज़रूरी न करेगा। हाँ! उनके मुसलमान होने के लिये यह बात ज़रूरी है कि वह ज़रूरियाते दीन के मुन्किर न हों और यह अक़ीदा रखते हों कि इस्लाम में जो कुछ है हक़ है और उन सब पर हमारा ईमान है।

बहारे शरीअत में है: “ज़रूरियाते दीन वह मसाइले दीन हैं जिनको हर ख़ास व आम जानते हों, जैसे अल्लाह तआला की वहदानियत, अम्बिया की नबूवत, जन्नत व नार, हथ्र नश्र वगैरह। मसलन यह

एतकाद कि हुजूर ﷺ खातमुन्नबिय्यीन हैं, हुजूर ﷺ के बाद कोई नया नबी नहीं हो सकता।” (बहारे शरीअत हि० 1, पे० 172)

ज़रूरियाते दीन का हुक्म: ज़रूरियाते दीन का इन्कार करने वाला या उनमें थोड़ा भी शक करने वाला, या उनमें झूठी तावील करने वाला काफ़िर हो जाता है और ऐसा काफ़िर होता है कि जो उसे मुसलमान जाने या उसके कुफ़र में शक करे वह भी काफ़िर हो जाए।

फ़तावा रज़विया में है: “मुसलमानों! मसाइल तीन किस्म के होते हैं: एक ज़रूरियाते दीन, उनका मुन्किर, बल्कि उनमें अदना (थोड़ा) शक करने वाला बिल यकीन (यकीनन) काफ़िर होता है, ऐसा कि जो उसके कुफ़र में शक करे वह भी काफ़िर।” (फ़तावा रज़विया मुतर्जम जि० 29, पे० 66)

ज़रूरियाते मज़हबे अहले सुन्नत व जमाअत की तारीफ़: ज़रूरियाते मज़हबे अहले सुन्नत व जमाअत वह मसाइल हैं जो दलीले क़तई (यकीनी) से साबित हों, लेकिन उनमें तावील की गुन्जाइश हो। जैसे अल्लाह तआला का जिस्म से पाक होना।

एतकादुल अहबाब (किताब का नाम) में है: “दोम (दूसरा) ज़रूरियाते मज़हबे अहले सुन्नत व जमाअत, उनका सबूत भी दलीले क़तई से होता है, मगर उनके क़तई उस्सबूत होने में एक नौअ शुब्हा और तावील का एहतमाल होता है।” (एतकादुल अहबाब, मशमूला फ़तावा रज़विया मुतर्जम, जि० 29, पे० 65)

ज़रूरियाते मज़हबे अहले सुन्नत व जमाअत का हुक्म: ज़रूरियाते मज़हबे अहले सुन्नत व जमाअत का इन्कार करने वाला काफ़िर नहीं होता, बल्कि वह

गुमराह बद मज़हब और बद दीन कहलाता है।

फ़तावा रज़विया में है: इन (ज़रूरियाते मज़हबे अहले सुन्नत) का मुन्किर काफ़िर नहीं, बल्कि गुमराह, बद मज़हब, बद दीन कहलाता है। (जि० 29, पे० 65)

ज़रूरियाते दीन की चन्द मिसालें:

● खुदा को एक मानना, ● उसके तमाम रसूलों पर ईमान लाना, ● फ़रिश्तों के वजूद (मौजूद होने) पर ईमान लाना। फ़तावा रज़विया में है:

“खुदा की तौहीद और उसके रसूलों पर ईमान लाने के साथ-साथ फ़रिश्तों के वजूद पर भी ईमान लाना ज़रूरियाते दीन में से है” (जि० 29, पे० 384)

● जन्नत के वजूद पर ईमान लाना, ● दोज़ख़ के वजूद पर ईमान लाना, ● हश्श व नश्श को हक़ जानना। बहारे शरीअत में है:

“ज़रूरियाते दीन वह मसाइले दीन हैं जिनको हर ख़ास व आम जानते हों, जैसे अल्लाह तआला की वहदानियत, अम्बिया की नबूवत, जन्नत व नार, हश्श व नश्श वग़ैरह।” (बहारे शरीअत, हिस्सा अब्वल, पे० 176)

● आलम (दुनिया) को हादिस मानना। ● जिस्म के साथ हश्श पर ईमान रखना। ● अल्लाह तआला को हर छोटी बड़ी चीज़ का जानने वाला मानना। (हाशिया तमहीदे ईमान पे० 105, 106)

● सब आसमानी किताबों को अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल होने वाला मानना, ● इस पर यकीन रखना कि जिन्न (जिन्नात) व मलाइका (फ़रिश्ते), ● क़यामत व बअ़स, ● हश्श व नश्श, ● हि़साब व किताब, ● सवाब व अज़ाब और ● जन्नत व दोज़ख़ के वही मअ़ानी हैं जो मुसलमानों में मशहूर हैं। फ़तावा रज़विया में है:

“याद रखना चाहिए कि वही-ए-इलाही का नुजूल (उतरना), कुतुबे आसमानी (आसमानी किताबों) की तनज़ील (उतारना), जिन्न व मलाइका, क़यामत हि़साब व किताब, सवाब व अज़ाब और ज़न्त व दोज़ख़ के वही मअानी हैं जो मुसलमानों में मशहूर हैं और जिन पर सदरे (शुरू) इस्लाम से अब तक 1400 साल के काफ़्फ़ा-ए-मुस्लिमीन व मोमिनीन (सारे मुसलमान) दूसरे ज़रूरियाते दीन की तरह ईमान रखते चले आ रहे हैं, मुसलमानों में मशहूर हैं।

जो शख्स इन चीज़ों को तो हक़ कहे और इन लफ़्ज़ों का तो इक़्रार करे, मगर उनके नए मअानी गढ़े, मसलन यूँ कहे कि ज़न्त व दोज़ख़ व हश्श व नश्श व सवाब व अज़ाब से ऐसे मअानी मुराद हैं जो उनके ज़ाहिरे अलफ़ाज़ से समझ में नहीं आते।

यानी सवाब का माना अपने हसनात (नेकियों) को देखकर खुश होना और अज़ाब, अपने बुरे आमाल को देखकर ग़मगीन होना हैं। या यह कि वह रूढ़ानी लज़ज़तें और बातिनी मअानी हैं, वह काफ़िर है। क्योंकि उन उमूर (चीज़ों) पर कुरआने पाक और हदीस शरीफ़ में खुले हुए रौशन इरशादात मौजूद हैं।

यूँही यह कहना भी यकीनन कुफ़र है कि पैग़म्बरों ने अपनी-अपनी उम्मतों के सामने जो कलाम, कलामे इलाही बताकर पेश किया वह हरगिज़ कलामे इलाही न था, बल्कि वह सब उन्हीं पैग़म्बरों के दिलों के ख़यालात थे जो फ़व्वारे के पानी की तरह उन्हीं के कुलूब (दिलों) से जोश मारकर निकले और फिर उन्हीं के दिलों पर नाज़िल हो गए।

यूँही यह कहना कि न दोज़ख़ में साँप, बिच्छू

और जंजीरें हैं और न वह अज़ाब जिनका ज़िक्र मुसलमानों में राइज (आम) है, न दोज़ख़ का कोई वजूदे ख़ारजी (बाहरी) है। बल्कि दुनिया में अल्लाह तआला की ना फ़रमानी से जो कुलफ़त (तकलीफ़) रूढ़ को हुई थी बस उसी रूढ़ानी अज़ियत (तकलीफ़) का आला दर्जे पर महसूस होना इसी का नाम दोज़ख़ और जहन्नम है। यह सब कुफ़रे कतई (यकीनी) है।

यूँही यह समझना कि ज़न्त में मेवे हैं न बाग़, न महल न नहरें हैं, न हूर हैं, न ग़िलमाँ हैं, न ज़न्त का कोई वजूदे ख़ारजी है, बल्कि दुनिया में अल्लाह तआला की फ़रमा बरदारी की जो राहत रूढ़ को हुई थी, बस ऐसी रूढ़ानियत का आला दर्जे पर हासिल होना, उसी का नाम ज़न्त है। यह भी क़तअन यकीनन कुफ़र है।

यूँही यह कहना कि अल्लाह तआला ने कुरआने अजीम में जिन फ़रिश्तों का ज़िक्र फ़रमाया है उनका कोई असल वजूद है, न उनका मौजूद होना मुमकिन है, बल्कि अल्लाह तआला ने अपनी हर हर मख़्लूक में जो मुख़लिफ़ किस्म की कुव्वतें रखी हैं जैसे पहाड़ों की सख़्ती, पानी की रवानी (बहना), नबातात की फज़ूनी (बढ़ना), बस उन्हीं कुव्वतों का नाम फ़रिश्ता है, यह भी बिल क़तअ वल यकी (क़तअन व यकीनन) कुफ़र है।

यूँही जिन्न व शयातीन (शैतानों) के वजूद का इन्कार और बदी (बुराई) की कुव्वत का नाम जिन्न या शैतान रखना कुफ़र है और ऐसे अक़वाल के कायल (कहने वाले) यकीनन काफ़िर और इस्लामी बिरादरी से ख़ारिज हैं। (फ़तावा रज़विया मुतर्जम: जि० 29, पे० 62) (जारी) ★★

★ उस्ताद ज़ामिया अशरफ़िया मुबारकपुर आजमगढ़, (यूपी)

हलाल रोजी की अहमियत और बरकत

इस्लाम दीन और दुनिया दोनों के मुआमलात में मुसलमानों को हिदायत से नवाज़ता है। इबादात की अहमियत अपनी जगह मुसल्लम है। यँहीं रिज़्के हलाल यानी हलाल और जाइज़ कमाई की भी अहमियत और फज़ीलत बहुत बड़ी है। इसलिए कि हराम कमाई से मुसलमान गुनाहगार भी होता है और उसकी ज़िन्दगी से बरकत भी उठ जाती है। अगरचे देखने में दुनिया में वह खुशहाल नज़र आता है लेकिन उससे जीने का मज़ा और ज़िन्दगी का लुत्फ़ उठा लिया जाता है। उसकी ज़िन्दगी बुझी-बुझी रहती है, दिल का चैन रखसत हो जाता है। उस पर हर वक़्त जुनूनी कैफ़ियत तारी रहती है। सूदी कारोबार और शराब का धंधा करने वालों को देख लो, झूठे वकीलों और ग़लत फैसला देने वाले जज़ों का भी आम तौर से यही हाल है, गवर्मेन्ट और अवाम से पैसा हड़पने वाले नेताओं का हाल भी इनसे कुछ कम ख़राब नहीं, गिद्ध की तरह हर वक़्त मुर्दार दुनिया की फ़िक्र में चक्कर लगाते रहते हैं। चोरों, उचक्कों और डाकूओं का हाल भी दर्दनाक और इबरतनाक ही होता है। सरकारी उहदेदारों और ह़किमों के यहाँ रिश्वत का जो बाज़ार गरम रहता है। वह क्या उनकी तबाही व बरबादी के लिये काफ़ी नहीं? है। और यकीनन है। सब से बड़ा नुक़सान तो यह है कि इबादात की मक़बूलियत रोक दी जाती है। नमाज़ रोज़े और ज़िक्र की रूहानियत छीन ली जाती है। इस सिलसिले में एक ह़दीसे पाक पढ़ें और अपना ईमान ताज़ा करें।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाह अन्हु हुज़ूर ﷺ का इरशादे गिरामी नक़ल फ़रमाते हैं कि सरकार ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: बेशक अल्लाह तआला पाक है और वह पाक ही को क़बूल फ़रमाता है और यह कि अल्लाह ने ईमान वालों को उसी चीज़ का हुक्म दिया है जिसका अपने मुक़द्दस रसूलों को हुक्म फ़रमाया है।

“ऐ पैग़म्बरो! पाकीज़ा चीज़ें खाओ और अच्छे काम करो, मैं तुम्हारे कामों को जानता हूँ।” (कंजुल ईमान)

और फ़रमाया: ऐ ईमान वाले! खाओ हमारी दी हुई सुथरी चीज़ें और अल्लाह का एहसान मानो, अगर तुम उसी को पूजते हो। (कंजुल ईमान, अल-बक्रा: 172)

फिर रसूले पाक ﷺ ने एक ऐसे शख्स का तज़क़िरा फ़रमाया जो एक सफ़र करता है, यहाँ तक कि उसका सर परागंदा और जिस्म गुबार आलूद (धूल में अटा हुआ) हो जाता है। फिर (उसी आजिज़ी और परेशानी के आलम में) आसमान की तरफ़ अपने दोनों हाथ उठाकर या-रब! या-रब! (ऐ मेरे परवर दिगार) कहता है और हाल यह है कि उसका खाना हराम, उसका पीना हराम, उसका लिबास हराम (यानी यह सब हराम कमाई का है) और हराम ही ग़िज़ा से उसकी परवरिश हुई तो उस हाल में भला कैसे उसकी दुआ क़बूल होगी? (सही मुस्लिम: 1 / 326)

इस ह़दीसे पाक में चन्द बातें तवज्जोह के काबिल हैं।

1. अल्लाह तआला पाक है और पाक व हलाल कमाई उसकी बारगाह में कबूल होती है। हलाल खाए तो उसकी इबादत कबूल होगी, वरना नहीं। हलाल कमाई से सदका करे तो उसका सवाब पाये वरना कुछ न पाये और अगर नेक काम में मसलन मस्जिद की तामीर में लगाए तो सवाब से महरूम की साथ गुनाह का बोझ भी सर पर आये। कि अल्लाह की बारगाह से हराम पर सवाब की उम्मीद ज़रूर गुनाह है।

2. हलाल रोज़ी कमाना खाना इस क़दर अहम और ज़रूरी है कि अल्लाह तआला ने उसका हुक्म सिर्फ़ मोमिनों को नहीं बल्कि अपने मासूम रसूलों को भी दिया है। गोया पाकीज़ा, रिज़्क की तलाश अल्लाह के पाक पैग़म्बरों (अलैहिमुस्सलाम) का तरीका और सुन्नत है।

3. हराम रिज़्क का एक भारी नुक़सान यह है कि उसके साथ दुआयें रद हो जाती हैं।

अब नीचे चन्द आयते करीमा पेश की जाती हैं। ताकि उनसे सबक लिया जाये और यह बात ज़ेहन में बिठाई जाए कि रिज़्के हलाल (हलाल कमाई) इस्लाम मे किस क़दर ज़रूरी और अहम है।

(1) ऐ लोगो! खाओ जो कुछ ज़मीन में हलाल पाकिज़ा है और शैतान के क़दम पर क़दम न रखो। बेशक वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है। (तर्जुमा कंजुल ईमान, अल-बक्रा: 168)

(2) ऐ ईमान वालो! खाओ हमारी दी हुई सुथरी चीज़ें और अल्लाह का एहसान मानो अगर तुम उसी को पूजते हो। (कंजुल ईमान, अल-बक्रा: 172)

इन दोनों आयतों का मतलब यह है कि अल्लाह के बन्दों पर वाजिब है कि हलाल खायें और

हलाल को छोड़ कर हराम खाना यह शैतान के नक्शे क़दम पर चलना है, जैसे कि आज कल हो रहा है। सिर्फ़ मालदार और बड़ा आदमी बनने के चक्कर में अक्सर लोग हराम व हलाल की तमीज़ उठा चुके हैं शैतान को खुश कर रहे हैं। अल्लाह पाक राज़ी रहे या नाराज़ इसकी फ़िक्र बहुत कम देखने में आती है, और यही हमारी तबाही का सबसे बड़ा सबब है। इससे यह भी मालूम हुआ कि शुक्र सिर्फ़ हलाल रोज़ी पर ही अदा किया जा सकता है। हराम इस लायक़ कहाँ कि उस पर शुक्र किया जाये और यह भी मालूम हुआ कि रिज़्के हलाल पर अल्लाह का शुक्र वाजिब है, लिहाज़ा खाने के बाद अल्हम्दुलिल्लाह ज़रूर पढ़ें कि इससे अल्लाह तआला राज़ी और खुश होता है। (रियाजुस्सालेहीन पे० 76)

(3) ऐ ईमान वालो! और खाओ जो कुछ तुम्हें अल्लाह ने रोज़ी दी हलाल पाकीज़ा और डरो अल्लाह से जिस पर तुम्हें ईमान है। (कंजुल ईमान, मायदा: 88)

इस आयत में हलाल खाने की ताकीद के साथ यह भी है कि अल्लाह से डरो जिस पर तुम्हारा ईमान है, यानी अगर अल्लाह पर ईमान है तो उससे डरना चाहिए। इससे मालूम हुआ कि जो हराम खाता है वह अल्लाह से डरता नहीं, और न उसका ईमान मुकम्मल है। लिहाज़ा जो हराम खाता है, डर है कि उसके दिल से ख़ौफ़े इलाही और ईमान कहीं निकल न जाये।

(4) ऐ ईमान वालो! अपनी पाक कमाईयों में से कुछ दो और उसमें से जो हमने तुम्हारे लिये ज़मीन से निकाला। (कंजुल ईमान, अल-बक्रा: 267)

इस आयते पाक में अल्लाह तआला ने पाकीज़ा कमाई को सदका करने का हुक्म दिया है और

खेती से जो गेहूँ वगैरह निकले उसको इससे खेती की कदर व कीमत भी मालूम हुई कि खेत से जो पैदा होता है वह पाक ही होता है।

(5) और आपस में एक दूसरे का माल ना हक़ न खाओ और न हाकिमों के पास उनका मुक़दमा इस लिए पहुँचाओ कि लोगों का कुछ माल ना जाइज़ तौर पर खालो। (कंज़ुल ईमान, अल'बक्रा: 188)

ना हक़ माल खाने में तमाम ना जाइज़ व हराम तरीके आ गये, मसलन चोरी, ग़सब, डाकाज़नी, रिश्वत, मिलावट के ज़रिये हासिल किया हुआ माल, बिना ज़रूरत के भीक माँग कर माल कमाना, जुआ और पैसे लेकर झूठी गवाही देना वगैरह इन तमाम तरीकों से माल हासिल करना बातिल तरीके से लोगों का माल खाना है, और यह हराम है।

ऊपर की आयतों में हलाल रोज़ी कमाने की तरगीब है और हराम माल से बचने का हुक्म। माल अगर हराम ज़रिये से हासिल किया गया हो तो आफ़ते जान है और अज़ाबे आख़िरत का बाइस, लेकिन यही माल अगर हलाल और जाइज़ तरीके से कमाया जाए तो दुनिया व आख़िरत दोनों जहाँ में भलाई और तोशा-ए-आख़िरत का ज़रिया भी है और फ़ज़ले खुदा वन्दी भी। चुनाँचे कुरआने पाक में कई जगहों पर उसे फ़ज़लुल्लाह (अल्लाह का फ़ज़ल) से ताबीर किया गया है। अगरचे अल्लाह का फ़ज़ल आम है लेकिन तिजारत और माल भी फ़ज़ल ही का हिस्सा है।

कुरआनी आयतों की रौशनी में यह बात ज़ाहिर हो चुकी है कि इस्लाम में रिज़्के हलाल की बहुत अहमियत है और हराम कमाई से बचने की

बड़ी ताकीद आई है। अब इस सिलसिले की अह्दादीसे करीमा भी मुख़्तसरन लिखी जा रही हैं। अहले ईमान उनको पढ़ें, ईमान ताज़ा करें और दूसरे इस्लामी भाईयों तक पहुँचायें।

1. हज़रत अबू हु़रैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है, वह कहते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ से पूछा गया: क्या चीज़ लोगों को ज़्यादातर जन्नत में ले जायेगी? फ़रमाया ख़ौफ़े खुदा और अच्छा अख़लाक। फिर पूछा गया: क्या चीज़ ज़्यादातर लोगों को जहन्नम में ले जायेगी? फ़रमाया मुँह और शरमगाह। यानी मुँह में हराम लूक़मा डालना और शरमगाह का नाजाइज़ इस्तेमाल।

2. हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु से रिवायत है रसूले अकरम ﷺ ने फ़रमाया हलाल रोज़ी तलब करना दूसरे फ़राइज़ के बाद फ़र्ज़ है। (मिशकात शरीफ़: पे० 242)

यानी दूसरे फ़राइज़ की तरह इसकी पाबन्दी भी ज़रूरी है।

3. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले पाक ﷺ ने फ़रमाया: हलाल रोज़ी कमाना हर मुसलमान पर वाजिब है। (तरगीब व तरहीब जि० 2, पे० 533)

4. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फ़रमाते हैं कि मैंने हुज़ूरे अक़्दस ﷺ की बारगाह में यह आयते मुबारका तिलावत की। ऐ लोगो! खाओ जो कुछ ज़मीन में हलाल पाकीज़ा है। (अल-बक्रा: 169) उसी वक़्त हज़रत सअद बिन अबी वक्कास रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! मेरे लिये दुआ फ़रमा दीजिए कि मैं जो दुआ करूँ कुबूल हो। हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया: ऐ सअद! हलाल और पाक

रोज़ी खाओ उसकी वजह से तुम्हारी दुआयें कबूल हुआ करेंगी। उस जाते पाक की कसम जिसके दस्ते कुदरत में मुहम्मद ﷺ की जान है आदमी अपने पेट में ह़राम का लुकमा डालता है तो चालीस रोज़ तक कुबूलियत से मह़रूम रहती है। (तफ़सीरे ख़ज़ाइनूल इरफ़ान)

5. हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया जो शख़्स चालीस दिन तक ऐसी ह़लाल रोज़ी खाता है जिसे ह़राम के साथ ज़रा भी लगाव न हो, तो ह़क़ तअ़ाला उसके क़ल्ब (दिल) को नूर से भर देता है, व ह़िकमत और मा'रेफ़त के चश्मे उसके दिल से जारी कर देता है। (कीमिया-ए-सअ़ादत, मुतर्जम: पे० 306)

6. रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: अलबत्ता ज़रूख़-ज़रूर आयेगा लोगों पर एक ऐसा ज़माना कि आदमी इसकी परवाह नहीं करेगा कि जो माल उसने हासिल किया है वह ह़लाल है या ह़राम। (बुख़ारी शरीफ़)

आज वह वक़्त निगाहों के सामने है कि लोगों को सिर्फ़ इसकी फ़िक्र है कि माल आना चाहिए, ह़राम या ह़लाल कि कोई परवाह करता नज़र नहीं आता। इल्ला माशाअल्लाह।

7. हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूले पाक ﷺ ने फ़रमाया: वह गोश्त जो ह़राम से पला बढ़ा जन्नत में नहीं जायेगा, तो हर वह गोश्त जो ह़राम से बढ़ा जहन्नम की आग उसके लिये औला (बेहतर) है। (मिशकात शरीफ़: पे० 242)

बिला तकल्लुफ़ ह़राम खाने वाले अहले ईमान इस ह़दीसे पाक को पढ़ें और ग़ौर करें कि वह क्या खा रहे हैं और कहाँ जाने का इन्तेज़ाम कर रहे हैं?

8. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा रिवायत करते हैं कि नबी-ए-करीम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: जिस शख़्स ने दस दिरहम (रुपये) में एक कपड़ा ख़रीदा और उसमें एक दिरहम ह़राम का है तो जब तक वह कपड़ा उसके बदन पर रहेगा अल्लाह तअ़ाला उसकी कोई नमाज़ कुबूल नहीं करेगा। फिर उन्होंने अपनी दोनों उंगलियाँ अपने दोनों कानों में डाल कर फ़रमाया यह बहरे हो जायें, अगर इन्होंने यह बात हुज़ूर को फ़रमाते न सुनें हों। (मिशकात शरीफ़: 243)

9. सरकारे अक्दस ﷺ ने फ़रमाया जो शख़्स इस बात की परवाह न करे कि वो माल कहाँ से कमाता है यानी (ह़लाल ज़रिये से या ह़राम) तो अल्लाह तअ़ाला भी इस बात की परवाह न करेगा कि उसे जहन्नम में किस दरवाज़े से दाख़िल करे। (किताबुल कबाइर, मुतर्जम: पे० 193)

10. हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी-ए-करीम ﷺ ने फ़रमाया जिसने चोरी का माल ख़रीदा जानते हुए कि वह चोरी का माल है उसके गुनाह और आर (शर्मिन्दगी) में वह भी शरीक माना जायेगा। (तरगीब जि० 2, पे० 536)

आज कल जानबूझ कर चोरी का माल ख़रीदने बेचने का रिवाज आम है। लोग सोचते हैं कि हमने पैसा देकर ख़रीदा है, तो यह लोग जान लें कि चोरी का माल ख़रीदना ही मना है और ख़रीदा तो उसका शुमार भी चोरों में होगा। (तरगीब जि० 2, पे० 536)

अल्लाह तअ़ाला हमें ह़लाल रोज़ी की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और ह़राम रोज़ी से बचाए। (आमीन)

★★★

★ अल मजमउल इस्लामी, मिल्लत नगर मुबारकपुर आजमगढ़। (यूपी)

आइये वाक़्या-ए-मेराज से कुछ सीखें!

वैज्ञानिक कहते हैं कि इन्सान कुदरत की दी हुई सलाहियतों में से सिर्फ पाँच फीसद सलाहियतें ही अब तक इस्तेमाल कर सका है। आज हम आपको एक ऐसे हैरत अंगेज़, अनोखे और अकलों को दंग करने वाले वाक़ये के बारे में बताते हैं जिसे आज दुनिया के बड़े बड़े वैज्ञानिकों भी समझने से आजिज़ हैं। ऐसा लगता है कि इस वाक़ये में इन्सानी अक़ल की सारी सलाहियतें खर्च की गई हों। यह वाक़या हमारे आका नबी-ए-करीम ﷺ के साथ पेश आया। इस वाक़ये को “सफ़रे मेराज” कहते हैं। इस वाक़ये को हुए 1400 साल से ज़्यादा हो गया लेकिन आज तक रिसर्च (खोज) हो रही है और आइन्दा भी होती रहेगी। यहाँ सवाल यह है कि जब वैज्ञानिकों ने खुद ही मान लिया है कि इन्सान अब तक सिर्फ 5 फीसदी सलाहियतें ही इस्तेमाल कर सका है तो जिस वाक़ये में सारी सलाहियतें सर्फ़ कर दी गई हों, उसे 5 फीसदी अक़ल वाला इन्सान कैसे समझ सकता है?

मेराज का वाक़या तारीख़े इन्सानी का वह अज़ीम तरीन और हैरत नाक वाक़या है जो आने वाले वक़्त में इन्किशाफ़ात और ईजादात का आगाज़ साबित हुआ, जिसने तहकीक़ व तलाश के बन्द दरवाज़े खोल दिए और जो ख़लाओं के सफ़र का रहनुमा साबित हुआ। सच्चाई यह है कि अगर यह अज़ीम सफ़र न

किया जाता तो साइंस व टेक्नॉलोजी को वह कमाल कभी न हासिल हो पाता जो आज उसे हासिल है। सफ़रे मेराज तीन मरहलों में मुकम्मल हुआ। पहला मरहला हज़रत उम्मे हानी के घर से बैतुल मुक़द्दस तक, उसे “इसरा” कहा जाता है। दूसरा मरहला बैतुल मुक़द्दस से लेकर आसमानों तक और तीसरा मरहला आसमानों से लेकर अर्शे आज़म या ला-मकाँ तक, इन दो मरहलों को “मेराज” कहा जाता है।

कुरआने करीम में इस सफ़र के हवाले से इरशाद है:

तर्जुमा: पाक है वह ज़ात जो रातों रात अपने बन्दे को मस्जिदे ह़राम से मस्जिदे अक़सा तक ले गई जिसके आस-पास हमने बरकत रखी ताकि हम उसे अपनी अज़ीम निशानियाँ दिखाएँ। बेशक वह सुनता देखता है। (अल इसरा: 1)

मस्जिदे ह़राम से मस्जिदे अक़सा तक का सफ़र जिसे कुरआने करीम ने “असरी” का नाम दिया है, उसका इन्कार करने वाला काफ़िर है। क्योंकि यह सफ़र कुरआन से साबित है। और फिर मस्जिदे अक़सा से सिदरतुल मुन्तहा का सफ़र जिसे सफ़रे मेराज कहा जाता है, यह सही ह़दीसों से साबित है इसलिए इसका इन्कार करने वाला गुमराह है।

यह वाक़या कब पेश आया इस बारे में यकीन

से कुछ नहीं कहा जा सकता, अलबत्ता अक्सर सीरत की किताबों में है कि मदीना मुनव्वरा की तरफ हजरत करने से एक या डेढ़ साल पहले रजब के महीने की 27 वीं तारीख को सोमवार के दिन यह वाक्या हुआ। उस वक्त हुजूर ﷺ की उम्र शरीफ 52 साल थी। बुराक के ज़रिए यह सफ़र हुआ। बुराक के बारे में कहा जाता है कि उसका जिस्म घोड़े जैसा और मुँह इन्सानों जैसा था, उसके दो पर थे, रंग चमकदार और बिल्कुल सफ़ेद था और कद गधे से ऊँचा और ख़च्चर से नीचा था। बुराक, बर्क़ से बना है, जिसके माना बिजली के होते हैं। इससे समझ में आता है कि उसकी रफ़तार बिजली की सी थी। गोया यह कहा जा सकता है कि वह खुदाई रॉकेट था। बिजली की रफ़तार वैज्ञानिकों ने 1 लाख 86 हजार मील फी सेकण्ड बताई है। ज़ाहिर है जब बिजली की यह रफ़तार हो सकती है तो बुराक जो खुदाई रॉकेट था उसकी रफ़तार का अन्दाज़ा कैसे लगाया जा सकता है।

जिस रात हुजूर अक़दस ﷺ मेराज को तशरीफ़ ले गए उस दिन आपको कुफ़र ने बहुत सताया था। इसलिए कहा जा सकता है कि हुजूर की दिल जोई और खुशनूदी के लिये अल्लाह तआला ने उन्हें अपने दीदार से मुशरफ़ फ़रमाया। हुआ यूँ कि प्यारे आका ﷺ अपने चचाज़ाद बहन हज़रत उम्मे हानी के घर में आराम फ़रमा रहे थे। एक रिवायत के मुताबिक़ हुजूर ﷺ हतीम में आराम फ़रमा थे कि हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम हाज़िर हुए और आपको बड़े अदब व एहतिराम से जगाया और उन्हें सफ़रे मेराज की खुश ख़बरी सुनाई और फिर बुराक के

ज़रिए इस सफ़र की शुरूआत हुई। सबसे पहले आप बैतुल मुक़द़स तशरीफ़ ले गए जहाँ हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तक तमाम अम्बिया-ए-किराम आपका इन्तिज़ार कर रहे थे। आपने उनकी इमामत फ़रमाई। उससे समझ में आया कि आप इमामुल अम्बिया इसलिए भी हैं कि तमाम नबीयों ने आपकी इमामत में नमाज़ अदा फ़रमाई। हकीकी मेराज का सफ़र यहीं से शुरू हुआ।

बुराक की रफ़तार का आलम यह था कि इंसान की निगाह जहाँ तक काम करती है उसका क़दम वहाँ तक पड़ता था। इस सफ़र में आपकी सातों आसमान पर मुख़्तलिफ़ अम्बिया से मुलाक़ातें हुईं। पहले आसमान पर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम, दूसरे आसमान पर हज़रत ईसा और यह्या अलैहिस्सलाम, तीसरे पर हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम, चौथे पर हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम, पाँचवे पर हज़रत हारून अलैहिस्सलाम, छठे पर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और सातवें आसमान पर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से मुलाक़ातें हुईं। ऐसा लग रहा था कि सभी को आपके आने का इन्तेज़ार हो। जब सातों आसमान गुज़र गए तो एक ऐसा भी मुक़ाम आया जहाँ हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने भी साथ छोड़ दिया फिर हुजूर ﷺ अकेले आगे तशरीफ़ ले गए और वहाँ तक पहुँचे जहाँ किसी इन्सान का गुज़र तो दूर किसी बड़े से बड़े मुक़र्रब फ़रिश्ते की भी पहुँच नहीं है। आपको खुदा का कुर्ब ह़ासिल हुआ, जन्नत व दोज़ख़ के मनाज़िर दिखाए गए और अल्लाह ने आपकी उम्मत के लिए उन्हें नमाज़ जैसा अज़ीमुश्शान तोहफ़ा अता

फरमाया। सफ़रे मेराज से पहले सिर्फ़ दो नमाज़ें फ़र्ज थीं, मेराज के बाद 5 वक़्त की नमाज़ें फ़र्ज की गईं। इस पूरे वाक़ये की तफ़सील सीरत की किताबों में लिखी हुई है। मेराज के सफ़र में चाहे जितना समय लगा हो मगर अल्लाह की कुदरत कि वक़्त थम गया और यह पूरा सफ़र पलक झपकते हुए मुकम्मल हो गया, क्योंकि जिस बिस्तर पर आप आराम फ़रमा रह थे वह अभी तक गरम था, दरवाज़े की कुण्डी अभी तक ह़रकत कर रही थी और वुजू का पानी अभी तक बह रहा था।

सफ़र से वापसी पर सुबह को हुज़ूर ﷺ ने बहन उम्मे हानी को वक़या बताया तो उन्होंने आपसे अर्ज़ किया कि खुदारा! इस वाक़ये को लोगों के सामने न बयान फ़रमायें वरना वह आपका मज़ाक़ उड़ायेंगे और आपको परेशान करने का एक और बहाना उनको मिल जायेगा, मगर आपने फ़रमाया कि “मैं ज़रूर इसके बारे में बताऊँगा।” चुनाँचे जब हुज़ूर ﷺ ने इस वाक़ये का ऐलान फ़रमाया तो कुफ़ारे मक्का ने आपका बेहद मज़ाक़ उड़ाया और वाक़ये को झुटलाया। जब यह बात हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को मालूम हुई तो उन्होंने फ़ौरन इस वाक़ये की तसदीक़ कर दी। यही वजह है कि हुज़ूर ने उनका लक़ब सिद्दीक़ रखा। यह लक़ब इतना मशहूर हुआ कि उनके नाम का हिस्सा बन गया।

हुज़ूरे अकरम ﷺ का इस वाक़ये को ज़ाहिर करना खुद इस बात की दलील है कि वाक़या-ए-मेराज जिस्मानी हालत में हुआ है। ख़्वाब की हालत में नहीं जैसा कि कुछ लोगों की जानिब से कहा जाता है। क्योंकि ख़्वाब की वह हैसियत नहीं होती जो आँखों से देखकर

होती है। अगर मेअ़राज का यह वाक़या ख़्वाब होता तो हुज़ूर ﷺ मुमकिन था कि इसको ज़ाहिर न फ़रमाते और फिर अगर यह ख़्वाब होता तो कुफ़ारे मक्का इसकी इतनी ज़बरदस्त मुख़ालिफ़त क्यों करते? ख़्वाब तो ख़्वाब होते हैं, उनकी कोई अमली हकीक़त नहीं होती। मगर चूँकि वह जानते थे कि यह सफ़र बहालते जिस्म व रूह हुआ है इसलिए वह इसकी मुख़ालिफ़त कर रहे थे। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि आख़िर आसमानों का सफ़र एक ही रात के छोटे से हिस्से में कैसे मुकम्मल हो गया।

मेराज के वाक़ये को ख़्वाब या बहालते होश व हवास में होने की बहस सालों से चली आ रही है मगर अहले ईमान को कभी भी इसमें कोई शुब्हा न रहा क्योंकि अहले ईमान जानते हैं कि यह सफ़र अल्लाह ने कराया किसी इन्सान ने नहीं और अल्लाह तो हर चीज़ पर कादिर है तो कैसे इस हैरत अंगेज़ वाक़ये को इन्सानी अक़ल के मुताबिक़ समझा जा सकता है। अल्लाह तआला ने जिस आयत में इस वाक़ये का ज़िक़्र फ़रमाया है उस में लफ़्ज़े سبحانه खुद इस बात की तरफ़ इशारा कर रहा है कि इस सफ़र का मुहर्रिक़ (कराने वाला) अल्लाह तआला है। सच्ची बात यह है कि मेराज का वाक़या समझ पाना छोटे दिमाग़ वाले लोगों के बस की बात नहीं।

मुमकिन है कि आज का इन्सान यह कहे कि जैसे हुज़ूर 1400 साल पहले आसमान पर गए वैसे आज ख़लाबाज़ भी ख़लाओं का सफ़र कर रहे हैं। वाक़या यह है कि आज के ख़लाबाज़ों का सफ़र मेराज के सफ़र से कोई मुकाबला नहीं क्योंकि चाँद की ज़मीन

से दूरी सिर्फ 92 लाख 26 हजार 917 मील है जबकि सूरज का ज़मीन से फासला 9 करोड़ 30 लाख मील है। हमारे इस शम्सी निज़ाम की वुसअत (फैलाव) 10 या 15 अरब मील है। निज़ामे शम्सी के अलावा रात को नज़र आने वाले करोड़ों सितारे निज़ामे शम्सी से बाहर हैं। हमारे नबी ﷺ इससे भी आगे तशरीफ़ ले गए। इन सितारों की ज़मीन से दूरी का अन्दाज़ा इससे लगाइए कि रौशनी फ़ी सेकण्ड 1 लाख 86 हजार मील की रफ़तार से सफ़र करती है। इन सितारों में ऐसे सितारे हैं जिनकी रौशनी ज़मीन तक 100,200,500 और 1000 साल के बाद पहुँच सकती है। सिर्फ़ हमारी कहकशाँ के कुतर की लम्बाई एक तरफ़ से तक़रीबन 50 हजार नूरी साल और दूसरी तरफ़ से लाखों नूरी साल है। अन्दाज़ा लगाइए कि यह कहकशाँ कितनी बड़ी है। मगर हैरत है कि नबी इससे भी आगे तशरीफ़ ले गए और , सातों आसमान, जन्नत दोज़ख़, फिर अर्श तक की सैर की है। भला! वैज्ञानिकों का ख़लाओं का सफ़र, इस अज़ीम सफ़र के मुक़ाबले में क्या हैसियत रखता है?

सफ़रे मेराज पर एक दूसरे पहलू से भी ग़ौर कीजिए। जब भी नया नबी दुनिया में तशरीफ़ लाया तो उसको अल्लाह ने उस ज़माने की ताक़तों का जवाब बनाकर भेजा। हज़रत मूसा और हज़रत ईसा अलैहिमस्सलाम की ही मिसाल ले लें। हज़रत मूसा अलैहिमस्सलाम के ज़माने में जादू का बड़ा ज़ोर था। जब हज़रत मूसा ने खुदा की वह्दानियत (एक होने) का ऐलान फ़रमाया और फ़िरऔन की खुदाई को चैलेन्ज किया तो उसने अपने जादूगरों को हज़रत मूसा से मुक़ाबले के लिये उतार दिया। उन्होंने मैदान में

अपनी-अपनी रस्सियाँ डालीं तो रस्सियाँ जादू से साँप बनकर हज़रत मूसा अलैहिमस्सलाम की तरफ़ बढ़ीं मगर हज़रत मूसा का असा (लाठी) अल्लाह की कुदरत से अजदहा (बड़ा साँप) बन गया और सारे साँपों को निगल गया। नतीजा यह हुआ कि जादूगर मुसलमान हो गए। यह पूरा वाक़या कुरआने करीम में लिखा हुआ है।

यूँही हज़रत ईसा अलैहिमस्सलाम के ज़माने में तिब व हिक्मत का बड़ा ज़ोर था। अल्लाह ने हज़रत ईसा अलैहिमस्सलाम को ऐसा मोज़ा दिया कि वह मुर्दे पर हाथ रखते तो वह ज़िन्दा हो जाता। सबसे आख़िर में हमारे आका ﷺ तशरीफ़ लाए। अल्लाह तआला को मालूम था कि हमारे नबी की उम्मत में साइंस व टेक्नॉलोजी का ज़ोर होगा, लोग उसके दम पर तरक्की के झण्डे गाड़ेंगे, ख़लाओं का सफ़र करेंगे, तहक्कीक व रिसर्च के ज़रिए पूरी दुनिया पर छा जायेंगे। लिहाज़ा अल्लाह तआला ने हमारे नबी ﷺ को उम्मते मुहम्मदिया के हर मसले का जवाब बनाकर भेजा, उन्हें कुरआन अता किया जो क़यामत तक के लिये इन्सानों के मसाईल का हल है, उनकी सीरत दुनिया के सारे इन्सानों के लिए हमेशा रहनुमाई के फ़राइज़ अन्जाम देगी, उनको मेराज पर बुलाया गया ताकि यह पैग़ाम दिया जाए कि वैज्ञानिक चाहे जिस बुलन्दी पर पहुँच जायें मगर वह हुजूरे अकरम ﷺ के सफ़र मेराज की बराबरी कभी नहीं कर सकते। सफ़रे मेराज आज की वैज्ञानिक और टेक्नॉलोजी का जवाब था।

इस पूरे वाक़ये से चन्द बातें हमें सीखने को मिलती हैं जो हर किसी के लिए कामयाबी की कुंजी है।

1. इन्सान ख्वाह कितना ही नेक, सच्चा, ईमानदार और परहेज़गार हो मगर मुख़ालिफ़ीन व हासिदीन उसे परेशान करने का कोई भी मौका हाथ से जाने नहीं देते। इस मौके पर अपने फ़ैसलों पर अटल रहना, अपने मिशन में डटे रहना और हिम्मत के साथ हालात का मुक़ाबला करना हमारे हुज़ूर की सुन्नत है।

2. सच्चा दोस्त वही है जो हर जाइज़ काम में आपका साथ दे और बग़ैर किसी चूँ व चेरा के आपके साथ खड़ा रहे। ऐसा करना हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की सुन्नत है। जब सब हुज़ूर ﷺ को झुठला रहे थे तो सबसे पहले हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने आपकी तसदीक़ फ़रमाई।

3. बात अगर सच्ची हो और आपको यकीने कामिल हो तो फिर उसके इज़हार से पीछे नहीं हटना चाहिए लेकिन बात वही हो जिस का ताल्लुक़ ऐज़ला-ए-कलिमतुल्लाह (अल्लाह की बातें पहुँचाने) से हो, जिसका ताल्लुक़ दीन की तबलीग़ व इशाअत से हो। हज़रत उम्मे हानी के मना करने के बा वजूद हुज़ूर का वाक़या-ए-मेराज को ज़ाहिर करना हमें यही सिखाता है।

4. नमाज़ इन्सानों के लिए खुदा का एक अहम तरीन तोहफ़ा है जो हुज़ूर ﷺ के ज़ारिए हमें दिया गया है। मेराज में दिए गए इस तोहफ़े के बारे में हदीस शरीफ़ में फ़रमाया गया है: الصلوة معراج المومنين यानी नमाज़ मोमिनीन की मेराज है। यहाँ मेराज कहने का मतलब यह है कि जैसे मेराज में हमारे आका ﷺ ने अल्लाह तआला के जलवों को देखा उसी तरह नमाज़ भी बन्दों को अल्लाह से करीब कर देती है।

नमाज़ के ज़रिए मोमिन को मेराज यानी बुलन्दी हासिल होता है। इसलिए नमाज़ की पाबन्दी करनी चाहिए।

5. मेराज का वाक़या बताता है कि कायनात को अल्लाह ने इन्सानों के लिये बनाया है, पूरी कायनात इन्सानों के लिये तर्जुबा गाह की हैसियत रखती है। इन्सान आज चाँद तक पहुँच चुका है, इन्सान काइनात में ग़ौर करे और कुदरत के बनाए हुए निज़ाम पर रिसर्च करे ताकि कुदरत की बनाई हुई हिकमतों के मज़ाहिर, दुनिया के सामने पेश हो सकें।

6. मशहूर रिसर्चर अल्लामा गुलाम रसूल सईदी ने एक जगह पर लिखा है: मादी इन्सानों ने तरक्की की और उनकी तरक्की की मेराज यह है कि चाँद पर पहुँचे, वहाँ जाकर मालूम हुआ कि चाँद पर भी मिट्टी है, वहाँ से बतौर सौगात मिट्टी के ढेले लाए, तो यह मिट्टी से चले, मिट्टी तक पहुँचे और जो लेकर आए वह भी मिट्टी थी। हुज़ूर ﷺ अल्लाह के ज़िक्र से चले, अल्लाह के ज़िक्र तक पहुँचे और जो तोहफ़ा लेकर आए वह भी अल्लाह का ज़िक्र है ★★★

★ E-mail: sadiqraza92@gmail.com



मुबारकबाद



हज़रत शर्फ़ मिल्लत दामा ज़िल्लुहू इन्कमटैक्स सेटेलमेन्ट कमीशन के मेम्बर बनाये गये।

अल्हम्दुलिल्लाह हज़रत शर्फ़ मिल्लत सय्यद मुहम्मद अशरफ़ मारहरवी दामा ज़िल्लुहू चीफ़ इन्कमटैक्स कमिशनर (कोलकाता) को Government of India की तरफ़ से “इन्कमटैक्स सेटेलमेन्ट कमीशन” का मेम्बर बनाया गया है।

इस खुशी के मौके पर हम तिमाही “पयामे बरकात” और तमाम बरकातियों की तरफ़ से मुबारकबाद पेश करते हैं। (इदारा)

तू ज़मीं वालों पे अल्लाह का साया ख़्वाजा



यह मज़मून सुल्तानुल हिन्द हज़रत सय्यद शाह मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी अलैहिर्रहमा के यौमे विसाल 6 रजब 633 हि० की मुनासबत से शाए किया जा रहा है। (इदारा)

नाम व पैदाइश: हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अलैहिर्रहमा की पैदाइश “सीस्तान” या “सजिस्तान” में 537 हि० को हुई। वालिद माजिद का नाम सय्यद ग़यासुद्दीन और वालिदा का नाम बीबी माहे नूर था। आप वालिद की तरफ़ से हसनी और वालिदा की तरफ़ से हुसैनी सय्यद हैं।

बचपन के हालात: जिस ज़माने में आपकी पैदाइश हुई उस वक़्त के हालात बड़े ख़राब थे। हर तरफ़ क़त्ल व ग़ारत का बाज़ार गरम था, खुसूसन सजिस्तान के हालात इन्तिहाई ख़राब थे, जिससे तंग आकर आपके वालिद माजिद ने ख़ुरासान जाकर आबाद होने का फैसला कर लिया और अपने बाल बच्चों के साथ वहीं बस गए। उस वक़्त ख़्वाजा साहब की उम्र 1 साल थी। हज़रत ख़्वाजा साहब की शुरूआती पढ़ाई यहीं हुई। जब उम्र मुबारक 15 साल हुई तो वालिद साहब का इन्तक़ाल हो गया। अभी यतीमी का दाग़ धुला भी नहीं था कि वालिदा साहिबा भी वफ़ात पा गई, उस वक़्त आप सिर्फ़ 16 साल के थे। वालिदा की वफ़ात के बाद आप अकेले हो गए जिसकी वजह से तालीम से रिश्ता टूट गया और रोज़ी रोटी के इन्तज़ाम में लग गए।

बाग़ का वाक़्या: हज़रत ख़्वाजा साहब एक दिन अपने बाग़ में बैठे थे कि उधर से मशहूर बुजुर्ग हज़रत शेख़ इब्राहीम कन्दोज़ी अलैहिर्रहमा का गुज़र हुआ। ख़्वाजा साहब ने उन्हें देखकर बड़ी अक़ीदत से सलाम किया और बाग़ में आने की दावत दी। दावत का अन्दाज़ कुछ ऐसा था कि शेख़ साहब इन्कार न कर सके। ख़्वाजा साहब ने उनको प्यार से बिठाया और मीठे अंगूरों के चन्द गुच्छे खाने के वास्ते पेश किया। शेख़ ने उन्हें खा लिया फिर अपने थैले से रोटी का सूखा टुकड़ा निकालकर ख़्वाजा साहब को दिया और फ़रमाया: “यह फ़कीर की मेहमानी का बदला है इसे खालो।” यह कहकर उठे और चल दिए। ख़्वाजा साहब ने जैसे ही रोटी का वह टुकड़ा खाया आपके दिल की दुनिया बदल गई। आपको एहसास होने लगा कि यह दुनिया और इसकी तमाम रंगीनियाँ एक न एक दिन ख़तम होने वाली हैं। दूसरे दिन आपने बाग़ और चक्की बेच दिया और उससे जो कुछ पैसे मिले उसका कुछ हिस्सा अपने खर्चे के लिये रखा और बाकी फ़कीरों में बाँट कर इल्मे दीन हासिल करने के लिये निकल पड़े।

इल्म की तहसील: ख़्वाजा साहब ने सबसे पहले बुख़ारा और समरकन्द जाकर ज़ाहिरी उलूम

हासिल किये उसके बाद मुर्शिदे कामिल की तलाश में निकल पड़े। उस ज़माने में ईराक के “कस्बा हासून” में सिलसिला-ए-चिशतिया के अज़ीम बुजुर्ग और अपने ज़माने के वली-ए-कामिल हज़रत ख़्वाजा उस्मान हासूनी अलैहिर्रहमा रहते थे।

हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ अलैहिर्रहमा ख़्वाजा उस्मान हासूनी की बारगाह में हाज़िर हुए और उनसे फ़ैज़ हासिल करने लगे। आप वहाँ 20 साल तक रहे। ख़्वाजा साहब अपने शेख़ के मुरीद कब बने? इस बारे में अक्सर सवानेह निगारों ने लिखा है कि आप पहले दिन ही मुरीद हो गए थे।

वाक़या-ए-बैअत: आपके बैअत होने का वाक़या किताबों में यूँ लिखा है कि “बैअत के वक़्त मुर्शिद ने ख़्वाजा साहब को वुजू कराया, दो रक़अत नमाज़ पढ़वाई, फिर किब्ला की तरफ़ मुँह करके सूरह बकरा पढ़ने को कहा, उसके बाद 21 बार दुरूद शरीफ़ पढ़वाया और 60 बार सुब्हानल्लाह, फिर आपका हाथ पकड़ा और आसमान की तरफ़ चेहरा करके फ़रमाया: मैंने तुझको खुदा तक पहुँचाया और उसकी बारगाह का मक़बूल किया। फिर सर के बाल कटवाए और चार तर्की टोपी और जुब्बा अता फ़रमाया।”

तर्की, तर्क से बना है जिसका माना होता है “छोड़ना”। वह चार चीज़ें जिन्हें हर राहें सुलूक के मुसाफ़िर को छोड़नी पड़ती हैं, यह हैं:

(1) **तर्कें दुनिया:** यानी दुनियादारी को छोड़ना।

(2) **तर्कें उक़बा:** यानी इबादत सिर्फ़ अल्लाह को पाने की नीयत से करे ज़न्नत पाने के लिए नहीं।

(3) **तर्कें ख़्वाब व ख़ुराक:** यानी सिर्फ़ इतना

खाना और सोना जिससे इबादत में रुकावट न हो।

(4) **तर्कें ख़्वाहिशाते नफ़्स:** यानी नफ़्स की बुरी ख़्वाहिशों को छोड़ देना।

बारगाहे रसूल ﷺ में हाज़िरी: हज़रत ख़्वाजा साहब अपने शेख़ के पास रहकर सुलूक की तमाम मन्ज़िलों को तय करने के बाद हरमैन तय्यबैन तशरीफ़ ले गए। मक्का शरीफ़ से वापस होकर जब रौज़ा-ए-रसूल ﷺ पर हाज़िरी दी और दरबारे रिसालत में सलाम अर्ज़ किया तो जवाब मिला “वअलैकुम अस्सलाम ऐ समुंद्रों और जंगलों के कुतुबुल मशाइख़।” एक दिन आपको बारगाहे रिसालत से यह खुश ख़बरी मिली: “ऐ मुईनुद्दीन! तू मेरे दीन का मददगार है, मैंने तुझे हिन्दुस्तान की विलायत अता की। वहाँ कुफ़र व जुलमत फैली हुई है, तू अजमेर जा। तेरे वजूद से वहाँ कुफ़र का अंधेरा छटेगा और इस्लाम की रौशनी फैलेगी।” हज़रत ने ख़्वाब में आपको हिन्दुस्तान का नक्शा भी दिखाया। उसके बाद आप हिन्दुस्तान तशरीफ़ ले आए।

ख़्वाजा साहब की हिन्दुस्तान आमद: जिस वक़्त ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ अलैहिर्रहमा हिन्दुस्तान में आए उस वक़्त यहाँ हर तरफ़ कुफ़र व शिर्क का दौर दौरा था। यहाँ के लोग लाखों देवताओं की पूजा करते थे। वहम परस्ती इनके अन्दर कूट-कूट कर भरी हुई थी। भलाई के कामों से दूर-दूर का ताल्लुक न था। ऐसे में ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने हिन्दुस्तान के अज़ीम सियासी व समाजी मरकज़ अजमेर को चुना और यहीं से इस्लाम की दावत व तब्लीग़ का बा कायदा आगाज़ किया। आपने हिन्दुस्तान की सरज़मीन पर तकरीबन

45 साल इस्लाम की तब्दीगी की, इस दौरान आपके उम्दा अखलाक और दिलनशी दावत के नतीजे में बे शुमार लोग इस्लाम में दाखिल हुए और देखते ही देखते हिन्दुस्तान का कोना-कोना कलमा-ए-तौहीद की आवाजों से गूँज उठा। आपके मुबारक हाथ पर इस्लाम कुबूल करने वालों की तादाद 90 लाख बताई जाती है।

विसाल: 6 रजब 633 हि० मुताबिक 12 मार्च 1232 ई० को आपका विसाल हुआ और अजमेर शरीफ में दफन किए गए। आपका मज़ार-ए-मुबारक पूरी दुनिया में मशहूर है, लाखों की तादाद में लोग आपकी बारगाह में हाज़िरी देते हैं और फ़ैज़ पाते हैं।

ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ अलैहिर्रहमा की ज़िन्दगी से सबक: ख़्वाजा साहब के हालाते ज़िन्दगी को पढ़ने के बाद हमें पता चलता है कि आप बेशुमार खूबियों और खुसूसियात के हामिल थे जिनको नज़र अन्दाज़ करके कोई भी इन्सान अल्लाह तआला का मुक़र्रब और महबूब बन्दा नहीं बन सकता। नीचे हम उनके कुछ औसाफ़े हमीदा को लिख रहे हैं, ताकि कारेईन उन्हें अपनाकर अपनी दुनिया और आख़िरत को संवारें।

ख़ौफ़े खुदा: आप अल्लाह के नज़दीक बुलन्द मुक़ाम व मर्तबे पर फ़ाइज़ होने के बा वजूद अल्लाह तआला का ख़ौफ़ अपने दिल में बहुत ज़्यादा रखते थे। जब कभी क़ब्र व हश्र के मनाज़िर का तज़क़रा आ जाता तो आप बे इख़्तियार रो पड़ते और कभी-कभी तो चीखें तक बुलन्द हो जातीं।

मुहब्बते रसूल: रसूलुल्लाह ﷺ की मुहब्बत जाने ईमान और रूह इस्लाम है, उसके बिना कोई शख्स सुलूक के दरवाज़े तक नहीं पहुँच सकता। ख़्वाजा साहब

का सीना मुहब्बते रसूल का मदीना था। आपकी मुहब्बत का यह आलम था कि जब कभी कोई हदीस बयान करते तो रोज़े लगते यहाँ तक कि दाढ़ी मुबारक भीग जाती। एक मर्तबा आपने फ़रमाया: अफ़सोस है उस शख्स पर जो क़यामत के दिन आपसे शर्मिन्दा होगा उसकी जगह कहाँ होगी? जो आपसे शर्मिन्दा होगा वह कहाँ जायेगा?

सुन्नतों पर अमल: हुज़ूर ﷺ फ़रमाते हैं: तुममे कोई शख्स उस वक़्त तक कामिल मोमिन हो ही नहीं सकता जब तक उसकी ख़्वाहिश उस चीज़ के ताबेअ न हो जाए जो मैं लेकर आया हूँ। यानी मेरे तरीक़े और मेरी सुन्नत के मुताबिक़ न हो जाए। ख़्वाजा साहब की ज़िन्दगी का एक-एक लम्हा सुन्नत के मुताबिक़ गुज़रता था। सुन्नतों की पाबन्दी आपके नज़दीक कितनी अहम बात थी, आप फ़रमाया करते थे: “जो शख्स सुन्नतों को छोड़ देता है हश्र के दिन उसको हुज़ूर ﷺ के सामने लाया जायेगा और कहा जायेगा यह शख्स आपका उम्मत है, इसने सुन्नत की अदाएगी में कमी की है। उसके बाद ख़्वाजा साहब ज़ार व क़तार रोज़े लगे और फ़रमाया: अफ़सोस है उस शख्स पर जो क़यामत के दिन आप ﷺ की बारगाह में शर्मिन्दा होगा और जो उनकी बारगाह में शर्मिन्दा होगा वह भला कहाँ जायेगा?

नमाज़ की पाबन्दी: नमाज़ तमाम फ़राइज़ में सबसे अहम फ़र्ज़ और सारी इबादतों में सबसे अफ़ज़ल इबादत है। नमाज़ मोमिनीन की मेराज, हुज़ूर ﷺ के आँखों की ठंडक और अल्लाह तआला की बारगाह तक पहुँचने का सबसे अहम ज़रिया है। नमाज़ छोड़कर कोई

इन्सान अल्लाह व रसूल का प्यारा हो ही नहीं सकता। यही वजह है कि ख्वाजा साहब खुद भी नमाज़ों के पाबन्द थे और अपने मुरीदीन व मुतवस्सेलीन को भी नमाज़ की पाबन्दी का हुक्म देते थे। एक बार नमाज़ क़ज़ा कर देने की बात चल रही थी तो ख्वाजा साहब ने फ़रमाया: वह कैसे मुसलमान हैं जो वक़्त पर नमाज़ अदा नहीं करते और इस क़दर देर कर देते हैं कि वक़्त ही गुज़र जाए। और फ़रमाया: उनकी मुसलमानी पर बीस हज़ार अफ़सोस जो अल्लाह रब्बुल आलमीन की बन्दगी में कोताही करते हैं।

ग़रीबों की इमदाद: हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया: तमाम मख़्लूक अल्लाह की अयाल हैं और तुम में अल्लाह के नज़दीक वह इन्सान ज़्यादा बेहतर है जो अल्लाह की अयाल के लिये ज़्यादा फ़ायदा मन्द हो। हज़रत ख्वाजा साहब इस हदीस की अमली तफ़सीर थे। आप ग़रीबों और मुहताजों पर इस क़दर सख़ावत फ़रमाते थे कि आपका लक़ब ही “ग़रीब नवाज़” पड़ गया।

इनके अलावा और भी खुसूसियतें आपके अन्दर मौजूद थीं मगर उनको यहाँ लिखने से मज़मून लम्बा हो जायेगा।

हज़रत ख्वाजा साहब के इरशादाते आलिया:

अब आख़िर में हज़रत ख्वाजा साहब के चन्द इरशादात लिखे जा रहे हैं ताकि कारेईने किराम उन्हें पढ़ें और नसीहत हासिल करें।

☀ गुनाह तुम्हें उतना नुक़सान नहीं पहुँचा सकता जितना मुसलमान भाई को ज़लील व रूस्वा करना।

☀ नेकों की सोहबत, नेक काम करने से बेहतर है और बुरों की सोहबत, बुराई करने से बुरा है।

☀ काफ़िर 100 साल तक ला इलाहा इल्लल्लाह कहने से मुसलमान नहीं होता, लेकिन एक मर्तबा मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह कहने से 100 साल का कुफ़र दूर हो जाता है।

☀ जो चाहता है कि महशर की ख़ौफ़नाकियों से बचा रहे वह भूखों को खिलाए, नंगों को पहनाए और मुसीबत ज़दों की मदद करे।

☀ कोई शख्स सिर्फ़ औराद व वज़ाइफ़ से कुर्बे इलाही हासिल नहीं कर सकता जब तक कि वह नमाज़ न पढ़े।

☀ जो शख्स फ़राइज़ को अदा नहीं करता वह ह़राम रोज़ी खाता है।

अल्लाह तआला की बारगाह में दुआ है कि हमें और सारे मुसलमानों को ख्वाजा साहब के नक्शे कदम पर चलकर ज़िन्दगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। (आमीन) ★★★

★ tauheedahmad92@gmail.com

☀ विसाल ☀

हुज़ूर अहसनुल उलमा अलैहिर्रहमा के ख़ादिमे ख़ास मुहम्मद रफ़ीक़ उर्फ़ मुल्ला जी का 7 जनवरी 2016 को इन्तेक़ाल हो गया। मुल्ला जी मरहूम बड़े मुत्तकी और परहेज़गार इन्सान थे। उन्होंने 53 साल तक ख़ानकाह शरीफ़ में ख़िदमत अन्जाम दी। अल्लाह तआला उन्हें करवट-करवट जन्नत नसीब फ़रमाए और पसमाँदगान को सब्जे जमील अता फ़रमाए। (आमीन) (इदारा)

शाबानुल मुअज़्ज़म के फ़ज़ाइल व अहक़ाम अहदीसे रसूल ﷺ की रौशनी में

हमारा इस्लामी साल जिन बारह महीनों पर मुश्तमिल है उनमें फ़ज़ीलत व बुजुर्गी के लिहाज़ से तो हर महीना किसी न किसी खुसूसियत व अहमियत का हामिल है, मगर उनमें शाबानुल मुअज़्ज़म को यह अज़मत व फ़ज़ीलत हासिल है कि रसूले पाक ﷺ इस महीने में रोज़ों की खास पाबन्दी करते थे और इन रोज़ों के ज़रिए रमज़ान के रोज़ों की तैयारी करते थे, चुनाँचे हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने सरकार ﷺ से अर्ज़ किया कि क्या बात है कि आप शाबानुल मुअज़्ज़म के रोज़ों का दूसरे महीनों के रोज़ों से कहीं ज़्यादा एहतिमाम फ़रमाते हैं? तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “यह ऐसा महीना है जिसमें लोग रोज़ों से ग़ाफ़िल रहते हैं, हालाँकि रजब और रमज़ान के दरमियान इस महीने में लोगों के आ़माल अल्लाह तआ़ला की बारगाह में पेश किये जाते हैं और मैं चाहता हूँ कि मेरे आ़माल अल्लाह तआ़ला की बारगाह में इस हालत में पेश हों कि मैं रोज़े से हूँ।” और हज़रत अनस बिन मालिक से रिवायत है वह फ़रमाते हैं कि हुज़ूर ﷺ को शाबानुल मुअज़्ज़म के रोज़े बहुत महबूब थे।

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा फ़रमाती हैं कि “हुज़ूर ﷺ रोज़ा रखते यहाँ तक कि हमें गुमान होता कि अब आप इफ़तार नहीं करेंगे और आप इफ़तार फ़रमाते तो ऐसा लगता कि अब आप रोज़ा न

रखेंगे। मुझे नहीं मालूम कि आपने रमज़ानुल मुबारक के अलावा किसी और महीने के मुकम्मल रोज़े रखे हों और मुझे यह भी नहीं मालूम कि आप शाबानुल मुअज़्ज़म के अलावा किसी और महीने में इतने रोज़े रखते हों।

इन हदीसों की रौशनी में यह बात पूरे तौर से साबित होती है कि रसूलुल्लाह ﷺ शाबानुल मुअज़्ज़म के महीने में इबादत व रियाज़त और रोज़ों का बहुत ज़्यादा एहतिमाम फ़रमाते थे। इन्हीं हदीसों को नज़र में रख कर अहले इल्म ने फ़रमाया कि शाबानुल मुअज़्ज़म के नफ़ली रोज़े दूसरे महीनों के नफ़ली रोज़ों से अफ़ज़ल हैं।

शाबानुल मुअज़्ज़म के रोज़ों की अहमियत हुज़ूर ﷺ की इस हदीस से और भी बढ़ जाती है कि “इस महीने में लोगों के आ़माल अल्लाह तआ़ला की बारगाह में पेश किये जाते हैं तो मैं यह चाहता हूँ कि मेरे आ़माल इस हाल में पेश हों कि मैं रोज़े से हूँ।” सरकार अलैहिस्सलाम के इस इरशाद को देखकर हमारे असलाफ़े किराम शाबानुल मुअज़्ज़म में बिल खुसूस 15 वीं शाबान को इबादत व रियाज़त और नेक काम करते। इस महीने के नफ़ली रोज़े रखकर रमज़ान के फ़र्ज़ रोज़ों की तैयारी करते थे। चुनाँचे हज़रत उमर बिन कैस रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में कहा गया है कि जब शाबानुल मुअज़्ज़म का महीना क़रीब आता तो वह अपनी दुकान बन्द कर देते और तिलावते कुरआन के

लिये पूरे तौर से फ़ारिग हो जाते। हज़रत अबू बकर बलखी फ़रमाते हैं कि रजब का महीना खेत बोने का महीना है, शाबान का महीना उसको पानी देने का महीना है और रमज़ानुल मुबारक उस खेती को काटने का महीना है, तो जो न खेत जोते न बोए और न ही उसे पानी दे तो वह रमज़ान में खेत काटने का इरादा क्यों कर रखता है।

शाबान के महीने में हर शख्स को रोज़ों और तिलावते कुरआन की कसरत करनी चाहिए। इसका सबसे बड़ा फ़ायदा यह होगा कि रमज़ानुल मुबारक के फ़र्ज़ रोज़ों की तैयारी भी हो जाएगी और नेकियों में इज़ाफ़ा भी होगा। यूँ तो शाबान का पूरा महीना खैर व बरकत वाला है। मगर उसमें एक ऐसी रात है जिसके बारे में हदीसे पाक में आया है कि उस रात अल्लाह तआला की ख़ास नज़रे इनायत अपने बन्दों की तरफ़ होती है। चुनाँचे हज़रत मअज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है कि हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: “अल्लाह तआला शाबानुल मुअज़्ज़म की 15 वीं रात को अपने बन्दों की तरफ़ ख़ास नज़रे इनायत फ़रमाता है और शिर्क करने वालों और आपस में बुग़ज़ व दुश्मनी रखने वाले लोगों को छोड़ कर सबको बख़्श देता है।” और उसी रात में उन तमाम लोगों का नाम लिख लिया जाता है जिनका इन्तिक़ाल इस साल होने वाला होता है। चुनाँचे हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्ह़ा से मरवी है कि हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: शाबानुल मुअज़्ज़म की 15 वी रात में जिन लोगों को आने वाले शाबान तक मरना होता है उनकी मौतें

और लोगों की रोज़ियाँ लिखी जाती हैं।”

हज़रत अबू हु़रैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है कि “जब शाबानुल मुअज़्ज़म का चाँद ज़ाहिर होता है तो फ़रिश्ते को एक सहीफ़ा (रजिस्टर) दिया जाता है, जिसमें आने वाले शाबान तक मरने वालों के नाम लिखे होते हैं, यह और बात है कि इन्सान पौधे लगाता है, इमारतें बनाता है, शादी करता है और दूसरों पर जुल्म व ज़ियादती करता है हालाँकि उसका नाम आसमान में नहीं बल्कि इस साल मरने वालों के सहीफ़े (रजिस्टर) में लिखा होता है और वह इस तरह के कामों में लगा रहता है यहाँ तक कि वह दिन आ पहुँचता है जिस दिन उसको इस दुनिया से दूसरी दुनिया की तरफ़ कूच करना है।

शेख़ ख़लाल ने अपनी किताब “फ़ज़ले रजब” में ख़ालिद बिन मअदान की सनद से रिवायत किया है कि साल में पाँच रातें ऐसी हैं कि जो शख्स सवाब के पाने और इन रातों में अल्लाह के वादे की दिल से तस्दीक़ करते हुए इनमें इबादत व रियाज़त की पाबन्दी करे अल्लाह तआला उसको जन्नत में दाख़िल करेगा। इन रातों में रजब की पहली रात, कि उसमें इबादत करे और दिन का रोज़ा रखे, ईदुल फ़ितर और ईदुल अज़हा की रात, शबे आशूरा (मुह्र्रमुल ह़राम की 10 वी रात) और शाबानुल मुअज़्ज़म की पन्द्रहवीं रात है।

हज़रत अबू बकर अहमद बिन अली ने अपनी किताब में हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रहमतुल्लाही अलैहि के हवाले से नक़ल किया है कि आपने अदी बिन अरतात को लिखा कि साल की चार रातों में ख़ास कर इबादत और ताअत व बन्दगी का

एहतेमाम किया करें क्योंकि इन रातों में अल्लाह तआला की खास रहमत उसके बन्दों की तरफ़ मुतवज्जह होती है। रजबुल-मुरज्जब की पहली रात, शाबानुल मुअज़्ज़म की पन्द्रहवी रात, और ईदैन की दो रातों।

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है, वह फ़रमाती हैं कि मैं एक रात हुजूर ﷺ को अपने बिस्तर पर न पाई तो आपकी तलाश में निकली। मैंने आपको जन्नतुल बक़ी में इस हाल में पाया कि आप अपना सरे अक़दस आसमान की तरफ़ उठाए हुए थे, मुझे देखकर सरकार ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: “आइशा! क्या तुम्हें यह शुब्हा था कि अल्लाह और उसके रसूल तुम पर जुल्म करेंगे? मैंने अर्ज़ किया “नहीं ऐसा ख़याल नहीं था, अलबत्ता मुझे ऐसा लगा कि आप अपनी किसी दूसरी ज़ौजा (बीबी) के घर तशरीफ़ न ले गए हों। तो आप ﷺ ने फ़रमाया कि आइशा तुम्हें मालूम है यह कौनसी रात है? यह शाबानुल मुअज़्ज़म की पन्द्रहवी रात है, इस रात अल्लाह तआला आसमाने दुनिया की तरफ़ नुज़ूल फ़रमाता है और बनू कल्ब की बकरियों के बालों से ज़्यादा लोगों की बख़्शिश फ़रमा देता है।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि जब शाबानुल मुअज़्ज़म की पन्द्रहवी रात हो तो उस रात में इबादत व रियाज़त करो और दिन में रोज़े रखो, क्योंकि उस रात सूरज डूबते ही अल्लाह तआला आसमाने दुनिया की तरफ़ नुज़ूल फ़रमाता है, और अपने बन्दों से फ़रमाता है कि “है कोई मग़फ़िरत का तलबगार जिसको बख़्श दूँ? है कोई रोज़ी का तलबगार जिसको रिज़्क अता करूँ, है कोई मुब्तलाए ग़म कि

उसको मुसीबत से निजात दे दूँ।” और इस तरह अल्लाह तआला फ़जर तक अपने बन्दों की फ़रयाद सुनता रहता है।

अल्लामा फ़ाकिहानी ने अपनी किताब “अख़बारे मक्का” में ज़िक्र किया है कि आज भी अहले मक्का का इस पर अमल है कि सारे अहले मक्का मर्द व औरत, जवान व बच्चे, गुलाम और आज़ाद शाबानुल मुअज़्ज़म की पन्द्रहवी रात को मस्जिदे हराम की तरफ़ निकलते हैं और वहाँ नमाज़ पढ़ते हैं और ख़ाना-ए-का‘बा का तवाफ़ करते हैं और रात भर जाग कर पूरा कुरआन पढ़ लेते हैं, और इस दौरान नफ़ल नमाज़ भी पढ़ते जाते हैं। उनमें से जो नमाज़ पढ़ता है वह मुकम्मल सौ रक़ात नमाज़ इस तरह पढ़ता है कि हर रक़ात में सूरह फ़ातिहा के साथ ग्यारह बार सूरह इख़लास पढ़ता है और उस रात वह लोग आबे ज़म-ज़म लेते हैं तो उसे पीते हैं, गुस्ल करते हैं और अपने बीमारों के लिए उठा रखते हैं और उस रात के अपने कामों से वह लोग अल्लाह तआला की तरफ़ से बरक़त व हसनात के उम्मीदवार रहते हैं।

यह हैं शाबान के महीने और खास तौर से उसकी पन्द्रहवी रात के फ़ज़ाइल व तरगीबात रसूले पाक ﷺ की हदीसों बुजुर्गों के इरशादात और अहले मक्का के अमल की रौशनी में। इन्हीं फ़ज़ाइल व तरगीबात के पेशे नज़र आज जब अहले सुन्नत व जमाअत इस मुबारक रात में जाग कर अल्लाह की इबादत करते हैं और दिन में रोज़ा रखकर अपनी नियाज़ मन्दी का सबूत पेश करते हैं तो कुछ नादान लोग अहले सुन्नत व जमाअत के इन कामों **बाकी पेज न० 48 देखें।**

खानकाहे बरकातिया : एक तअरूफ

दूसरी किस्त

पिछले शुमारे में बताया गया था कि हज़रत मेहदी मियाँ अलैहिर्हमा के विसाल के बाद हुज़ूर सय्यदुल उलमा अलैहिर्हमा उनके जानशीन हुए। अब आगे का हाल मुलाहज़ा फरमायें!

हुज़ूर सय्यदुल उलमा अलैहिर्हमा सज्जादा नशीनी के बाद 17 साल तक बा हयात (ज़िन्दा) रहे और आपके ज़रिए मज़हबे अहले सुन्नत ख़ूब फला-फूला। 10 और 11 जुमादल आख़िरा 1394 हि० की दरमियानी रात में आपका विसाल हो गया। विसाल के बाद आपके शहज़ादे सय्यदे मिल्लत हज़रत सय्यद शाह आले रसूल हसनैन मियाँ नज़्मी अलैहिर्हमा सज्जादा नशीन हुए। हज़रत नज़्मी मियाँ अलैहिर्हमा एक



ज़माने तक मस्नदे बरकातिया पर रौनक अफ़रोज़ रहे। हाल ही में यक़ुम मुह्ररम 1435 हि० मुताबिक़ 1 नवम्बर 2013 ई० को मुम्बई में आपका भी विसाल हो गया। आपके जिस्मे मुबारक को मारहरा लाया गया और ख़ानकाह शरीफ़ में दफ़न किया गया। विसाल के बाद आपके बड़े साहबज़ादे सय्यद शाह सिब्तेन हैदर कादरी मियाँ साहब आपके जा नशीन हुए और फिलहाल आप ही सज्जादा नशीन हैं।

कारेईन-ए-किराम को बताता चलूँ कि हज़रत

सय्यद बशीर हैदर आले अबा ज़ैदी कादरी अलैहिर्हमा के दो साहबज़ादे साहबे सज्जादा हुए, एक हुज़ूर सय्यदुल उलमा और दूसरे हुज़ूर अहसनुल उलमा हुज़ूर सय्यदुल उलमा अलैहिर्हमा की ख़िलाफ़त के तअल्लुक से ऊपर बयान हो चुका। अब हम यहाँ से हुज़ूर अहसनुल उलमा अलैहिर्हमा के बारे में लिख रहे हैं।

हुज़ूर अहसनुल उलमा सय्यद शाह मुस्तफ़ा हैदर हसन मियाँ अलैहिर्हमा को इजाज़त व ख़िलाफ़त

अपने मामू जान ताजुल उलमा हज़रत सय्यद शाह औलादे रसूल मुहम्मद मियाँ कादरी अलैहिर्हमा से हासिल थी। हुज़ूर ताजुल उलमा ने अपने वालिदे मुहतरम हज़रत सय्यद शाह अबुल कासिम इस्माईल हसन शाह जी

मियाँ साहब की तजवीज़ पर हुज़ूर अहसनुल उलमा को ख़ानदान के अज़ीज़ों और अकाबिरीन उलमा की मौजूदगी में सज्जादा-ए-आलिया कादरिया बरकातिया पर अपने साथ अपने हाथों से बिठाया और अपने दस्तो क़लम (हाथ और क़लम) से महज़र-ए-सज्जादगी मुरत्तब फरमाया (लिखा)। चुनाँचे हुज़ूर अहसनुल उलमा अपने मामू जान के विसाल के बाद 17 मार्च 1956 ई० को सज्जादा-ए-बरकातिया पर रौनक अफ़रोज़ हुए और तक़रीबन 40 साल तक मस्नदे

सज्जादगी को आबाद रखा। 11 सितम्बर 1995 ई० को आपका विसाल हुआ और दरगाहे बरकातिया आपकी अब्दी (हमेशा की) आरामगाह बनी। विसाल के बाद आपके फ़रज़न्दे अकबर शैखुल मशाइख़, अमीने मिल्लत हज़रत सय्यद शाह मुहम्मद अमीन मियाँ कादरी दामा ज़िल्लुहु मस्नदे आलिया कादरिया बरकातिया पर जलवा अफ़रोज़ हुए और बिह्मिल्लाह आज तक मस्नदे बरकातिया से मज़हब व मिल्लत की ख़िदमात अन्जाम दे रहे हैं। अल्लाह तआला उनकी सेहत व उम्र में बरकतें अता फ़रमाये और उनका साया हमारे सरोँ पर ता देर कायम रखे। (आमीन)

वारिसे पंजतन हज़रत सय्यद शाह यहया हसन साहब अलैहिर्हमा ख़ानवादा-ए-बरकातिया के ऐसे शेख़ हैं जिन्होंने एक ज़माने तक गोशा नशीनी की ज़िन्दगी बसर की। आप अपने चचा हज़रत सय्यद शाह औलादे नबी उर्फ़ छम्मा मियाँ साहब अलैहिर्हमा के विसाल के बाद 1987 ई० में मारहरा शरीफ़ वापस आए और हज़रत छम्मा मियाँ अलैहिर्हमा की जगह सज्जादा नशीन हुए।

एक दिन वारिसे पंजतन ने हुज़ूर अहसनुल उलमा से अर्ज किया: “मुझे अपना बेटा नजीब दे दो!”

हुज़ूर अहसनुल उलमा ने फ़रमाया: चारों बेटे आपके हैं, अगर नजीब को ले जाना चाहते हैं तो ले जाइए!

चुनाँचे उसी दिन वारिसे पंजतन ने हुज़ूर रफीके मिल्लत सय्यद नजीब हैदर नूरी मियाँ को गोद ले लिया और विसाल से कुछ साल पहले अपना वारिस व जानशीन मुक़र्रर करके उनकी सज्जादा नशीनी का ऐलान फ़रमाया, वली-ए-अहदी की दस्तार बाँधी,

ख़रका पोशी के दिन अपने साथ दरगाहे मुअल्ला गद्दी के जुलूस में उनको लेकर गये।

वारिसे पंजतन के विसाल के बाद उनके चालीसवें के दिन उलमा व मशाइख़ की मौजूदगी में हुज़ूर रफीके मिल्लत दामा ज़िल्लुहु सज्जादा-ए-आलिया नूरिया पर रौनक अफ़रोज़ हुए। अलहम्दुलिल्लाह उस वक़्त से आज तक हज़रत पूरी सेहत व तन्दुरुस्ती के साथ क़ैम व मिल्लत की ख़िदमात अनजाम दे रहे हैं। अल्लाह तआला उनकी उम्र व सेहत में बरकतें अता फ़रमाये। (आमीन)

पहली किस्त में ज़िक्र हुआ था कि हुज़ूर साहिबुल बरकात अलैहिर्हमा के बड़े साहबज़ादे सरकारे कलाँ हज़रत सय्यद शाह आले मुहम्मद साहब अलैहिर्हमा से जो सज्जादगी चली उसे “बड़ी सरकार” कहा जाता है और छोटे साहबज़ादे हज़रत सय्यद शाह नजातुल्लाह अलैहिर्हमा से जो सज्जादगी चली उसे “छोटी सरकार” कहा जाता है।

अक़ताबे मारहरा: ख़ानकाहे बरकातिया मारहरा शरीफ़ को एक ऐसी फ़ज़ीलत हासिल है जो दुनिया की किसी भी ख़ानकाह को हासिल नहीं है। वह यह कि इस ख़ानकाह में एक ही गुम्बद के नीचे सात अक़ताब आराम फ़रमा हैं:

जिसके एक गुम्बद के नीचे सात कुतुब आराम करें ग़ौस ने ऐसा बसवाया है चाहत वाला मारहरा

फ़स्सुल कलेमात में लिखा हुआ है कि एक रात हुज़ूर साहिबुल बरकात अलैहिर्हमा को हुज़ूर ग़ौस पाक रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़ियारत नसीब हुई, उस वक़्त हुज़ूर ग़ौस पाक रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर साहिबुल बरकात से फ़रमाया: “तुम कई पुश्त तक के

लिये मारहरा के कुतुब मुकर्रर किये गए। जल्द अपने किसी मुरीद को कलियर शरीफ रवाना करो ताकि तुमको उस विलायत और कुतुबियत की सनद मआ खिलअते सरफराज़ी के दी जाए। इस वाक्ये के बाद हुज़ूर साहिबुल बरकात ने शाह मुहम्मद वासिल या शाह मुहम्मद रहबर को या दोनों हज़रात को कलियर शरीफ रवाना किया और हिदायत फरमाई कि “अगर इस सफर में तुमको कोई साहब तोहफा दें तो लेते आना।” यह दोनों हज़रात रवाना हुए। वापसी में एक बुजुर्ग दरवेश एक खेत से निकले और इन हज़रात से फरमाया: “क्या तुम पीर बरकात मारहरवी के मुरीद हो और मारहरा जा रहे हो?” उन्होंने जवाब दिया: “हाँ”। चुनाँचे उन बुजुर्ग ने सात दाने तस्बीह के जिन में कुछ अक्कीक, कुछ शीशे और कुछ लकड़ी के थे, अता फरमाये और एक दस्तार गज़ी की दी और फरमाया: अपने पीर को हमारा सलाम पहुँचा कर उनकी खिदमत में यह तोहफे पेश कर देना और कह देना **“यही प्याम यही रिसाला कहियो बरकात मारहरे वाला।”** यह फरमा कर गायब हो गए।

जब यह हज़रात मारहरा पहुँचे और तोहफे और पैगाम को हुज़ूर साहिबुल बरकात की खिदमत में पेश किया तो आपने इस नेअमत के मिलने पर बेहद खुशी का इज़हार किया और फरमाया कि जिन बुजुर्ग के ज़रिये हुज़ूर ग़ौस पाक रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह तोहफे मुझ तक भेजवाए, वह हज़रत बू अली शाह क़लन्दर अलैहिर्रहमा थे, यह जो सात दाने मुझे मिले हैं वह इशारा है कि मेरी औलाद में सात पुश्त तक कुतुबियत रहेगी और सात पुश्त तक बड़े-बड़े साहबे तसरूफ

और साहबे बातिन पैदा होंगे।

हुज़ूर साहिबुल बरकात ने जो कुछ फरमाया था वह हर्फ-हर्फ पूरा हुआ। आपकी औलाद में वह अक्ताब पैदा हुए। चुनाँचे आपकी औलाद से जब कोई कुतुबियत के मर्तबे पर फ़ाइज़ होता एक दाना खुद बखुद चटख़ जाता। अल्हम्दुलिल्लाह हुज़ूर ग़ौस पाक के भेजे हुए तबरूकात आज भी ख़ानकाहे बरकातिया में मौजूद हैं।

सातों कुतुबों के नाम: (1) सुल्तानुल आशिकीन, साहिबुल बरकात सय्यद शाह बरकतुल्लाह अलैहिर्रहमा। (विलादत: 1070 हि० वफ़ात: 1124 हि०). (2) बुरहानुल मुवहहिदीन हज़रत सय्यद शाह आले मुहम्मद अलैहिर्रहमा। (विलादत: 1111 हि० वफ़ात: 1164 हि०). (3) असदुल आरेफीन हज़रत सय्यद शाह हमज़ा ऐनी अलैहिर्रहमा। (विलादत: 1131 हि० वफ़ात: 1198 हि०). (4) शम्सुद्दीन अबुल फज़ल हज़रत सय्यद शाह आले अहमद अच्छे मियाँ अलैहिर्रहमा। (विलादत: 1120 हि० वफ़ात: 1235 हि०). (5) सुल्तानुत्तारिकीन हज़रत सय्यद शाह आले बरकात सुथरे मियाँ अलैहिर्रहमा। (विलादत: 1163 हि० वफ़ात: 1251 हि०). (6) ख़ातमुल अकाबिर हज़रत सय्यद शाह आले रसूल अहमदी अलैहिर्रहमा। (विलादत: 1209 हि० वफ़ात: 1196 हि०). (7) नूरुल आरेफीन हज़रत सय्यद शाह अबुल हुसैन अहमद नूरी अलैहिर्रहमा। (विलादत: 1255 हि० वफ़ात: 1324 हि०)

इंशाअल्लाह अगले शुमारे में इन बुजुर्गों के मुख्तसर ह़ालात लिखे जायेंगे।(जारी) ★★★

★ **ज्वाइंट सेक्रेटरी, अलबरकात एजुकेशनल सोसायटी, अलीगढ़।**

हुजूर नबी-ए-अकरम ﷺ (1)



या इलाही रहम फरमा मुस्तफा के वास्ते
या रसूलल्लाह करम कीजिए खुदा के वास्ते
विलादत: सय्यदुल मुरसलीन ख़ातमुन्नबिय्यीन
अहमदे मुज्ताबा हज़रत मुहम्मद मुस्तफा ﷺ की पैदाइश
12 रबीउल अक्वल शरीफ़ मुताबिक़ 20 अप्रैल 571 ई०
को पीर के दिन सुबह सादिक़ के वक़्त हुई। जिस वक़्त
आपकी पैदाइश हुई आपके दादा हज़रत अब्दुल मुत्तलिब
ख़ाना-ए-का'बा का तवाफ़ कर रहे थे, जब उन्हें यह
ख़बर सुनाई गई तो वह जल्दी-जल्दी घर आए और पोते
को सीने से लगा लिया, फिर आपको लेकर हरमे का'बा
में गए और ख़ैर व बरकत की दुआ फ़रमाई।

रज़ाअत: जिस ज़माने में हुजूर ﷺ की
पैदाइश हुई उस वक़्त अरबों का दस्तूर था कि वह
अपने बच्चों को दाईयों के हवाले कर देते थे, जो उन्हें
लेकर देहातों में आती थीं और उन्हें दूध पिलाती थीं।
देहातों की ताज़ा और साफ़ हवा की वजह से बच्चों की
सेहत अच्छी रहती थी और उनकी परवरिश खुली
फ़िज़ा में हो जाती थी। चुनाँचे हुजूर ﷺ को भी
कबीला-ए-बनू सअद की एक नेक ख़ातून दाई
हलीमा रज़ियल्लाहु अन्हा के हवाले किया गया,
जिन्होंने बड़े लाड व प्यार से आपकी परवरिश की।

बचपन का ज़माना: हुजूर ﷺ 5 साल तक
हज़रत हलीमा रज़ियल्लाहु अन्हा की परवरिश में रहे

उसके बाद अपने घर लोटे तो यहाँ सिर्फ़ आपकी
वालदा थीं, वालिद साहब (हज़रत अब्दुल्लाह
रज़ियल्लाहु अन्हु) का इन्तक़ाल आपकी पैदाइश से 6
माह पहले ही हो चुका था। आप अपनी वालिदा के
आगोशे मुहब्बत में 1 साल रहे। जब 6 साल उम्र शरीफ़
हुई तो आपकी वालिदा आपको लेकर नानिहाल आईं,
वापसी पर रास्ते में मक़ामे अबवा में उनका इन्तेक़ाल हो
गया। वहाँ से आप हज़रत उम्मे ऐमन के साथ मक्का
आए और अपने दादाजान की किफ़ालत में रहने लगे।
2 साल बाद दादा का भी इन्तेक़ाल हो गया और चचा
अबू तालिब ने आपकी परवरिश की ज़िम्मेदारी ले ली।
जनाब अबू तालिब की मआशी हालत बहुत अच्छी नहीं
थी इसलिए हुजूर ﷺ ने चचा पर बोझ बनना पसन्द
नहीं किया, चुनाँचे आप बचपन में ही चचा के कामों में
हाथ बटाने लगे और उनकी मदद करने लगे।

शादी: हुजूर ﷺ की उम्र मुबारक अभी सिर्फ़
25 साल की थी कि पूरे अरब में आपकी शराफ़त,
सदाक़त और अमानत का चर्चा होने लगा। लोग आपके
पास अपनी अमानतें रखते थे और आपकी सच्चाई व
पारसाई की गवाही देते थे। उन्हीं दिनों शहरे मक्का में
एक मुअज़्ज़ज़, शरीफ़ और मालदार ख़ातून हज़रत
ख़दीजा (रज़ियल्लाहु अन्हा) रहती थीं, जिनका
तिजारती सामान मुल्के शाम तक जाता था। उन्होंने

अपना सामान मुल्के शाम ले जाने के लिये हुजूर ﷺ से दरख्वास्त की। चुनाँचे आप उनका सामान लेकर मुल्के शाम गये और खूब नफ़ा हासिल करके लोटे। हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा आपकी ईमानदारी से इतना मुतास्सिर हुई कि आप से शादी करने का फैसला कर लिया। बिल आख़िर हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा से आपकी शादी हो गई। शादी के वक़्त आपकी उम्र 25 साल और हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की उम्र 40 साल थी।

वही का आगाज़: जब आपकी उम्र शरीफ़ 35 साल हुई तो आप अकेले रहने और अल्लाह तआला की इबादत करने लगे। इसी सिलसिले में एक दिन आप मक्का शहर से दूर ग़ारे हिरा में तशरीफ़ ले गए और वहीं अल्लाह तआला की इबादत करने लगे। जब उम्र मुबारक 40 साल हुई तो एक दिन जिब्रील अलैहिस्सलाम वही लेकर हाज़िर हुए और सूरह “अल-अलक़” की इब्तिदाई 5 आयतें पढ़कर सुनाई। यह वाक़िया 610 ई० में पेश आया।

तब्तीगे इस्लाम: वही नाज़िल होने के कुछ अर्से बाद आपको अपने रिश्तेदारों में इस्लाम की तब्तीग़ की इजाज़त दी गई, फिर ऐलानिया तौर पर तब्तीग़ का हुक्म हुआ। चुनाँचे हुक्मे इलाही के मुताबिक आपने मुशरिकीने मक्का को इस्लाम की दावत देनी शुरू की। पहले-पहल उन्होंने आपकी तरफ़ ज़्यादा तवज्जोह नहीं दी, लेकिन जब मुसलमानों की तादाद बढ़ने लगी तो मुशरिकीन आपके जानी दुश्मन हो गए और आपको और आपके सहाबा-ए-किराम को सताने लगे।

हिजरते मदीना: जब काफ़िरों ने मुसलमानों और खुद आप ﷺ पर जुल्म व तशद्दुद की इन्तहा कर

दी तो अल्लाह तआला ने हिजरत करने का हुक्म दे दिया। चुनाँचे आप हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को साथ लेकर मदीना तय्यबा के लिये रवाना हुए और 12 रबीउल अव्वल 1 हि० को सनीअतुल वदा के रास्ते मदीना तय्यबा में तशरीफ़ ले आए।

मदीना तय्यबा में क़याम: हुजूर ﷺ का मदीना तय्यबा में आना इस्लाम के हक़ में बड़ा मुफ़ीद साबित हुआ। देखते ही देखते इस्लाम बड़ी तेज़ी के साथ फैलने लगा। लोग हुजूर ﷺ की शख़िसयत, अच्छे अख़लाक़ और उम्दा तालीमात से इतने मुतास्सिर होते कि फ़ौरन कलमा पढ़कर सच्चे पक्के मुसलमान बन जाते।

नबी-ए-पाक ﷺ के मदीना तय्यबा आने के बाद मुसलमान भी हिजरत करके यहीं आने लगे। कुप्फ़ारे कुरैश ने जब देखा कि मुसलमानों की तादाद बढ़ रही है तो उन्हें ख़त्म करने की तरकीबें करने लगे, आख़िरकार रमज़ान 2 हि० को मुशरिकीन 1 हज़ार की फ़ौज के साथ मुसलमानों को मिटाने के इरादे से मक्का से निकले और बदर के मैदान में जमा हुए। 17 रमज़ानुल मुबारक को मुसलमानों और काफ़िरों के बीच एक ख़ूबेज़ जंग हुई, जिसमें मुसलमान कामयाब हुए और काफ़िरों को बुरी तरह शिकस्त हुई। यह जंग ईमान और कुफ़्र के बीच फैसला कुन साबित हुई इसके बाद काफ़िरों ने इस्लाम का रास्ता रोकने की लाख कोशिशें कीं मगर इस्लाम फैलता रहा और देखते ही देखते अरब की सरहदों से निकल कर अज़म के मुल्कों में दाख़िल हो गया।

विसाल: 12 रबीउल अव्वल 11 हि० को पीर के दिन हुजूर ﷺ का... **बाकी पेज न० 50 पर देखें।**

बरक़ाते ख़ानदाने बरक़ात

इस कॉलम में इंशाअल्लाह तआला ख़ानवादा-ए-आलिया बरक़ातिया मारहरा शरीफ़ के आसान और मुजरब तावीज़ात और वज़ीफ़े वगैरह शाए होते रहेंगे। हर सुन्नी मुसलमान को नेक मक़सद के लिए इन पर अमल करने की इजाज़त है। (इदारा)

पंज गंजे कादिरया:

1. बाद नमाज़े फ़जर या अज़ीज़ो, या अल्लाह।
2. बाद नमाज़े जुहर या करीमो, या अल्लाह।
3. बाद नमाज़े अ़सर या जब्बरो, या अल्लाह।
4. बाद नमाज़े मग़रिब या सत्तारो, या अल्लाह।
5. बाद नमाज़े इशा या ग़फ़ारो, या अल्लाह।

सब सौ-सौ बार अव्वल व आख़िर तीन-तीन बार दुख़द शरीफ़ के साथ पढ़ें। इंशाअल्लाह इसकी पाबन्दी करने से बे शुमार दीन व दुनिया की बरक़तें हासिल होंगी।

दीनी व दुनियावी ज़रूरतों के पूरा होने, कामयाबी हासिल होने और दुश्मनों की नाकामी के लिए:

(1) ”اللَّهُ رَبِّي لَا شَرِيكَ لَهُ۔“ 874

बार अव्वल व आख़िर ग्यारह-ग्यारह बार दुख़द शरीफ़ के साथ वुजू करके किब्ला की तरफ़ मुँह करके दोज़ानू बैठ कर मुराद के पूरा होने तक बराबर पढ़ें, और इसी कलमे को उठते, बैठते, चलते, फिरते वुजू बे वुजू हर हाल में ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ें।

(2) ”حَسْبُنَا اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ۔“ 450

बार रोज़ाना मुराद पूरा होने तक अव्वल व आख़िर ग्यारह बार दुख़द शरीफ़ के साथ पढ़ें। जब घबराहट हो इसी कलमे को ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ें।

(3) बाद नमाज़े इशा 11 बार तुफ़ैले हज़रते

طُفَيْلِ حَضْرَتِ دُسْتِغِيرِ
دُشْمَنُ هُوئے زِير۔

अव्वल व आख़िर 11-11 बार दुख़द शरीफ़ मुराद के पूरा होने तक।

यह तीनों अमल मज़कूरा काम के लिए निहायत मुजरब और आसानी से हासिल होने वाले हैं। इनसे ग़फलत न की जाए। जब कोई ज़रूरत पेश आए हर एक अपने-अपने मुक़ररा आदाद (गिन्ती) पर पढ़ा जाए। पहले और दूसरे के लिए कोई ख़ास वक़्त नहीं। जिस वक़्त चाहें पढ़ें। और तीसरे अमल का वक़्त बादे इशा है जब तक मुराद पूरी न हो तीनों उसी तरीक़े से पढ़े जायें।

तरकीबे नमाज़े इस्तख़ारा:

आधी रात को उठ कर अकेले में दो रक़ात नमाज़ नफ़ल ब नीयत नमाज़े इस्तख़ारा दिल को हाज़िर कर के पढ़ें और इसमें نَسْتَعِينُ وَإِيَّاكَ को इतनी बार पढ़ें कि इस्तिग़राक़ (बेख़ुदी) की कैफ़ियत पैदा हो। अगर उस हालत में सर दाहिनी तरफ़ मुड़े तो मुराद हासिल है और अगर बाँई जानिब फिरे तो उस काम से रूक जाए। फिर नमाज़ मुकम्मल कर लें। (जारी...) ★★★

★ सज्जादा नशीन ख़ानकाहे बरक़ातिया, मारहरा शरीफ़।



नूरुल आरिफीन सय्यद शाह अबुल हुसैन अहमद नूरी मारहरवी अलैहिरहमा



नूरुल आरिफीन सिराजुस्सालिफीन हज़रत सय्यद शाह अबुल हुसैन अहमद नूरी अलैहिरहमा के यौमे विसाल (1 रजब 1234 हि०) की मुनासबत से यह मज़मून इस शुमारे में खुसूसी तौर पर शामिल किया जा रहा है। (इदारा)

पैदाइश व तालीम: नूरुल आरिफीन, सरकारे नूर हज़रत सय्यद शाह अबुल हुसैन अहमद नूरी मियाँ साहब अलैहिरहमा की पैदाइश 19 शव्वाल 1255 हि० मुताबिक 26 दिसम्बर 1839 ई० को जुमेरात के दिन मारहरा शरीफ में हुई। आपके वालिद का नाम हज़रत सय्यद शाह जुहूर हसन बिन हज़रत ख़ातमुल अकाबिर सय्यद शाह आले रसूल अहमदी रहमतुल्लाहि अलैहि था, और वालिदा साहिबा सय्यदा इकराम फ़ातिमा बिनत हज़रत सय्यद शाह दिलदार हैदर कुदिसा सिरुहुमा थीं, जो हज़रत सय्यद शाह आले बरकात सुथरे मियाँ अलैहिरहमा की नवासी भी थीं।

तालीम व तरबियत: आपके वालिद माजिद का इन्तेक़ाल कम उम्र में ही हो चुका था, इसलिए आपकी तालीम व तरबियत आपके दादाजान हज़रत आले रसूल अहमदी ने की। दादा साहब आपसे बहुत ज़्यादा मुहब्बत फ़रमाते और हर वक़्त अपने साथ रखते थे। कुन्बे की कुछ औरतें जो ख़िदमते वाला में किसी क़दर गुस्ताख़ थीं, अक्सर कह बैठती थीं कि “इस बच्चे को भी क्या फ़कीर ही करोगे?” हज़रत फ़रमाते थे कि “हाँ! फ़कीर करूँगा और यह ऐसा

फ़कीर होगा कि बड़े-बड़े बादशाह और अमीर इसके आगे सर झुका देंगे।”

आपकी तालीम की शुरूआत इस तरह हुई, सबसे पहले हज़रत ख़ातमुल अकाबिर ने सूरह “इकरा” शरीफ़ की चन्द आयतें पढ़ायीं, सीना-ए-मुबारका से लगाया, رَبِّ يَسِّرْ وَتَمِّمْ بِالْخَيْرِ के साथ ख़ास दुआएँ दीं फिर दरगाह शरीफ़ के मदरसा-ए-फ़ारसी में दाख़िल कर दिया।

बातिनी उलूम की तकमील: यूँ तो आपने ज़ाहिरी व बातिनी हर तरह के उलूम अपने दादा जान से हासिल किए मगर उनके अलावा हज़रत सय्यद शाह गुलाम मुहियुद्दीन अलैहिरहमा से भी पढ़ा और उनसे इजाज़त नीज़ औराद व अशग़ाले ख़ानदानी हासिल हुई। फ़न्ने तफ़सीर भी शुरू में आप ही से सीखा।

हज़रत सरकारे नूर ने मुकम्मल 41 साल अपने दादा जान की बारगाह में रहकर तरबियत हासिल की और सुलूक व मारेफ़त की दुश्वार मन्ज़िलें तय कीं। इस दौरान आपने ख़ूब रियाज़त व मुजाहदे किए, 7 साल ही से नमाज़ व रोज़े और औराद व वज़ाइफ़ के पाबन्द हो गए थे। 18 साल तक ज़िक़े

जलाली व जमाली की और तन्हाई में रहे और इस दरमियान सुलूक की सारी मन्ज़िलों को तय कर लिया।

सरकारे नूर की रियाज़त का यह आलम था कि अक्सर आपकी दादी जान देखकर घबरा जातीं और हुज़ूर खातमुल अकाबिर से उनकी रियाज़त कम कराने की गुज़ारिश करतीं मगर आप उन्हें जवाब देते: “आपके प्यार व मुहब्बत के वास्ते दूसरे शहज़ादों को दे दिया है, यह कुछ और हैं और इन्हें कुछ और होना है, यह मारहरा के उन अक़ताब (कुतुबों) में से हैं जिनकी बशारत हज़रत बू अली शाह क़लन्दर और हज़रत शाह बदीउद्दीन मदार रहमतुल्लाह अलैहि ने दी है।

ख़िलाफ़त और सज्जादा नशीनी: हज़रत नूरी मियाँ अलैहिर्रहमा को कम उम्री में ही हज़रत शाह आले रसूल अहमदी से बैअत व ख़िलाफ़त हासिल हुई।

आप अपनी किताब “वसाया” के पेज 17,18 पर लिखते हैं:

रबीउल अब्बल 1267 हि० की 17 वीं रात को मुशिदि आला हज़रत आले अहमद उर्फ़ अच्छे मियाँ साहब के फ़ातिहा से फ़ारिग़ होकर मेरे दादा और मुशिद सय्यदना शाह आले रसूल अहमदी मुझे साथ लेकर सज्जादा के मक़ाम पर आए। मेरी उम्र उस वक़्त 12 साल थी। सज्जादा शरीफ़ पर तशरीफ़ लाकर मुझे मस्नदे तरीक़त पर चार ज़ानू बैठने का हुक्म दिया चुनाँचे मैं बैठ गया। हज़रत ने खुद दो ज़ानू बैठकर एक रुपया बतौर नज़र पेश की और फ़रमाया: “मुबारक हो!”

लेकिन सरकारे नूर की आम रस्मे सज्जादगी का ऐलान हज़रत खातमुल अकाबिर के उर्स शरीफ़ के मौक़े पर ज़िलहिज्जा 1297 हि० को

मजमा-ए-आम में किया गया।

रिश्ता-ए-इज्दवाज (शादी): हज़रत मियाँ साहब अलैहिर्रहमा की दो शादियाँ हुईं। पहली शादी आपके चाचा हज़रत छुट्टू मियाँ साहब अलैहिर्रहमा की साहबज़ादी से हुई। उन बीबी साहिबा की वफ़ात के बाद हज़रत का दूसरा निकाह आपके फूफा सय्यद मुहम्मद हैदर हसन ज़ैदी की साहबज़ादी से हुआ, जो हज़रत सय्यद शाह औलादे रसूल अलैहिर्रहमा की नवासी थीं। दोनों बीवियों से कोई औलाद नहीं हुई।

औसाफ़े जमीला: हज़रत सरकारे नूर अलैहिर्रहमा बेशुमार औसाफ़ और खूबियों के मालिक थे, हम यहाँ आपकी चन्द खूबियों और आदतों को लिख रहे हैं ताकि कारेईन-ए-किराम उन्हें पढ़ें और अपनी ज़िन्दगी में शामिल करें।

दीन पर इस्तक़ामत: हज़रत नूरी मियाँ साहब अपने ईमान व अक़ीदा और मसलक व मशरब पर पूरी सख़्ती से कायम रहे। बद मज़हबों और बद अक़ीदा लोगों से खुद को भी हमेशा दूर रखा और मुरीदीन व मुतवस्सेलीन को भी इसकी तालीम देते रहे। आप अपनी किताब सिराजुल अवारिफ़ में एक जगह लिखते हैं।

“अपने सच्चे दीन पर इतने सख़्त और मज़बूत हों कि दूसरे मुतास्सिब जानें, इसलिए कि दीने हक़ में मज़बूती पसन्दीदा बात है, और दीने बातिल पर मज़बूती बेवकूफी और बुरी चीज़ है।”

दूसरी जगह लिखते हैं। “ऐ अज़ीज़! अल्लाह तआला तेरी इस्लाह फ़रमाए, अच्छी तरह समझ ले कि अक़ीदा की दुरुस्तगी हर काम की जड़ है। अक़ीदा की ख़राबी खुदा-ए-जब्बार के ग़ज़ब का सबब है और

दोज़ख़ में जाने का रास्ता है। अल्लाह पनाह दे कि वह इज़्ज़त व मग़फ़िरत वाला है। ख़राब अक़ीदा रखने वाला कितनी ही इबादत क्यूँ न करे, मन्ज़िल को न पहुँच सकेगा, और वह शख़्स उस आदमी की तरह है जो का'बा का इरादा करे और पीठ का'बा की तरफ़ करे, कि जितना भागेगा का'बा से दूर ही होता जायेगा। इसलिए ज़रूरत है कि सबसे पहले इन्सान अपने तमाम अक़ीदे मज़हबे अहले सुन्नत के मुताबिक़ दुरुस्त करे और सच्चा सुन्नी बन जाये फिर उसके बाद बातिन की तरफ़ तवज्जोह देकर उस राह में क़दम डाले, क्योंकि खुदा तआला तक रसाई (पहुँच) अहले सुन्नत के अक़ाइद इख़्तियार किये बग़ैर मुमकिन ही नहीं।”

सब्र: आपके अन्दर सब्र का माद्दा कूट-कूट कर भरा हुआ था, सब्र का यह आलम था कि बड़ी-बड़ी मुसीबतों पर अल्लाह का शुक्र अदा करते और ज़बान पर हर्फ़ें शिकायत नहीं लाते, अगर कभी बीमारी की वजह से कोई नमाज़ क़ज़ा हो जाती तो उस पर अफ़सोस करते और बहुत ज़्यादा अल्लाह का ज़िक्र करते।

ग़रीबों की इमदाद: आप ग़रीबों और मुहताजों से मुहब्बत करते और उनकी हाज़त रवाई (मदद) फ़रमाते, यही वजह है कि उनके आस-पास अक्सर हाज़त मन्दों का पहरा लगा रहता था। आपकी सख़ावत का अन्दाज़ अनोखा था। अगर किसी को कोई ज़रूरत होती मगर आपसे कहने में या लोगों के सामने माँगने में शर्म करता तो आप उसके मक़सद को भाँप लेते और उसकी कोई ख़राब चीज़ माँग कर उसके बदले में अच्छी चीज़ें ज़बरदस्ती दे देते, इस तरह वह शख़्स बिना शर्म के अपना मक़सद हासिल कर लेता। अगर

आप को मालूम हो जाता कि फ़लों आदमी के घर खाने की कोई चीज़ नहीं है तो चुपके से उसके घर भेजवा देते।

अगर कोई कर्ज़दार होता तो आप उसकी मदद करके कर्ज़ के बोझ से आज़ाद कराते। एक मर्तबा हज़रत के मुरीदे ख़ास जनाब काज़ी गुलाम शब्बर साहब बदायूनी को 300 रुपये की उस ज़माने में ज़रूरत हुई, काज़ी साहब आपकी बारगाह में हाज़िर हुए, दिल में इरादा था कि हज़रत से कोई ऐसा वज़ीफ़ा हासिल करूँगा जिससे ग़ैब से मदद मिल जाये। जब बारगाह में पहुँचे उस वक़्त हज़रत इबादत में मसरूफ़ थे, इबादत से फ़ारिग़ होकर तशरीफ़ लाये और काज़ी साहब से बिना कुछ पूछे 300 रुपये उन्हें दिया और फ़रमाया: “रूपया हासिल करने वाले अमल की ज़कात मुश्किल है, यह रखलो इंशाअल्लाह सब ठीक हो जायेगा।”

फुज़ूल बातों से दूरी: हज़रत नूरी मियाँ अलैहिर्रहमा को फुज़ूल बातें बिल्कुल पसन्द नहीं थीं। वह या तो काम की बात करते या इबादत व ज़िक्र में मशगूल रहते। आप अपने मुरीदीन व मुतवस्सेलीन को भी इस चीज़ का पाबन्द रखते, आपके पेशे नज़र हमेशा यह हृदीसे पाक रहती “जिसे बात करनी हो वह अच्छी बात करे वरना ख़ामोश रहे।”

नरम कलामी: हज़रत वाला बहुत सादा तबियत और नरम कलाम थे। आपकी बातें इतनी प्यारी होतीं और बोलने का अन्दाज़ इतना निराला होता कि हर बात दिल में उतर जाती। आप फ़रमाया करते: “हम उम्मत मुहम्मदी हैं और सरकारे कादरी के फ़कीर हैं, हम में सख़्ती कहाँ और कैसे हो सकती है?”

सिलसिले वालों से मुहब्बत: आप मुरीदीन

और अहले सिलसिला से बे पनाह मुहब्बत फरमाते, आप कहा करते थे कि “हम अल्लाह तआला से तुम्हारे लिये दुनिया और आखिरत में कामयाबी की हर वक़्त दुआ करते हैं, तुम्हारी तकलीफ़ से हमें तकलीफ़ होती है, ईशाअल्लाह अनजाम बख़ैर हो!”।

मशाइखे सिलसिला की फ़ातिहा: तमाम बुजुर्गों की तारीख़े वफ़ात पर फ़ातिहा आपका मामूल था। रोज़ाना शज़रा पढ़ने के बाद बुजुर्गों को ईसाले सवाब करते। ग्यारहवीं तारीख़ को हुज़ूर ग़ौसे पाक रज़ियल्लाहु अन्हु की फ़ातिहा का खुसूसी एहतिमाम फ़रमाते, कोई ख़ास मिठाई मुक़र्रर नहीं थी मगर मिठाई सिर्फ़ मुसलमान की दुकान से ही मंगवाते थे और हमेशा ग़ौस पाक की फ़ातिहा के साथ हुज़ूर शाह अबुल फ़ज़ल शमसुद्दीन आले अहमद अच्छे मियाँ की फ़ातिहा आप खुद भी फ़रमाते और मुरीदीन को भी ताकीद करते।

तसनीफ़ात: आपको शोहरत व नामवरी से बहुत नफ़रत थी और तसनीफ़ चूँकि शोहरत का एक ज़रिया है इसलिए आप इस मैदान से दूर रहे, लेकिन ज़रूरत पड़ने पर जब भी किसी मौजू (विषय) पर क़लम उठाया तो उसका हक़ अदा कर दिया। आपकी लिखी हुई किताबें डेढ़ दर्जन से ज़्यादा हैं मगर उनमें दो किताबें अवाम व ख़वास में बहुत मक़बूल हैं।

1. **अल-असलुल मुसफ़फ़ा फ़ी अकाइदे अरबाबे सुन्नतिल मुस्तफ़ा:** यह उर्दू ज़बान में अहले सुन्नत के अक़ीदों के बयान में मुख़्तसर और बच्चों की तालीम के लिये बहुत अच्छा रिसाला है। यह छपकर मन्ज़रे आम पर आ चुका है।

2. **सिराजुल अवारिफ़ फ़िल वसाया**

वल-मअरिफ़: यह बहुत आसान और मालूमाती रिसाला है जिसमें आपने शरीअत व तरीक़त के मसाइल को बड़े अच्छे ढंग से बयान फ़रमाया है। इस किताब को पढ़ने के बाद कोई शख़्स आपके फ़ज़ल व कमाल की दाद दिए बग़ैर नहीं रह सकता।

विसाल और जा नशीनी: हज़रत सय्यद शाह अबुल हुसैन अहमद नूरी मियाँ साहब अलैहिर्रहमा का विसाल 1 रजब 1234 हि० मुताबिक़ 1902 ई० को मारहरा मुक़द्दसा में हुआ।

विसाल से कुछ घण्टों पहले आपने अपने चचाज़ाद भाई सय्यद शाह मुहम्मद मेहदी हसन साहब कादरी बरकाती मद्दा ज़िल्लहुल आली (जो आपके बाद साहिबे सज्जादा हुए) को अपने पहलू (बग़ल) में बिठाया और छाती से लगाकर ख़ूब ज़ोर से दबाया, इस तरह तमाम इल्मे सीना हज़रत सय्यद शाह मुहम्मद मेहदी हसन कादरी बरकाती को अता फ़रमा दिया। उस वक़्त हज़रत मियाँ साहब किब्ला से बोला नहीं जाता था, इशारे से अपने वज़ाइफ़ का बस्ता (थैला) मंगवाया और उसमें से कुछ कागज़ात निकाल कर हज़रत सय्यद शाह मेहदी हसन साहब को दिए जिसमें कुछ असरारे ख़ानदानी और वसाया (वसीयतें) लिखे हुए थे और तहरीर किया गया था कि:

“मेरा वारिसे जाइज़ सय्यद शाह मेहदी हसन है और वही मेरे बाद मस्नदे बरकातिया का वारिस और मुस्तहिक् (हक़दार) है।”

हज़रत सय्यद शाह मेहदी हसन साहब अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं: “जिस वक़्त हज़रत मियाँ साहब किब्ला अलैहिर्रहमा ने **बाकी पेज न० 45 पर देखें।**

महबूबे खुदा हो

हुजूरे अकरम ﷺ की बारगाह में शरफे मिल्लत हज़रत सय्यद मुहम्मद
अशरफ मारहरवी दामा ज़िल्लुहू का नज़राना-ए-अकीदत। (इदारा)

आका हो, मेरे शाह हो, महबूबे खुदा हो
और फिर मुझे मालूम नहीं और भी क्या हो

तुम मा'रका-ए-दहर की एक ऐसी अदा हो
यह चर्ख भी सज्दे करे पर इक़ न अदा हो

जो तुमको न माने उसे अल्लाह न चाहे
कुरआन बताता है कि तुम कौन हो, क्या हो

रोज़े हों, नमाज़ें हों, ज़कातें हों कि इज हो
सब काम अकारत हैं अगर तुम न सरा हो

हम तैबा की गलियों में कहीं घुम रहे हों
और काफ़िला जाते में हमें भूल गया हो

हम कौन सुखनवर थे जो यह नात भी होती
और हों भी सुखनवर, तो न हो, तुम जो न चाहो

महशर में बड़ा शोर है अशरफ नहीं मिलता
दामन में छुपा बैठा हूँ अब तुम ही निबाहो

★★★

(माखूज़ अज़: नातिया मजमुआ "सल्लू अलैहि व आलिही")

मक़ामे अबुल हुसैन

इमाम अहमद रज़ा ख़ान कादरी बरकाती अलैहिर्रहमा की अपने मुशिदे इजाज़त नूरुल आरिफ़ीन हज़रत सय्यद शाह अबुल हुसैन अहमद नूरी मियाँ अलैहिर्रहमा की शान में लिखी हुई मन्क़बत तर्जुमा के साथ क़रेईन की ख़िदमत में पेश है। (इदारा)

बरतर क़यास से है मक़ामे अबुल हुसैन
सिद्दरा से पूछो रिफ़अते बामे अबुल हुसैन
सय्यदना अबुल हुसैन नूरी का मक़ाम अन्दाज़े
से बुलन्द व बाला है। सिदरतुल मुन्तहा में रहने वाले
फ़रिश्तों से पूछो कि उनका कोठा कितना बुलन्द है।

वारिस्ता पाए बस्ता-ए-दामे अबुल हुसैन
आज़ाद नार से है गुलामे अबुल हुसैन
शाह अबुल हुसैन नूरी का जो मुरीद,
आपका मुकम्मल नियाज़मंद है, वह दोजख़ की आग
से आज़ाद है।

जिस नख़्ख़े पाक में हैं छियालीस डालियाँ
एक शाख़ उनमें से है बनामे अबुल हुसैन
जिस खुजूरे मुबारक की 46 डालियाँ हैं
उनमें एक डाली हज़रत अबुल हुसैन की
आरामगाह है।

ज़र्रा को मेहर क़तरा को दरिया करे अभी
गर जोश ज़न हो बख़्शिशा आमे अबुल हुसैन
अगर हज़रत शाह अबुल हुसैन की बख़्शिशा
जोश मारे तो उसी आन में ज़र्रा को सूरज और क़तरा
को दरिया बना दे।

या रब हमें भी चाशनी उस अपनी याद की
जिससे है शक्करी लबो कामे अबुल हुसैन
ऐ अल्लाह! हमें भी अपनी याद की वही
चाशनी नसीब फ़रमा जिससे हज़रत अबुल हुसैन नूरी
के होंट और हलक़ मीठे हैं।

उनके भले से लाखों ग़रीबों का है भला
या रब ज़माना बाद ब कामे अबुल हुसैन
उनकी भलाई में बे शुमार ग़रीबों का भला
है। ऐ अल्लाह! तू ज़माने को हज़रत अबुल हुसैन की
मुराद के मुताबिक़ बना दे।

हाँ तालेअ-ए-रज़ा तेरी अल्लाह रे यावरी
ऐ बन्दा-ए-जुदूदे किरामे अबुल हुसैन

ऐ रज़ा! तेरे नसीब भले अल्लाह की ही मदद हुई कि तुझे उनका दामन
नसीब हो गया और तू अबुल हुसैन नूरी के आबा व अजदाद का गुलाम हुआ।

★★★

(माख़ूज़ अज़: हदाइके बख़्शिशा)

डॉ० अलीमुद्दीन बरकाती से एक मुलाकात

डॉ० अलीमुद्दीन बरकाती साहब उन खुश नसीब बरकातियों में से हैं जिन्हें हुजूर ताजुल उलमा सिराजुल उरफा सम्यद शाह औलादे रसूल मुहम्मद मियाँ कादरी बरकाती अलैहिर्रहमा से बराहे रास्त फैज़ाब होने का शर्फ़ मिला। आप बड़े नेक, शफीक, मुखलिस, काबिल और हुजूर ताजुल उलमा के बड़े चहीते मुरीद हैं। आपने P.C.M और P.C.B से इण्टर पास किया, फिर मवेशी डॉक्टर और होम्योपैथी डॉक्टर में डिप्लोमा किया और 17 अगस्त 1957 को मध्य प्रदेश में सरकारी मुलाज़िम हुए। 38 साल से ज़्यादा अर्से तक डॉक्टर की, उसके बाद रिटायर्ड हुए। आपको तसनीफ़ व तालीफ़ से बड़ी दिलचस्पी है। अब तक कई किताबें तसनीफ़ कर चुके हैं। इदारा पयामे बरकात की डॉक्टर साहब से जो बातें हुईं उन्हें कार्डिन की मालूमात के लिए यहाँ छाप रहे हैं। (इदारा)

पयामे बरकात: सबसे पहले आप अपना मुकम्मल तआरूफ़ करायें?

डॉ० अलीमुद्दीन: मेरा नाम अलीमुद्दीन और वालिद का नाम छिदामी है। छिदामी नाम रखने की वजह बताऊँगा तो बात लम्बी हो जायेगी। तारीख़े पैदाइश 31/12/1937 ई० है। मेरे आबा व अजदाद (बाप-दादा) मुगल थे। अंग्रेज़ों की ज़दो कोब (मार पीट) के डर से बलराम आये, फिर सराय गिरधारी नवाब गंज में 250 बीघा ज़मीन ख़रीद कर बस गए। मेरे पर दादा ने लोहारों में मेरे दादा की शादी की। दादा ने लोहारी का काम शुरू किया और लोहार कहलाने लगे। अब शेख़ सैफ़ी हो गए। जो भी शाही दरबार से जुड़ा हुआ था उसको अंग्रेज़ों ने तंग किया। इसी वजह से मेरे अजदाद ने दिल्ली छोड़ी और बिरादरी छुपाई। मेरी वालिदा मरहूमा नसब बताया करतीं मगर बचपन की वजह से तवज्जुह न दी इसलिए नाम बुजुर्गों के याद न रहे। मेरे वालिद के हिस्से की 50 बीघा ज़मीन मेरे

चचाज़ाद भाई के पोतों के पास नवाबगंज सराय ज़िला कासगंज में मौजूद है, जिसे मेरी 10 साल की उम्र में वालिदा मरहूमा ने चचा यार ख़ाँ को मुफ़्त में दे दिया। मैं P.C.M और P.C.B से इण्टर मीडिएट हूँ। 1950 में इण्टर P.C.M किया और 1961 में बायोलॉजी से किया। उर्दू की दर्जा चहारूम (चौथा) पास हूँ। कुरआन शरीफ़ भी पढ़ा हूँ। गुलज़ारे दबिस्ताँ फ़ारसी की किताब पढ़ी। मवेशी डॉक्टर (जानवरों का डॉक्टर) और होम्योपैथिक डॉक्टर में डिप्लोमा भी किया है। मवेशी में 1957 में जिसे मध्य प्रदेश सरकार ने ग्रेजुएशन के बराबर माना और होम्योपैथी में 1968 से रजिस्टर्ड होकर डिप्लोमा 1976 ई० में किया।

मेरी शादी वली मुहम्मद साहब बासी वालों की लड़की से 4 अप्रैल 1961 ई० को हुई। अल्लाह पाक ने मुझे 6 बेटे और 5 लड़कियाँ दीं। अव्वल के दो बेटे और बाद की एक बेटी बचपन में इन्तेक़ाल कर गए। 4 लड़के और 4 लड़कियाँ ब फ़ज़लिही तआला मौजूद हैं। दो

लड़कियों और एक लड़के की शादी हो चुकी है।

17 अगस्त 1957 से 31 दिसम्बर 1995 तक मध्य प्रदेश सरकार में मवेशी डॉक्टर की हैसियत से नौकरी की। अब मध्य प्रदेश सरकार की तरफ से 20 हजार से ज्यादा माहाना पेंशन पा रहा हूँ। रिटायर्ड होने के बाद कासगंज और नदरई में मवेशी दवाखाने लगाए मगर हालात कुछ ऐसे बनें कि मजबूरन बंद करना पड़ा। मैंने सरकारे मारहरा के फैज़ व करम से कुछ तसनीफी काम भी किए। सबसे पहले मैंने तावीज़ात व अमलियात नुकूश की 640 पेज की किताब “शमा-ए-शबिस्ताने बरकात” लिखी, जो पूरे हिन्दुस्तान में मकबूल हुई है। क्योंकि इस में पीराने मारहरा शरीफ़ ज़िला एटा, यूपी का रुहानी फैज़ छुपा हुआ है। उसके अलावा “शाने रहमतुल-लिल-आलमीन” (सरकारे दो आलम ﷺ की मुख़्तसर सवानेहे उमरी लिखी है।) “उर्दू टीचर” हिन्दी पढ़े हुआओं के लिये उर्दू पढ़ाने के लिए। “इस्लामी नाम” जिसमें 670 नाम लड़कों के और 111 नाम लड़कियों के लिखे हैं आधी किताब उर्दू में और आधी हिन्दी में लिखी है। नाम के सामने मतलब भी लिखा है।

अब “शमा-ए-शबिस्ताने बरकात” का दूसरा एडीशन इज़ाफ़े के साथ छपने के लिए तैयार है। “मजमूआ-ए-नात” मुख़्तलिफ़ शायरों और बुजुर्गों के कलाम खुसूसन बुर्जुगाने व मुतवस्सिलीने मारहरा शरीफ़ के कलाम शामिल हैं। यह भी छपने के इन्तेज़ार में है। इसके अलावा “इंग्लिश टीचर” अंग्रेज़ी पढ़ने वालों की मांग पर लिख रहा हूँ। तक़रीबन 2 महीने में इंशाअल्लाह पूरी हो जायेगी। मेरी तालीफ़ात मेरे

मुर्शिदाने मारहरा की खुली करामात हैं।

पयामे बरकात: ख़ानकाहे बरकातिया से आपकी वाबस्तगी कब से है और किस बुजुर्ग से शर्फ़े बैअत रखते हैं?

डॉ० अलीमुद्दीन: मैं 28 नवम्बर 1953 ई० बरोज़ इतवार सय्यदी ताजुल उलमा सिराजुल उरफ़ा बकीयतुस्सल्फ़ हुज्जतुल ख़ल्फ़ मौलाना मौलवी मुफ़्ती हाफ़िज़ क़ारी सय्यद शाह औलादे रसूल मुहम्मद मियाँ रहमतुल्लाहि अलैहि से बैअत हुआ। जब हज़रत के दस्ते मुबारका में मेरा हाथ था तो मेरी यह नीयत थी कि हुज़ूर ग़ौसे पाक ने एक चोर पर नज़रे फैज़ डाली तो कुतुब बना दिया, हज़रत भी मुझ पर नज़र डाल दें तो मेरा भी कुछ भला हो जाए। लिहाज़ा बैअत करने के बाद यह फ़रमाया कि “अब मैं जो कुछ कहूँगा उसे दोहराओगे नहीं बल्कि उस पर अमल करोगे।” जब यह फ़रमाया कि “अकाइदे अहले सुन्नत पर सख़्ती से कायम रहो! शरीअत की पाबन्दी करो। इस्लामी शक्ल व सूरत बनाओ, इस्लामी जामा पहनो!” तब नज़र उठा के मुझे देखा। मैंने दिल में सोचा कि मेरा काम हो गया। उस नज़र से क्या दिया वह जानें, अलबत्ता ज़ाहिरन यह हासिल हुआ कि नमाज़ तो मैं 11 साल से और रोज़े 15 साल से रखता ही था, मैंने शुरू से दाढ़ी रखी और कुर्ता पजामा और रामपूरी टोपी में डॉक्टरी जैसी सरकारी नौकरी 38 साल कर के रिटायर्ड हुआ।

पयामे बरकात: आपको ख़ानकाहे बरकातिया के किन किन मशाइख़ के औसाफ़ ने मुतास्सिर किया?

डॉ० अलीमुद्दीन: जब मैं बैअत हुआ उस वक़्त तीन पीर और भी थे। सय्यदुल उलमा, अह्सनुल

उलमा और छम्मा मियाँ साहबान। सब में इतना इत्तिहाद कि किसी का मुरीद किसी के पास हाजत रवाई के लिये जाता वह फौरन हाजत पूरी फरमाते। कभी यह नहीं पूछते कि तुम किस के मुरीद हो। मैं पीराने किराम के मुशतरका ज़माने का मुरीद हूँ। मौला तअ़ाला अब भी सभी सज्जादा नशीनों में इत्तेहाद व इत्तिफ़ाक़ इसी तरह कायम रखे। (आमीन)

मेरे मुर्शिद के विसाल के बाद मेरे मुहतरम फैज़ रसाँ बुजुर्ग हुज़ूर अहसनुल उलमा किब्ला मुस्तफ़ा हैदर हसन मियाँ की ज़ाते गिरामी थी। मेरे मुर्शिद से उन्ही के दस्ते करम से मिला और अब मौजूदा शहज़ादगान फैज़ रसाँ हैं। मौला यह फैज़ इसी तरह जारी व सारी रखे। ‘आमीन बिजाही सय्यदिल मुरसलीन अलैहि व अला आलिहिस्सलातु वत्तसलीमा’ हुज़ूर अहसनुल उलमा अलैहिर्रहमा की हस्ती ही सारे आलम में सबसे ज़्यादा मुताअस्सिर करने वाली थी।

पयामे बरकात: बरकत नामा के कारेईन के लिये आपका कोई पैग़ाम?

डॉ० अलीमुद्दीन: मैंने सुना कि सरकारे दो

आलम ﷺ ने फरमाया है कि “तू सुबह इस हाल में कर कि आलिमे दीन हो, या तालिबे इल्म हो या आलिमे दीन के पास बैठने वाला हो या आलिमे दीन से मुहब्बत करने वाला हो अगर यह चार चीज़ें तुझमें न हुई तो तू हलाक (बरबाद) हो जायेगा।” यह कुर्बे क़यामत का दौर है, हर जगह आलिमे दीन मौजूद नहीं न इल्मे दीन पढ़ने का इन्तिज़ाम। ऐसी हालत में **पयामे बरकात** जैसे रिसालों के पढ़ने से आलिमे दीन के पास बैठने और मुहब्बत करने की कमी को काफ़ी हद तक पूरा किया जा सकता है। लिहाज़ा **पयामे बरकात** का मुतालअ़ा बाईसे निजात होगा। ★★★



मुबारकबाद



जनाब फ़रहान अहमद बरकाती का हिन्दुस्तान के मशहूर इंजीनियरिंग कॉलेज “इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ़ टेक्नॉलॉजी (IIT) रुड़की उत्तराखण्ड” के Mechanical Engineering Dept में P.H.D में दाखिला होने पर पयामे बरकात की तरफ़ से मुबारकबाद और दुआयें। (इदारा)

पेज न० 40 का बाकी। मुझको अपनी छाती से लगाकर दबाया, मुझे कुछ होश न रहा। मैंने उसी आलमे बेहोशी में देखा कि पीराने सिलसिला हज़रत सय्यद शाह आले रसूल अहमदी अलैहिर्रहमा से लेकर हज़रत रसूले मक़बूल तक सबके सब हज़रत मियाँ साहब अलैहिर्रहमा के पास तशरीफ़ फरमा हैं, हज़रत मियाँ साहब ने मुझको उन बुजुर्गाने दीन के सुपुर्द किया और उन सब हज़रात ने मेरे सर पर

हाथ फेरा, उस वक़्त से मेरे दिल की जो कैफ़ियत है वह मेरा दिल ही जानता है।

मज़ारे मुबारक: हज़रत सय्यद शाह अबुल हुसैन अहमद नूरी मियाँ अलैहिर्रहमा का मज़ारे पुर अनवार दरगाहे आलिया बरकातिया के सेह्न (बरामदे) में मौजूद है जहाँ से आज तक फैज़ का सिलसिला जारी है। ★★★

★ ख़ानकाहे बरकातिया मारहरा शरीफ़, एटा।

कैंसर को जानिये!

कैंसर क्या है?: हमारे जिस्म के ख़लियात की गैर इख़्तियारी तक़सीम और उनके लगातार बढ़ते और फैलते रहने की वजह से कैंसर होता है।

एक अन्दाज़े के मुताबिक़ 5–10 % कैंसर ही मौख़सी (ख़ानदानी) (Hereditary) होता है। ज़्यादातर कैंसर के पैदा होने और फैलने के लिए माहौलियाती और मौख़सी दोनों तरह के अवामिल ज़िम्मेदार होते हैं।

कैंसर दिल की बीमारियों के बाद तरक्की याफ़ता और तरक्की पज़ीर मुल्कों में मौत की दूसरी बड़ी वजह है। दुनिया में आठ मौतों में एक कैंसर की वजह से होती है।

कैंसर के ज़रिए मरने वालों की शरह (दर), एड्स, टी.बी और मलेरिया से मरने वालों की कुल शरह (दरों) से ज़्यादा होती है।

गैर कुदरती ख़लियात का बढ़ना और जिस्म के एक हिस्से से दूसरे हिस्से में फैलना (Metastasis) कैंसर की ख़ास अलामात (निशानियों) में से है।

सभी तरह के कैंसर का 15 % दुनिया भर में इन्फेक्शन (ज़ख़्म) की वजह से होता है। तरक्की याफ़ता मुल्कों में इन्फेक्शन से होने वाले कैंसर की शरह ज़्यादा पाई गयी है।

कैंसर की तहकीक करने वालों के मुताबिक़ कैंसर और कैंसर से होने वाली मुमकिनता मौतों के आधे से ज़्यादा हिस्से को रोका जा सकता है और बाकी हिस्से

को जल्द पता करके उसका सही इलाज किया जा सकता है। इसी लिए कैंसर के बारे में सही जानकारी का होना बहुत ज़रूरी है।

ग़लत फ़हमियाँ:

● कैंसर कभी ठीक नहीं हो सकता। यह हर हाल में जानलेवा है।

● कैंसर की जाँच(बायेप्सी)/(Biopsy)/चीरा करने से कैंसर और फैल जाता है।

● कैंसर के मरीज के साथ रहने से और साथ में खाने पीने से कैंसर हो सकता है।

● कैंसर का इलाज अभी तक नहीं खोजा जा सका है।

● तम्बाकू और शराब का कैंसर से कोई ताल्लुक नहीं है। कैंसर जिस शख्स को होना होता है, अपने आप हो जाता है।

हकीक़त: कैंसर का इलाज मुमकिन है और कुछ मख़सूस अस्पतालों में मौजूद भी है।

● कैंसर वबाई मर्ज़ नहीं है। यह जरासीम (किटाणु) के ज़रिए एक शख्स से दूसरे शख्स तक नहीं फैलता।

● कैंसर किसी भी उम्र के शख्स को हो सकता है लेकिन बढ़ती उम्र के साथ इसका ख़तरा बढ़ता जाता है।

● कैंसर की जाँच कराने से कैंसर नहीं फैलता है।

● कैंसर का इलाज सही वक़्त पर और सही

मक़ाम पर, कैंसर के इलाज के माहिरीन से ही कराना चाहिये, ऐसा न करने से कैंसर बढ़ सकता है या लाइलाज हो सकता है।

- 80% कैंसर हमारे रहन-सहन और खाने पीने की ग़लत आदतों की वजह से होता है। तम्बाकू, गुटखा, पान मसाला, मोटापा, शराब, बीड़ी, सिगरेट, कैंसर से लड़ने की हमारे जिस्म की मुदाफ़अती ताक़त को कम कर देते हैं।

- शराब, ज़रूरत से ज़्यादा चिकनाई व गोश्त का इस्तेमाल और खाने में हरी सब्जियों/फलों का कम इस्तेमाल भी कैंसर होने की वजह हो सकता है।

- सफ़ाई का ख़याल न रखना, कई लोगों से या ग़ैर कुदरती जिस्मानी ताल्लुक भी कैंसर होने की वजह हो सकती है।

- कैंसर का इलाज लम्बे वक़्त तक चलता है। इलाज को बीच में ना छोड़ें इससे इलाज मुश्किल हो जाता है।

- कैंसर के इलाज के पूरा होने के बाद आपको रूटीन चेकअप के लिए कैंसर के माहिरीन डॉक्टर्स के पास आना ज़रूरी है।

जल्द पहचान इलाज आसान:

- कैंसर का इलाज मुमकिन है, कैंसर से डरने या मायूस होने की ज़रूरत नहीं है। कैंसर के इलाज में सबसे ज़रूरी है कि इलाज बिल्कुल शुरूआत में हो जबकि यह जिस्म के दूसरे हिस्सों में न पहुँचा हो।

- इसके लिये हमारी सोसायटी और डॉक्टर्स दोनों को बेदार होने (जागने) की ज़रूरत है। कैंसर को पहचानना मुश्किल नहीं है। कुछ शुरूआती पहचान के

ज़रिए इसको पहचाना जा सकता है। मख़सूस हालात में स्क्रीनिंग टेस्ट या और दूसरे टेस्ट के ज़रिए इसकी तश्ख़ीस (पहचान) की जाती है।

- कैंसर की पहचान में देरी के लिए मरीज़ या डॉक्टर या दोनों ज़िम्मेदार हो सकते हैं। कैंसर न जानना, सही वक़्त पर न पहचान पाना, कैंसर की बीमारी को आम बीमारी समझते रहना, डर की वजह से बीमारी को छुपाना, मायूसी की वजह से इलाज न कराना, यह सब कैंसर की स्टेज को बढ़ा देते हैं।

- प्राइमरी डॉक्टर के ज़रिये सही वक़्त पर कैंसर के मरीज़ को रेफर न करना, अस्पतालों में भारी भीड़ की वजह से इलाज में देरी होना, कैंसर अस्पतालों और कैंसर माहिरीन की कमी होना यह सब भी कैंसर की स्टेज को बढ़ाने के लिए ज़िम्मेदार हैं।

कैंसर की निशानियाँ:

- कैंसर जिस्म के किसी भी हिस्से में हो सकता है। जगह के मुताबिक इसकी अलामत जिस्म में मुख़लिफ़ हो सकती है। शुरूआती स्टेज में यह बिना अलामत के भी हो सकता है।

- गाँठ होना या न भरने वाला जख़्म होना।

- बोलने, निगलने में कठिनाई होना, सांस लेने में दिक्कत होना, मुँह से ख़ून आना।

- मुँह में सफ़ेद या लाल धब्बा होना, मुँह का कम खुलना, या न खुलना।

- लम्बी ख़ाँसी बने रहना या साँस फूलना जो इलाज से ठीक न हो रही हो।

- औरतों में छाती की गाँठ होना या बच्चे दानी से माहवारी के अलावा ख़ून या पानी आना।

● पेशाब या पाखाने की आदतों में बदलाव होना या इनके रास्ते से खून आना।

● तिल या मस्से का अचानक से बढ़ जाना या उसका रंग बदलना या उसमें तकलीफ होना।

यह सारी अलामत होने पर ज़रूरी नहीं कि आपको कैंसर ही हो। यह अलामत दूसरी आम बीमारियों में भी हो सकती हैं, लेकिन इन अलामत के होने पर एक बार कैंसर के डॉक्टर से जाँच कराना ज़रूरी है।

कैंसर का इलाज: तीन तरीके से मुमकिन है।

1. ऑपरेशन के ज़रिये, सर्जरी (Surgery)
2. दवा के ज़रिये, कीमोथेरेपी (Chemotherapy)
3. रेडियेशन के ज़रिये रेडियोथेरेपी (Radiotherapy)

कैंसर की किस्म और स्टेज (Stage) के हिसाब से कैंसर माहिरीन का पैनल यह तय करता है कि कौन सा तरीका मरीज़ के लिये बेहतर है। आजकल

कैंसर के इलाज में तीनों तरीके अलग-अलग वक़्त पर या एक साथ इस्तेमाल किये जाते हैं, इसे मल्टीमोडेलिटी ट्रीटमेंट (Multimodality Treatment) इलाज कहते हैं।

उम्मीद की किरण: कैंसर से घबरायें नहीं, परेशान न हों, कैंसर का सही जगह पर इलाज करायें। कैंसर के मरीज़ों की पूरी मदद करें, उनके साथ बेहतर सुलूक करें।

कैंसर बेदारी मुहिम में हमारा तआवुन (मदद) करें और समाज को बेदार करने की अपनी हर मुमकिन कोशिश करें। याद रखें डॉक्टर, समाज तथा सरकार के आपसी तआवुन से इस बीमारी की काफ़ी हद तक रोक थाम (Control) की जा सकती है। ★★★

★ सीनियर कैंसर स्पेशलिस्ट रेडियोथेरेपी डिपार्टमेंट।
जवाहर लाल नेहरू मेडिकल कॉलेज ए.एम.यू,
अलीगढ़, यूपी।

पेज न० 30 का बाकी: बिदअत होने का फ़तवा लगाकर नेकियों से रोकते हैं। हालाँकि खुद उनको दीन में ऐसी हज़ारों बातें जो नबी-ए-पाक के ज़माने में न थीं दिल से भाती हैं और वह खुद उन्हें करते नज़र आते हैं। आख़िर में अर्ज़ करता चलूँ कि आज कल में शाबानुल मुअज़्ज़म की पन्द्रहवीं रात में बाज़ ना अकिबत अन्देश जोशिले सुन्नी नौ जवानों ने खुराफ़ात ईजाद कर डाली हैं। जैसे आतिश बाज़ी करना, गोले बारूद फोड़ना, गुरुप बना-बना कर गली

कूँचों में घूमना, गाड़ियाँ हवाई रफ़तार में दौड़ाना, जानलेवा कर्तब दिखाना, इन सबकी शरीअत में कोई गुन्जाइश नहीं और न ही उलमा इन बातों की इजाज़त देते हैं। ऐसे कामों पर सवाब पाना तो दूर की बात है उल्टे अल्लाह के गुज़ब को दावत देना है। अलबत्ता इस रात के अच्छे कामों के साथ इन बुरे कामों के मिल जाने से अच्छे काम बुरे नहीं हो जायेंगे। अल्लाह तआला तमाम मुसलमानों को इस रात की क़दर करने और खुराफ़ात से बचने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। (आमीन)

★★★

★ उस्ताद जामिया अहसनुल बरकात, मारहरा शरीफ, (यूपी)।

इम्तिहान के तनाव से कैसे बचें?



इम्तिहान में बेहतरीन कामयाबी हर तालिबे इल्म का ख्वाब होता है। अपने इस ख्वाब को बेहतर से बेहतर तरीके से पूरा करने के लिए वह रातों दिन मेहनत करता है और उसके ज़ेहन पर रिज़ल्ट (Result) का एक टेन्शन (Tension) सवार हो जाता है। यह तनाव हकीकत में और कुछ नहीं बल्कि डॉक्टरी ज़बान में जिस्मानी और ज़ेहनी दोनों वजहों से होता है। इसको काबू में करना लाज़िम है, इससे पहले कि यह हमारी कामयाबी में रुकावट बन जाये।

ज़्यादातर लोग इम्तिहान के दौरान तनाव से गुज़रते हैं। कई लोगों को बस हल्का सा एहसास होता है और कुछ को इतना ज़्यादा कि उनका इम्तिहान देना ही मुश्किल हो जाता है। इसको दूर करना बहुत ज़रूरी है। इसको दूर करने के बहुत सारे तरीके हैं, जिस पर अमल करके ऐसे तनाव से बच सकते हैं और कामयाबी की राह पर आगे बढ़ सकते हैं।

तनाव से बचने के तरीके: हम अक्सर पढ़ना टालते रहते हैं जब तक इम्तिहान नज़दीक न आ जाए। यह ग़लती कभी न करें। अगर हम पूरे साल पढ़ें या तब से शुरू करें जब इम्तिहान की तारीख़ मिल जाए तो तनाव काफ़ी कम रहेगा, क्योंकि हमें पढ़ने के लिए और दोहराने के लिए वक़्त मिल जायेगा।

किताब कापियाँ और सब नोट्स (Notes) इकट्ठे रखें: अक्सर लोग आखिरी वक़्त पर नोट्स बनाते हैं और पढ़ने की किताबें इकट्ठा करते हैं। यह

बहुत बड़ी ग़लती है। हमें सब कुछ पहले से तैयार रखना चाहिए, हो सके तो एक फ़ोल्डर (Folder) बना लें जिसमें ज़रूरत का सिलेबस (Syllabus) पुराने टेस्ट पेपर वगैरह चीज़ें हों। इन्टरनेट (Internet) से जो भी चीज़ें डाउनलोड (Download) करनी हों पहले से कर लें ताकि वक़्त बरबाद ना हो।

छोटे ब्रेक (Break) लें: पढ़ने के दौरान थोड़ी देर वक़फ़ा ले लें इससे दिमाग़ को आराम मिलता है। थोड़ी देर टहलना, सोना, या दोस्तों से बात करना इससे तनाव कम हो जाता है और ज़ेहन पढ़ने के लिए फिर से तैयार हो जाता है।

मुतवाज़िन (मुनासिब) गिज़ा (Balanced Diet) लीजिए: अक्सर इम्तिहान के दौरान तनाव की वजह से बच्चे खाना पीना छोड़ देते हैं। यह बहुत बड़ी ग़लती है। इससे दिमाग़ में खून का दौरान कम हो जाता है और (Focus) करने की ताक़त ख़त्म हो जाती है। ज़रूरी यह है कि हम तीन मुनासिब खाना (Balanced Meals) लें और बीच-बीच में फल और मेवे खायें।

एक नई खोज से यह पता चलता है कि जंक फूड (Junk Food) खाना ना सिर्फ़ जिस्म के लिए बुरा होता है बल्कि दिमाग़ को भी नुकसान पहुँचाता है।

नींद पूरी करें: नींद की कमी तनाव की एक बड़ी वजह है। आठ घंटे की नींद बहुत ज़रूरी है ताकि पढ़ने के लिए ज़ेहन तैयार हो जाए। अक्सर देखा गया है कि जो बच्चे इम्तिहान से पहले रात भर जागते हैं,

उनका ज़ेहन कमज़ोर हो जाता है। Paper देते वक़्त आते हुए सवाल भी हल नहीं कर पाते हैं। यह भी इम्तिहान के ख़राब हो जाने की एक बड़ी वजह है।

इम्तिहान से पहले खुद से इम्तिहान लें (Pre Test): याद किये हुए मवाद का खुद से इम्तिहान लें, सबक बार-बार दोहराते रहें और जब तक यकीन ना हो जाए इम्तिहान लेते रहें। इसके दो फ़ायदे होंगे एक तो बार-बार करने से मशक (Exercise) होती रहेगी दूसरे यह कि आपके दिल से ख़ौफ़ भी निकल जायेगा।

Subject Teacher से मशवरा करें: याद किए हुए मवाद पर उस्ताद से मशवरा भी तनाव को कम करने में काफ़ी मददगार हो सकता है। क्योंकि उस्ताद के ज़रिये दी हुई तक्वीयत (Reinforcement) तलबा के लिए काफ़ी मुअस्सिर होती है।

ज़ेहन को मुतमइन करने के तरीके (Relaxation Techniques): पढ़ते वक़्त लगातार तनाव की वजह से सुस्ती आ जाती है। इससे बचने के लिए लम्बी साँस लें और हल्की फुल्की कसरत

(Stretching Exercise) करें। (Stretching Exercises) से नसों में जो खिंचाव होता है वह दूर हो जाता है और आपका तनाव कम हो जाता है। खुद को मुतमइन करने का एक तरीका यह भी है कि जिस सबक को भूल जाने का शुब्हा ज़्यादा हो उसे बार-बार याद करें यहाँ तक की वह सबक अच्छी तरह याद हो जाए।

पेशेवराना सलाह (Professional Advice): अगर ऊपर दिए गए तरीकों से कोई फ़ायदा न हो रहा हो तो आप से गुज़ारिश है कि आप प्रोफ़ेशनल (Professional) सलाह लें इससे पलहे कि खुदा न ख़्वास्ता आपको ज़ेहनी नुकसान (Irreversible Damage) हो जाये जिससे आप आइंदा उभर ना पायें।

आख़िर में गुज़ारिश है कि आप हमेशा मुसबत रवैया (Positive Attitude) रखें और बस इतना याद रहे कि अल्लाह उनकी मदद करता है जो खुद की मदद करते हैं। इसलिए अपनी मेहनत पर भरोसा रखें। ★★

★ वाइस प्रिन्सिपल अलबरकात पब्लिक स्कूल, अलीगढ़।

पेज न० 35 का बाकी: विसाल हुआ और हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु अन्हुमा के हुजरे (कमरे) में दफ़न किये गये। गुम्बदे ख़ज़रा आप ही के रौज़ा-ए-पाक के ऊपर बना है।

औलाद: आपकी कुल 7 औलादें हुईं। 4 बेटियाँ, हज़रत ज़ैनब, हज़रत रुक़य्या, हज़रत उम्मे कुलसूम और हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हुन्ना और 3 बेटे, हज़रत कासिम, हज़रत अब्दुल्लाह

रज़ियल्लाहु अन्हुम, यह सारी औलाद हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा से थीं और एक बेटे हज़रत इब्राहीम रज़ियल्लाहु अन्हु जो हज़रत मारिया किब्तिय्या रज़ियल्लाहु अन्हा से थे।

हज़ूर ﷺ के तीनों शहज़ादे बचपन ही में वफ़ात पा गए सिर्फ़ शहज़ादियाँ बा हयात रहीं। आपका नसबे पाक आपकी सबसे छोटी शहज़ादी हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से चला। ★★★

★ डायरेक्टर अलबरकात इस्लामिक रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट, अलीगढ़।

मुर्शिदाने मारहरा के तब्लीगी असफ़ार

मुर्शिदाने मारहरा (हुज़ूर अमीने मिल्लत और हुज़ूर रफीके मिल्लत दामत बरकातुहुम) अपनी दीनी, मिल्ली, तदरीसी, ख़ानकाही, रिफ़ाही, तालीमी, घरेलू और दूसरी मसख़फ़ियात के बावजूद कभी-कभी दीन की तब्लीग़ और अल्लाह के बन्दों की हिदायत व रहनुमाई के लिये दूर दराज़ का सफ़र करते हैं और दीनी मजलिसों और मज़हबी प्रोग्रामों में शरीक होते हैं। हर दौरे में बे शुमार लोग आपके नसीहत आमज़ कलेमात से फ़ायदा उठाते हैं और बहुत से लोग आपके मुबारक हाथों पर तौबा कर के सिलसिला-ए-बरकातिया में दाख़िल भी होते हैं। इन मुर्शिदाने किराम के कुछ अहम दौरों की रिपोर्ट यहाँ पेश की जा रही है। (इदारा)

मुहम्मद अकबर कादरी *

हुज़ूर अमीने मिल्लत सय्यद शाह मुहम्मद अमीन मियाँ कादरी बरकाती के दौरे

10 ता 13, मई (2015) ई० गोण्डल, मौरबी, धौराजी और राजकोट (गुजरात) का दौरा:

10 मई को हज़रत जहाज़ के ज़रिया राजकोट तशरीफ़ ले गए। राजकोट हवाई अड्डे पर बिरादरे तरीक़त युनुस भाई दिगर अहबाब के साथ हज़रत के इस्तिक़बाल के लिये पहले ही पहुँच चुके थे। सलाम और दस्त बोसी के बाद हज़रत साहब युनुस भाई के यहाँ तशरीफ़ लाये, वहीं आपका का क़याम रहा।

10 मई को गोण्डल में हज़रत की सरपरस्ती में इज्तिमाई शादी का प्रोग्राम था। वहाँ के लोगों ने हज़रत के इस्तिक़बाल का शाहाना इन्तिज़ाम किया था। हज़रत के पहुँचते ही लोग आप पर परवाना वार टूट पड़े और दस्त बोसी की सआदत हासिल की, उसके बाद हज़रत को बग्गी में बिठाकर ब शक्ले जुलूस वह भी इस तरह कि आगे आगे नातख़्वाँ नातें पढ़ रहे थे इस तरह आप प्रोग्राम हॉल में पहुँचे और चार जोड़ों का

निकाह पढ़ाया। इस मौक़े पर हज़रत का मुख़्तसर ख़िताब भी हुआ, जिसमें आपने सुन्नत के मुताबिक़ शादी करने और इसराफ़ व फ़ुज़ूलियात से बचने की लोगों को हिदायत फ़रमाई। इसी दिन एक और प्रोग्राम बनाम “जश्ने मुर्शिदे आज़म” मुनअक़िद हुआ, जिसकी सरपरस्ती हज़रत ने फ़रमाई और हज़रत ही की दुआ पर महफ़िल का इख़िताम भी हुआ।

11 मई को हज़रत “मौरबी” तशरीफ़ ले गए जहाँ आपकी सरपरस्ती में “जश्ने मेराजुन्नबी” ﷺ के नाम से एक प्रोग्राम रखा गया था। हज़रत अ़सर की नमाज़ पढ़कर मौरबी के लिये रवाना हुए, और जनाब हाजी वली मुहम्मद साहब के यहाँ क़याम फ़रमाया। इस प्रोग्राम में मेराजुन्नबी ﷺ के हवाले से हज़रत का बड़ा मालूमाती ख़िताब हुआ, जिसको सुनकर सामईन बहुत महज़ूज़ हुए। आपने अपने ख़िताब में फ़रमाया कि 10 नबवी में जब यके बाद दीगरे जनाब अबू तालिब और

हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा का इन्तक़ाल हो गया और हुज़ूर ﷺ को बज़ाहिर इसका सदमा पहुँचा इसी लिए सीरत की किताबों में इस साल को “आमुल हुज़्न” यानी ग़मों वाला साल कहा गया है, तो अल्लाह तआला ने अपने प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के इस ज़ाहिरी ग़म को दूर करने के लिये आपकी मेराज कराई, और अपने पास बुलाया ताकि महबूब का ग़म दूर हो जाए। आपने फ़रमाया कि आज बहुत से बंद अक़ीदा लोग हुज़ूर ﷺ की मेराजे जिस्मानी का इन्कार करते हैं। याद रखिए अहले सुन्नत का मौक़िफ़ यही है कि आपको मेराज जिस्मानी हुई थी। यह महफ़िल हज़रत के ख़िताब के बाद सलात व सलाम और आपकी दुआ पर ख़त्म हुई।

12 मई को हज़रत ने मौरबी में अ़सर की नमाज़ अदा फ़रमाई उसके बाद राजकोट के लिये रवाना हुए, यहाँ भी हज़रत की सरपरस्ती में मेराजुन्नबी ﷺ का प्रोग्राम सजाया गया था, यहाँ भी हज़रत का ख़िताब हुआ लेकिन मुख़्तसर और मालूमाती जिसको लोगों ने बहुत पसन्द किया। इस ख़िताब में आपने मुसलमानों को अपने नबी-ए-पाक

की सीरत पढ़ने पर भी ज़ोर दिया। यह प्रोग्राम भी हज़रत की दुआ पर इख़तेताम को पहुँचा। प्रोग्राम के बाद काफ़ी देर तक लोग आपसे मिलते रहे फिर हज़रत क़याम गाह पर आये और आराम फ़रमाया।

13 मई को धौराजी के मुसलमानों ने “जश्ने ख़्वाजा ग़रीब नवाज़” के नाम से एक प्रोग्राम रखा था। यह जलसा हज़रत ख़्वाजा शेरांनी अलैहिर्रहमा की

दरगाह के एहाते में हज़रत अमीने मिल्लत की सरपरस्ती में हुआ था। हज़रत गोण्डल से अ़सर की नमाज़ पढ़कर धौराजी तशरीफ़ ले गए। इशा की नमाज़ के बाद प्रोग्राम शुरू हुआ, तक़रीबन रात के 12 बजे तक मक़ामी व बैरूनी उलमा-ए-किराम के बयानात होते रहे। उसके बाद हज़रत का ख़िताब हुआ, जिसमें आपने ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ अलैहिर्रहमा की सीरत और उनकी दावत व तब्लीग़ और हिन्दुस्तान में मशाइख़े चिशितया की तब्लीगी कोशिशों का मुख़्तसर जाएज़ा पेश करते हुए फ़रमाया कि हिन्दुस्तान के मुसलमानों को ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ अलैहिर्रहमा का एहसान मन्द होना चाहिए कि उनकी बरकत से हिन्दुस्तान की सर ज़मीन पर इस्लाम का नूर फैला और कुफ़र की तारीकियाँ दूर हुईं। हज़रत के ख़िताब के बाद सलात व सलाम हुआ, फिर आपकी दुआ पर महफ़िल ख़त्म हुई, उसके बाद मुसाफ़ा और दुआओं का सिलसिला जारी रहा। इस मौक़े पर कुछ लोग दाख़िले सिलसिला भी हुए, फिर हज़रत ने आराम फ़रमाया। 14 मई को बाद नमाज़ फ़जर चाय नाश्ता हुआ फिर हज़रत एयरपोर्ट तशरीफ़ ले गये और वहाँ से जहाज़ के ज़रिये दिल्ली तशरीफ़ लाए और फिर घर आ गए। इन चारों दिनों में हज़रत का क़याम यूनुस भाई तेली के घर रहा और सारे प्रोग्रामों में यूनुस भाई और उनके बेटे सिराज बरकाती हज़रत वाला के साथ रहे और यह राकिमुल हुरूफ़ भी हमराह था। पोरबन्दर से बिरादरे तरीक़त अब्दुल ग़नी भाई और उनके बिरादरान और दीगर अहबाब भी मिलने के वास्ते यूनुस भाई के घर गोण्डल आये थे। ★★★

★ अकाउंट ऑफ़िसर, अलबरकात ऐज़ुकेशनल सोसाइटी, अलीगढ़।



हुजूर रफीके मिल्लत सय्यद शाह नजीब हैदर नूरी बरकाती के दौरे



7 नवम्बर को बिलग्राम शरीफ का दौरा:

7 नवम्बर 2015 ई० मुताबिक 24 मुहर्रमुलहराम 1437 हि० बरोज़ सनीचर बाद नमाज़े फजर खानकाहे बरकातिया मारहरा शरीफ से हुजूर रफीके मिल्लत सय्यदी सरकार नजीब हैदर मियाँ साहब, अमाने अहले सुन्नत सय्यद मुहम्मद अमान मियाँ साहब के साथ उर्स फातेह-ए-बिलग्राम में शिरकत की गर्ज से तशरीफ ले गए। बिहमिदल्लाह तआला खैर व खूबी के साथ बिलग्राम शरीफ तक का सफ़र तय हुआ और दिन के 12 बजे सरकाराने मारहरा अपने आबाई सरज़मीन बिलग्राम शरीफ पर पहुँच गए। हज़रत के बिलग्राम शरीफ पहुँचने पर खानकाहे कादरिया चिशितया सुगरविय्या के साहबे सज्जादा हज़रत सय्यदी सरकार उवैस मुस्तफा वास्ती मद्दा ज़िल्लुहुल आली, आपके बड़े भाई सय्यद शाह बादशाह मियाँ और दीगर अहबाब ने आपका निहायत पुर ज़ोर इस्तक़बाल किया, उसके बाद सरकार रफीके मिल्लत ने ज़ाद्रीने किराम से मुलाक़ातें कीं और खानकाह मुअल्ला की सर गर्मियों का जाएज़ा लिया। इस सिलसिले में आप खानकाह के तहत चलने वाले दाख़ल उलूम दावतुस्सुगरा भी तशरीफ ले गए और खानकाह शरीफ में ज़ेरे तामीर मस्जिद का भी जाएज़ा लिया, उसके बाद खाने वगैरह से फ़ारिग हुए, फिर शाम 4 बजे अपने अजदादे किराम हज़रत मीर सय्यद शाह अब्दुल वाहिद बिलग्रामी और हुजूर साहिबुल बरकात के वालिदे गिरामी हज़रत मीर सय्यद शाह मुहम्मद उवैस

रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा की बारगाहों में हज़िरी दी और खानकाह शरीफ से दरगाहे शरीफ तक (जो तकरीबन एक किलो मीटर की दूरी पर है) पैदल तशरीफ ले गए।

बाद नमाज़े इशा प्रोग्राम हुआ, जिसमें सरकार रफीके मिल्लत साहब का नसीहतों भरा ख़िताब हुआ। आपने फ़रमाया: उर्स फातेहे बिलग्राम में तशरीफ लाए हुए अज़ीज़ ज़ाएरीन आप हज़रात बुजुर्गों से बे पनाह अकीदत की वजह से जन्नत की तलाश में उनके दरवाज़ों तक आते हैं। जिसके लिये कभी आप बिलग्राम शरीफ कभी मारहरा शरीफ और कभी अजमेर शरीफ की ज़ियारत करते हैं। इन मुक़द्दस बारगाहों की हज़िरी आपको सदा मुबारक मगर आपको याद रखना चाहिए कि आपकी जन्नत आपके घर में है यानी आपके वालदैन्। आप उनको खुश रखो यही तो आपकी जन्नत है। उनकी खुशी में अल्लाह की खुशनूदी है और उनको नाराज़ करने में अल्लाह तआला की नाराज़गी है। अपने किसी भी कौल व फ़ेल और अपनी हरकत से उनको हरगिज़-हरगिज़ तकलीफ न पहुँचाओ।

आपने फ़रमाया कि उर्स का पैग़ाम है कि आप पंच वक्ता नमाज़ों की पाबन्दी करो और सारी नमाज़ें मस्जिद में जमाअत के साथ अदा किया करो। अहकामे शरअ की पाबन्दी करो। जहाँ तक इस खानवादा-ए-सुगरविय्या की बात है तो यह मुसल्लमा हकीकत है कि यह खानवादा चाहे बिलग्राम शरीफ हो

या मारहरा मुकद्दसा, अपनी पीरी मुरीदी की बुनियाद पर नहीं बल्कि अपनी इल्मी कुव्वत व इस्तेदाद की बुनियाद पर मकबूले आम हुआ है।

आपने फरमाया कि हज़रत सय्यद मीर सुगरा अलैहिर्रहमा की औलाद में जितने औलिया अल्लाह पैदा हुए हैं उतने औलिया हिन्दुस्तान में किसी दूसरे वली के ख़ानदान में पैदा नहीं हुए हैं।

31 अक्टूबर को बदायूँ शरीफ़ का दौरा:

31 अक्टूबर 2015 ई० बरोज़ सनीचर बाद नमाज़े इशा बदायूँ शरीफ़ में हुज़ूर रफीके मिल्लत हज़रत सय्यद नजीब हैदर बरकाती नूरी दामत बरकातहुमुल आलिया उसें कादरी मजीदी में शरीक होने के लिए बदायूँ शरीफ़ तशरीफ़ ले गए। आप जैसे ही ख़ानकाहे आलिया कादरिया पहुँचे बड़े ही पुर ज़ोर अन्दाज़ से हज़रत का इस्तक़बाल किया गया। आप साहिबे सज्जादा हज़रत सालिम मियाँ कादरी साहब के हमराह मिम्बर पर जलवा फ़रमा हुए। हुज़ूर रफीके मिल्लत की सरपरस्ती में उर्स का आगाज़ हुआ, पहले उलमा-ए-किराम के बयानात हुए फिर कुछ देर बाद आपका ख़िताब हुआ। आपने अपने ख़िताब के दौरान फ़रमाया: “कि मारहरा शरीफ़ और बदायूँ शरीफ़ के ताअलुकात बड़े मज़बूत थे, मज़बूत हैं और मज़बूत रहेंगे।” हुज़ूर रफीके मिल्लत मद्दा ज़िल्लुहुल आली ने आलिमे रब्बानी शहीदे बग़दाद हज़रत अल्लामा मौलाना उसैदुलहक़ कादरी रहमतुल्लाह अलैहि का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया कि “वह अपने ज़माने के बहुत बड़े आलिम, मुफ़्ती और परहेज़गार थे।” इस मुबारक मौके पर हुज़ूर रफीके मिल्लत ने हज़रत मौलाना अतीफ़

मियाँ कादरी और हज़रत मौलाना अज़्ज़ाम मियाँ कादरी साहबान को ख़िलाफ़त से नवाज़ा और दोनों कादरी शहज़ादों के सरो पर अपने मुबारक हाथों से साफ़ा बाँधा।

हज़रत अज़्ज़ाम मियाँ कादरी साहब की ख़िलाफ़त के बारे में फ़रमाया: कि “14 रबीउल अब्वल की रात थी। मैं सो रहा था। मैंने ख़्वाब देखा कि दरगाहे मुअल्ला में हाज़िर हूँ, सरकारे नूर की बारगाह में और रब्बे का‘बा की क़सम इसमें कोई झूट नहीं है, ख़्वाब में देखता हूँ कि मैं सरकार नूरी मियाँ साहब की बारगाह में, हाज़िर हूँ, ताजदारे बदायूँ और अज़्ज़ाम मियाँ भी हैं हज़रत नूरी मियाँ के मज़ार से आवाज़ आ रही है कि “अज़्ज़ाम मियाँ को ख़िलाफ़त दे दो अज़्ज़ाम मियाँ को कुछ दे दो! अज़्ज़ाम मियाँ को ख़िलाफ़त दे दो!” फिर हम और हज़रत (सालिम मियाँ कादरी) और अज़्ज़ाम मियाँ हुज़ूर शम्से मारहरा के मज़ार पर गए तो हुज़ूर शम्से मारहरा के मज़ार से साफ़ा ज़ाहिर हुआ और मैंने अज़्ज़ाम मियाँ के सर पर ख़िलाफ़त का इमामा बाँध दिया, उसके बाद रफीके मिल्लत ने फ़रमाया: आज तक जितनी ख़िलाफ़तें दी थीं, वह अपने ऐतबार से दी थीं लेकिन यह ख़िलाफ़त शम्से मारहरा हज़रत अच्छे मियाँ के इशारे पर दी है। फिर हुज़ूर रफीके मिल्लत ने दोनों शहज़ादों को अपनी नेक दुआओं से नवाज़ा।

आख़िर मैं सलात व सलाम और ताजदारे अहले सुन्नत हज़रत सालिम मियाँ कादरी मद्दा ज़िल्लुहुल आली की दुआ पर उर्स इख़िताम पज़ीर हुआ। उसके बाद हुज़ूर ब ख़ैर व ख़ूबी मारहरा शरीफ़ तशरीफ़ ले आए। ★★★

★ उस्ताद मदरसा कासिमूल बरकात मारहरा शरीफ़।

ख़ानकाहे बरकातिया में उर्स हुज़ूर

साहिबुल बरकात:

इमामे सिलसिला-ए-बरकातिया हुज़ूर साहिबुल बरकात सय्यद शाह बरकतुल्लाह इश्की मारहरवी अलैहिर्रहमा का 295 साला दो रोज़ा उर्स मुबारक 9, 10 मुह्रमुलहराम 1437 हि० मुताबिक 23, 24 अक्टूबर 2015 ई० को ख़ानकाहे आलिया कादरिया बरकातिया मारहरा शरीफ़ में बड़ी अकीदत से मनाया गया, जिसमें ख़ानवादा-ए-बरकातिया के मख़्दूमों के अलावा उलमा व मशाइख़ और अवामे अहले सुन्नत बड़ी तादाद में शरीक हुए।

पहले दिन का प्रोग्राम: नौवीं मुह्रम आशूरा की रात इशा की नमाज़ के बाद ख़ानकाह शरीफ़ में महफ़िले पाक सजी, जिसका आगाज़ कारी मुहम्मद जावेद आलम उस्ताद जामिया अहसनुल बरकात की तिलावते कलामुल्लाह से हुआ। उसके बाद जामिया अहसनुल बरकात के तलबा ने नात व मन्क़बत पेश कीं। फिर हुज़ूर रफ़ीक़ मिल्लत सय्यद नजीब हैदर नूरी साहब का शानदार ख़िताब हुआ। आपने फ़रमाया: ऐसा नहीं है कि मारहरा, बैरैली और बदायूँ ने ही हमें मुहब्बते रसूल ﷺ का दर्स दिया है, बल्कि नबी-ए-पाक ﷺ से मुहब्बत उनके तबर्स्कात की ताज़ीम का सबक हमें खुद सहाबा-ए-किराम से मिला है। आख़िर में हुज़ूर अमीने मिल्लत सय्यद शाह

मुहम्मद अमीन मियाँ कादरी साहब ने ख़िताब फ़रमाया। जिसमें आपने इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और अहले बैत के फ़ज़ाइल पर रौशनी डाली, फिर हुज़ूर साहिबुल बरकात अलैहिर्रहमा के हालाते ज़िन्दगी को बयान करते हुए फ़रमाया: हुज़ूर साहिबुल बरकात का यह 295 साला उर्स मुबारक है। इन्शाअल्लाह आज से 5 साल बाद यानी 1442 हि० को आपका 300 साला उर्स खुसूसी एहतिमाम से मनाया जायेगा। यह महफ़िल सलात व सलाम के बाद आपकी दुआ पर ख़त्म हुई।

दूसरे दिन का प्रोग्राम: 10 मुह्रम यौमे आशूरा को 8 बजे सुबह दरगाह पर कुरआन ख़्वानी ख़तमे कादरिया और हल्का-ए-ज़िक्क़ हुआ। उसके बाद 9 बजे से प्रोग्राम शुरू हुआ, जिसकी निज़ामत हफ़िज़ व कारी मुहम्मद इरफ़ान साहब ने की। पहले किरात हुई, फिर कुछ देर तक नात व मन्क़बत का सिलसिला चलता रहा, उसके बाद कर्बला के वाक़ेयात पर मुफ़्ती मुहम्मद हनीफ़ साहब का मालूमाती ख़िताब हुआ। फिर हुज़ूर शरफ़े मिल्लत सय्यद मुहम्मद अशरफ़ मारहरवी साहब ने शोहदा-ए-कर्बला की बारगाह में मन्जूम ख़िराजे अकीदत पेश की। उसके बाद हुज़ूर रफ़ीक़े मिल्लत साहब का ख़िताब हुआ। यह महफ़िल भी सलात व सलाम और हुज़ूर अमीने मिल्लत दामा ज़िल्लुहू की दुआ पर ख़त्म हुई। प्रोग्राम में मक़ामी व

बैरुनी उलमा व मशाइख के अलावा हज़ारों की तादाद में मुरीदीन व मुतवस्सिलीन शरीक हुए।

रिपोर्ट: मौलाना मुहम्मद अकबर अली बरकाती। उस्ताद जामिया अहसनुल बरकात, मारहरा शरीफ।

उर्से कासमी बरकाती (नवम्बर 2015) का आँखों देखा हाल:

हर साल की तरह इस साल भी मुजहिदे बरकातियत साहिबे उर्से कासमी हज़रत सय्यद शाह इस्माईल हसन उर्फ़ शाह जी मियाँ अलैहिर्रहमा का उर्स बड़ी अक़ीदत से मनाया गया, जिसमें हिन्दुस्तान और बैरुने हिन्द के सिलसिला-ए-कादिरया बरकातिया से वाबस्ता मुरीदीन व मुतवस्सिलीन हज़ारों की तादाद में शरीक हुए और रूहानी फ़यूज़ो बरकात से अपने आपको मुशरफ़ किया।

इस साल उर्से कासमी 13/14/15 नवम्बर 2015 ई० को मनाया गया। तीनों दिनों की तक़रीबात का मुख़्तसर जाइज़ा पेशे ख़िदमत है।

12 नवम्बर 2015 ई० बरोज़ जुमेरात बाद नमाज़े इशा ख़ानकाह शरीफ़ में मीलाद की महफ़िल सजी, जिसका आगाज़ कारी ताबिश रज़ा ने तिलावते कलामुल्लाह से किया, उसके बाद मुहम्मद कासिम बरकाती और मुहम्मद अमान बरकाती ने बारगाहे रिसालत में नाते पेश कीं। फिर जनाब डॉ० अहमद मुजतबा सिद्दीकी साहब का लिखा हुआ बरकाती तराना मुहम्मद ख़ालिद, मुहम्मद फ़रमान और मुहम्मद सिब्तेन साहबान ने सुनाया जिसे हाज़िरीन ने बहुत पसन्द किया। उसके बाद कासिम सैफ़ी साहब ने “पानी और

उसका तहफ़फ़ुज़” के मौज़ू पर तक़रीर की। मुहम्मद फ़ैज़ान साहब मुतअल्लिम जामिया अहसनुल बरकात ने अंग्रेज़ी ज़बान में हुज़ूर साहिबुल बरकात की हयात पर मालूमाती गुफ़्तगू की। फिर हुज़ूर शरफ़े मिल्लत दामा ज़िल्लुहू ने अपना कलाम पेश फ़रमाया। आख़िर में हुज़ूर रफ़ीके मिल्लत दामा ज़िल्लुहू ने मुख़्तसर गुफ़्तगू की और हुज़ूर अमीने मिल्लत मद्दा ज़िल्लुहूल अली की दुआ पर मजलिस का इख़िताम हुआ।

पहली महफ़िल: 13 नवम्बर बरोज़ जुमा बाद नमाज़े फ़जर दरगाहे बरकातिया में बा कायदा ज़िक्रे कादिरिया से उर्से कासमी बरकाती का आगाज़ हुआ। कुरआन ख़्वानी और ज़िक्र के बाद ज़ायरीन ने नाश्ता किया। फिर 9 बजे सुबह पहली महफ़िल का दरगाहे बरकातिया में आगाज़ हुआ। सबसे पहले कुरआन पाक की तिलावत हुई। तिलावत के बाद कासिम बरकाती ने हम्दे बारी तआला पेश की और जामिया अहसनुल बरकात के मुहम्मद अमान बरकाती, नबील बरकाती और नवाज़ अली ने नात व मन्क़बत पेश की।

आख़िर में साहिबे सज्जादा हुज़ूर अमीने मिल्लत साहब ने ख़िताब फ़रमाया। आपने तमाम ज़ायरीने उर्से कासमी का इस्तक़बाल किया। ज़ियारत के उसूल व आदाब बताए फिर सलात व सलाम के बाद महफ़िल का इख़िताम हुआ।

दूसरी महफ़िल: 13 नवम्बर बरोज़ जुमा बाद नमाज़े इशा मुज़ाहरा-ए-क़िरत का आगाज़ गुलशने बरकात में कारी मुहम्मद ख़ालिद साहब की तिलावत से हुआ। उसके बाद सय्यद फ़ुरक़ान अली, अलीगढ़ और कारी जावेद साहब, उस्ताद अहसनुल बरकात, ने नाते

पढ़ीं। फिर 9:25 पर मुकाबला-ए-किरात शुरू हुआ, जिसमें हर कारी के लिये 5 से 6 मिनट का मौका दिया गया। इस मुकाबले में मदारिसे हिन्द के 13 मुन्तखब कारियों ने शिरकत की।

मुकाबले का नतीजा इस तरह था।

पहला ईनाम कारी मुनव्वर अली साहब, मदरसा हनफिय्या ज़ियाउल कुरआन लखनऊ ने हासिल किया, दूसरा ईनाम कारी अब्दुस्सलाम, जामिया अशरफिया मुबारकपुर, और तीसरा ईनाम कारी शहज़ाद आलम, दारुल उलूम अनवारे मुस्तफ़ा लखनऊ ने हासिल किए।

कारी अतीकुर्रहमान साहब अलीगढ़, कारी यूसुफ़ साहब लखनऊ, कारी फ़ारूक़ साहब बस्ती और कारी अब्दुस्सलाम साहब गोण्डा ने जज के फ़राइज़ अन्जाम दिए।

इस प्रोग्राम में मौलवी कासिम सैफी ने “कुरआन और जदीद साइंस” के हवाले से बड़ी अच्छी गुफ्तगू की। हुज़ूर शरफ़े मिल्लत साहब ने कुछ मसाईल बयान फ़रमाए। आख़िर में हुज़ूर अमीने मिल्लत ने चन्द किताबों का रस्मे इजरा फ़रमाया, जिनकी तफ़सील यह है:

(1) **तिमाही बरकत नामा** (हिन्दी), (2) **चहार अनवा** (उर्दू), (3) **हयाते मशाइख़े मारहरा** (हिन्दी), (4) **सुल्तानुल हिन्द** (उर्दू), (5) **मुफ़्ती-ए-आज़म की नातिया शायरी का तहकीकी जायेज़ा** (उर्दू) और (6) **अहले सुन्नत की आवाज़** (उर्दू)। रस्मे इजरा के बाद साहिबे सज्जादा हुज़ूर अमीने मिल्लत साहब किब्ला की दुआ पर मजलिस का इख़िताम हुआ।

तीसरी महफ़िल: 14 नवम्बर बरोज़ सनीचर बाद नमाज़े फ़जर बड़ी और छोटी दोनों दरगाहों पर

अल-बरकात इस्लामिक रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट और जामिया अहसनुल बरकात के तलबा व असातिज़ा की निगारनी में कुरआन ख़्वानी और ख़तमे कादरिया शरीफ़ का एहतिमाम हुआ। फिर नाश्ता के बाद 9 बजे दिन में गुलशने बरकात में महफ़िले पाक का आगाज़ हुआ। सबसे पहले कारी अमान बरकाती साहब ने तिलावते कलामुल्लाह पेश किया, उसके बाद मुहम्मद कासिम बरकाती और मुहम्मद फैज़ान साहबान ने नात व मन्क़बत पेश किये फिर मौलाना अब्दुल वाहिद, मौलाना मुहम्मद हसन मरकज़ी और मौलाना रियाज़ुद्दीन अमजदी साहबान का ख़ानदाने बरकात की ख़िदमात पर बड़ा मालूमाती ख़िताब हुआ। उसके बाद “अवाम के सवालात और उलमा-ए-किराम के जवाबात” का प्रोग्राम शुरू हुआ, जिसमें अवामे अहले सुन्नत ने दिल खोल कर शरीअत व तरीक़त के हवाले से हज़रत मौलाना मुफ़्ती निज़ामुद्दीन रज़वी साहब, सदरुल मुदर्रिसीन जामिया अशरफिया, मुबारकपुर से सवालात किए और हज़रत ने कुरआन व हदीस की रौशनी में शाफ़ी व काफ़ी जवाबात दिए। फिर हज़रत मौलाना मसऊद बरकाती साहब की तक़रीर हुई, जिसमें उन्होंने यह कीमती मशवरा दिया कि मुकाबला-ए-किरात में पहला ईनाम हासिल करने वाले उम्मीदवार को उमरे का टिकट दिया जाता तो ज़्यादा बेहतर होता, इससे तलबा में मज़ीद जोश व ख़रोश पैदा होता। जिसे फ़ौरन हुज़ूर रफ़ीक़े मिल्लत ने कुबूल फ़रमा लिया और ऐलान किया कि अगले साल से हम अव्वल ईनाम पाने वाले उम्मीदवार को उमरे का टिकट देंगे। दूसरे को अजमेर शरीफ़ और तीसरे को ख़ानकाहे

बरकातिया की ज़ियारत करायेंगे। आखिर में हज़रत अमीने मिल्लत ने ज़ायरीन का इस्तक़बाल किया और अपने दुआइया कलेमात से नवाज़ा।

उसी दिन बाद नमाज़े असर, दोनों दरगाहों पर उलमा-ए-किराम की निगरानी में रूहानी व तरबियती कैम्प लगा जिसमें ज़ायरीन को मौलाना मुहम्मद नोमान अज़हरी साहब ने ज़रूरी मसाईल सिखाये।

बाद नमाज़े मग़रिब हज़रत सय्यद शाह अब्दुल जलील अलैहिर्रहमा की दरगाहे आलिया से चादर व गागर का जुलूस निकाला गया, जिसकी क़यादत वली-ए-अहद सज्जादा सय्यद मुहम्मद अमान मियाँ साहब ने की। इसमें लोग बड़े पैमाने पर शरीक थे।

चौथी महफ़िल: 14 नवम्बर 2015 ई० उर्से कासमी की सबसे बा बरकत महफ़िल ख़रका पोशी की महफ़िल होती है। जिसमें साहिबे सज्जादा बुजुर्गों के तबर्स्कात पहनते हैं। इस साल 9 बजे रात को साहिबे सज्जादा हुज़ूर अमीने मिल्लत सय्यद अमीन मियाँ दामा ज़िल्लुहू बुजुर्गों के तबर्स्कात पहन कर हवेली शरीफ़ सज्जादगी से बाहर तशरीफ़ लाए। हज़रत के इस्तिक़बाल के लिये इतना मजमा इकट्ठा हो गया था कि एक क़दम आगे बढ़ाना दुश्वार था। लोग “अल्लाह-अल्लाह” की सदायें बुलन्द कर रहे थे। हज़रत मशाइख़ के हुज़ूर मुराक़बे के बाद स्टेज पर तशरीफ़ लाए।

इस प्रोग्राम में क़ारी शेख़ ईदरीस साहब साउथ अफ़्रीका ने सात लेहजों में तिलावते कलामुल्लाह से सामईन को महजूज़ किया। फिर मुहम्मद सिद्दीक़, मौलाना मूसा रज़ा, क़ारी इरफ़ान, मुईन बरकाती और क़ारी रिज़वान साहबान ने नात व मनाकिब पेश किये।

मुहम्मद आबिद सल्लमहू ने अरबी में तक़रीर पेश की।

उसी दिन हज़रत अल्लामा मौलाना अब्दुल मुबीन नोमानी साहब को उनकी ख़िदमाते जलीला के ऐतराफ़ में निशाने ताजुल उलमा अवार्ड से नवाज़ा गया। वली अहद सज्जादा हज़रत सय्यद मुहम्मद अमान मियाँ कादरी ने सिपास नामा पढ़कर उनकी बारगाह में पेश फ़रमाया।

पाँचवी और आखिरी महफ़िल: 15 नवम्बर को उर्से कासमी की आखिरी महफ़िल का आगाज़ ठीक 9 बजे सुबह हुआ। पहले तिलावत हुई उसके बाद नात व मन्क़बत पढ़ी गई, फिर जामिया अहसनुल बरकात के तलबा ने तक़रीरें कीं उसके बाद मौलाना फ़ारूक़ मदनापुरी की नात हुई फिर सय्यद मुहम्मद अमीन साहब मालेगाँव, मौलाना शमीमुज्ज़माँ कोलकाता और मौलाना सगीर अहमद जोखनपुरी का ख़िताब हुआ। उनके बाद हुज़ूर रफ़ीके मिल्लत ख़िताब के लिये तशरीफ़ लाए। आपने बरकातियों को ख़िताब करते हुए फ़रमाया: “खाना चबा-चबा कर खाओ, पानी बैठकर चूस-चूस कर पीयो, दाहिने करवट सोया करो, वालदैन की इज़्ज़त करो, नमाज़ों की पाबन्दी, उलमा से मुहब्बत करो, उनमें कीड़े निकालना छोड़ दो, फिरका परस्ती छोड़ दो, दरगाहों पर आ कर बुजुर्गों की ज़िन्दगी को देखो, खुद भी खाओ और पढ़ोसियों को भी खिलाओ, अपने बच्चों को अच्छी तालीम देने की कोशिश करो और जिन ग़रीबों के पास बच्चों को तालीम दिलाने के लिये पैसे न हों, उनकी ज़िम्मेदारी ख़ानकाहे बरकातिया लेगी।

उनके बाद हुज़ूर शरफ़े मिल्लत ने मुख़्तसर ख़िताब फ़रमाया। आखिर में हुज़ूर अमीने मिल्लत दामा

जिल्लहू तशरीफ़ लाए। आनपने मुरीदीन व मुतवस्सिलीन को नसीहतों से नवाज़ा। आपे तमाम हज़रात का शुक्रिया अदा किया और कुल शरीफ़ व सलात व सलाम के बाद आलमे इस्लाम के लिये और सारी दुनिया में अमन व शान्ति के लिये दुआ फ़रमाई और मुरीदीन व मुतवस्सिलीन की सेहत व सलामती के लिये भी दुआएँ कीं और मसलके हक़ पर चलने और ईमान पर ख़ातिमे की दुआ फ़रमाई। उसके बाद महफ़िल का इख़िताम हुआ, महफ़िल के बाद तबर्स्कात शरीफ़ा की ज़ियारत कराई गई। फिर लोग खाना खाकर अपने अपने घरों को रवाना हो गए।

रिपोर्ट: मौ० मुहम्मद मुदस्सिर, मौ० रज़ाउलहक़, अब्दुल बारी, मुहम्मद अकबर कादरी।

काहिरा (मिस्र) में उर्स कासमी का प्रोग्राम

पिछले साल की तरह इस साल भी सर ज़मीने मिस्र में उर्स कासमी बरकाती मनाया गया 15 नवम्बर 2015 को इतवार के दिन मिस्र की राजधानी काहिरा में इमारतुस्सफ़ा के वसी व अरीज़ हॉल में उर्स कासमी बरकाती का प्रोग्राम हुआ, जिसमें हिन्दुस्तान व बैरूने हिन्द के बहुत से उलमा व तलबा ने शिरकत की। इस प्रोग्राम की सदरत हज़रत मौलाना मुफ़्ती रज़ाउल मुस्तफ़ा मिस्बाही अज़हरी (बाहिस फ़ी किस्मील हदीस दिरासाते उलिया) ने की। प्रोग्राम का आगाज़ मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद शरीफ़ बरकाती मिस्बाही अज़हरी (कुल्लिया उसूलुद्दीन किस्मुत्तफ़सीर) की तिलावते कुरआन से हुआ। जलसे की निज़ामत मौलाना मुहम्मद मुज़फ़्फ़र बरकाती मारहरवी (कुल्लिया उसूलुद्दीन) ने

की। जिसमें हज़रत मौलाना हामिद रज़ा बरकाती मिस्बाही अज़हरी (उसूलुद्दीन किस्मुल हदीस) और मौलाना सद्दाम हुसैन निज़ामी जामी ने मन्ज़ूम ख़िराजे अक़ीदत पेश किया। इस मौके पर मुफ़्ती रज़ाउल मुस्तफ़ा मिस्बाही अज़हरी ने ख़ानकाहे बरकातिया के कारनामों पर तफ़सीली रौशनी डाली। आपने फ़रमाया कि ख़ानकाहे बरकातिया हुज़ूर अमीने मिल्लत साहब किब्ला की सर बराही में जिस ख़ामोशी और तेज़ी के साथ ज़मीनी सतह पर दीनो मिल्लत कि ख़िदमत कर रही है वह बे मिसाल है। मौलाना हामिद रज़ा बरकाती मिस्बाही अज़हरी ने बाज़ बुर्जुगाने मारहरा का तआरुफ़ पेश करते हुए मुख़्तसरन पूरी तारीख़े बरकातिया का ज़िक्र किया और उनके कारनामों को मशाले राह बनाने की दावत दी।

जलसे का इख़िताम कुल शरीफ़ और हज़रत मौलाना सय्यद हसनैन रज़ा बरकाती मिस्बाही अज़हरी (कुल्लिया अल-लुगा अल-अरबिया सदर इत्तेहाद तलबा-ए-हिन्द) की पुरसोज़ दुआओं पर हुआ और हज़िरीन में तबर्स्क तकसीम किया गया। इस मौके पर मौलाना सय्यद मुनीब अहमद इन्द्राबी नक़्शबन्दी, मौलाना शादाब हैदर अज़हरी नेपाल, मौलाना मुहम्मद महबूब रज़ा अज़हरी अलीमी, मौलाना तय्यब रज़ा अज़हरी कानपुरी, मौलाना मुहम्मद अली सुब्हानी अज़हरी अलीमी और मौलाना मुहम्मद फ़ैज़ान अशरफ़ निज़ामी तनवीरी समेत बहुत से उलमा व तलबा मौजूद थे।

रिपोर्ट: मुहम्मद आबिद अली निज़ामी।

अल-बरकात ABIRTI में खुतूत नवेसी का मुकाबला

नवम्बर 2015 के शुरू में अलबरकात इस्लामिक रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट (ABIRTI) में जेरे तालीम उलमा-ए-किराम के अन्दर सहाफ़त का जौक पैदा करने और तहरीरी सलाहियतों को जगाने के लिए डॉ० अफ़ज़ल हुसैन मिस्बाही साहब का सहाफ़त के मौजू पर लैक्चर हुआ, उसके बाद ABIRTI के डायरेक्टर हज़रत मौलाना सय्यद मुहम्मद अमान मियाँ साहब किबला और डॉक्टर मौसूफ़ के आपसी मश्वरे से तय हुआ कि साले अव्वल और साले आख़िर के उलमा के बीच उर्दू अख़बारात में खुतूत नवेसी का मुकाबला कराया जाए जिससे उनमें खुद एतमादी पैदा होगी। चुनाँचे 4 नवम्बर से मुकाबला शुरू हुआ। पहले पहल एक दो खुतूत छपे फिर काफ़ी तादाद में छपने लगे और महीने के आख़िर में तो किसी किसी दिन 20 से 30 तक खुतूत एक साथ छपे। इस तरह 24 दिन में हिन्दुस्तान के तकरीबन 27 मशहूर अख़बारों में उलमा के 270 खुतूत और 11 मज़ामीन छपे।

उलमा-ए-किराम के इस हैरत अंगेज़ कारनामे से खुश होकर डायरेक्टर साहब ने फैसला किया कि इन उलमा की हौसला अफ़ज़ाई के लिये एक शानदार प्रोग्राम मुनअक़िद किया जाए और उलमा व दानिशवरान की मौजूदगी में उन्हें ईनाम और सर्तीफ़िकेट दिया जाए। चुनाँचे 5 दिसम्बर 2015 को अलबरकात (MBA) के कॉन्फ़्रेंस हॉल में हुज़ूर अमीने मिल्लत सय्यद शाह मुहम्मद अमीन मियाँ कादरी दामा ज़िल्लुहू सदर अलबरकात ऐजुकेशनल सोसायटी की

सदारत में एक प्रोग्राम हुआ, जिसमें अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी और अलबरकात के असातज़ा के अलावा अलीगढ़ शहर के अइम्मा-ए-मसाजिद और दिगर दानिशवरान ने शिरकत फ़रमाई। प्रोग्राम का आगाज़ मौलाना फ़ैज़ान सरवर जामई की तिलावते कलामुल्लाह से हुआ, फिर तलबा ने ग्रुप में बारगाहे रिसालत में नात पेश की, उसके बाद अलबरकात ऐजुकेशनल सोसायटी के ज्वॉइन्ट सेक्रेटरी जनाब डॉक्टर अहमद मुजतबा सिद्दिकी ने अलबरकात इस्लामिक रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट का मुख़्तसर तआरूफ़ कराया फिर हज़रत सय्यद मुहम्मद अमान मियाँ कादरी ने प्रोग्राम को मुनाक़िद करने का मक़सद बयान फ़रमाया और मुकाबले की रूदाद पेश की जिसे सुनकर सामईन ने ख़ूब सराहा। उसके बाद “तलबा-ए-मदारिस में इस्लामी सहाफ़त का रूझान इमकानात” के मौजू पर डॉक्टर अफ़ज़ल हुसैन मिस्बाही साहब असेस्टेंट प्रोफ़ेसर सागर यूनिवर्सिटी मध्य प्रदेश का बहुत ही मालूमाती ख़िताब हुआ। फिर जनाब प्रोफ़ेसर S.M.A खुर्शीद साहब सदर शोबा-ए-फ़ारसी अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी ने ख़िताब किया। आपने फ़रमाया कि मैं जब भी अलबरकात आता हूँ तो बड़ी खुशी होती है क्योंकि अलबरकात ऐजुकेशनल सोसायटी के परचम तले जो मिल्लत की ख़िदमात अन्जाम दी जा रही हैं उसका अन्दाज़ा आने वाले वक़्त में होगा। उसके बाद हुज़ूर अमीने मिल्लत सय्यद मुहम्मद अमीन मियाँ कादरी साहब का मुख़्तसर ख़िताब हुआ, जिसमें आपने तलबा को इख़्लास के साथ दीन व मज़हब की ख़िदमत करने की नसीहत फ़रमाई। फिर तक़सीमे ईनामात का प्रोग्राम

हुआ। साले आखिर के उलमा को उनकी बेहतरीन कारकरदगी पर हुजूर साहिबुल बरकात ट्राफी दी गई और मौलाना मुबीन अहमद जामई, मौलाना रज़ाउल हक अमजदी और मौलाना मुहम्मद मोहसिन मिस्बाही को सबसे ज्यादा खुतूत लिखने पर अव्वल दोम और सोम ईनाम दिया गया। इनके अलावा दस से ज्यादा खुतूत लिखने वाले 8 तलबा को भी ट्राफियाँ दी गईं और सारे उलमा को सर्टीफिकेट दिया गया। प्रोग्राम का इख्तिताम हुजूर अमीने मिल्लत साहब की दुआ पर हुआ।

रिपोर्ट: हाफिज मुहम्मद राशद बरकाती।
लाइब्रेरियन, अलबरकात इस्लामिक रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट, अलीगढ़।

खानकाहे बरकातिया में दो रोज़ा सालाना फ़ातिहा हुजूर अहसनुल उलमा:

खानकाहे बरकातिया मारहरा शरीफ में दो रोज़ा उसें हुजूर अहसनुल उलमा अलैहिर्रहमा 15, 16 रबीउल आखिर 1438 हि० मुताबिक 25, 26 जनवरी 2016 ई० को बड़ी अक़ीदत व एहतिराम से मनाया गया। जिसमें सरकाराने मारहरा के अलावा साहिबे उर्स के खुलफ़ा व मुरीदीन और उलमा व मशाइख़ बड़ी तादाद में शरीक हुए। 15 रबीउल आखिर को इशा की नमाज़ के बाद खानकाह शरीफ के सेहन में प्रोग्राम शुरू हुआ। जिसमें तिलावते कुरआन के बाद नात व मन्क़बत और फिर शोएब बरकाती काल्पवी की तक़रीर हुई। 8:50 पर कुल शरीफ़ और फ़ातिहा हुई। कुल शरीफ़ के बाद दुबारा प्रोग्राम शुरू हुआ, जो 11:30 तक चला। इस दौरान मौलाना फ़ारूक़ मदनापुरी, मौलाना कासिम हबीबी की मन्क़बतों के अलावा मुफ़्ती मुहम्मद हनीफ़

बरकाती साहब की तक़रीर भी हुई। आखिर में हुजूर शरफ़े मिल्लत सय्यद मुहम्मद अशरफ़ मारहरवी ने कुछ अशआर सुनाए और फिर सलात व सलाम के बाद हुजूर अमीने मिल्लत दामा ज़िल्लुहू की दुआ पर महफ़िल इख्तिताम को पहुँची।

16 तारीख़ को फ़जर की नमाज़ के बाद खानकाह शरीफ़ में कुरआन ख़ानी, ख़त्मे कादरिया और हल्का-ए-ज़िक्र हुआ। फिर सब ने नाश्ता किया और खानकाह शरीफ़ के बाहर क़दीम जलसागाह में पहुँचे। 9 बजे प्रोग्राम शुरू हुआ, जिसमें तिलावते कुरआन के बाद नात व मन्क़बत पेश की गईं। फिर मौलाना ततहीर रज़ा बरेलवी, मौलाना वफ़ार अहमद अज़ीज़ी की तक़रीरें हुईं। आखिर में हुजूर शरफ़े मिल्लत दामा ज़िल्लुहू ने दहशत गर्दी की मज़म्मत में शानदार ख़िताब फ़रमाया और तमाम सुन्नियों को इससे दूर रहने की ताकीद फ़रमाई। 1 बजे के क़रीब सलात व सलाम फिर हुजूर अमीने मिल्लत दामा ज़िल्लुहू की दुआ पर प्रोग्राम ख़त्म हुआ। प्रोग्राम में बड़ी तादाद में उलमा व मशाइख़ और मुरीदीन व मुतवस्सिलीन शरीक हुए।

रिपोर्ट: मुहम्मद अकबर कादरी।

अकाउंट ऑफ़िसर, अलबरकात ऐजुकेशनल सोसायटी, अलीगढ़। ★★★

ऐलान

कारेईने किराम से गुजारिश है कि पयामे बरकात पढ़ने के बाद अपने तास्सुरात हमें ज़रूर भेजें।

WhatsApp No 07607207280

E-mail: payamebarkaat@gmail.com

नामा बर

गिरामी क़द्र साहबज़ादा हज़रत मौलाना सय्यद मुहम्मद अमान मियाँ कादरी।

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहु।

उम्मीद है बख़ैर होंगे। “तिमाही बरकत नामा” के ज़रिए आपने हिन्दी ज़बान में मज़हबी मजल्लाती सद्दाफ़त का जो सिलसिला शुरू किया है, मौजूदा ज़माने में उसकी एफ़ादियत से किसी को इन्कार नहीं हो सकता। यह इक्दाम मज़हबी अक़दार को फैलाने का सबब भी बनेगा और सिलसिला-ए-बरकातिया को बढ़ाने का ज़रिया भी, साथ ही उर्दू से ना वाकिफ़ हिन्दी दाँ तबका इसे दिल से कुबूल करेगा। क्योंकि उन्हें अपना मज़हबी रंग भी समझ में आयेगा और सूफ़ियाना मिजाज भी। और एक बात यह भी है कि सालाना “अहले सुन्नत की आवाज़” सिर्फ़ ख़वास अहले इल्म में पढ़ा जाता है मगर यह रिसाला हर तबका पढ़ेगा। किब्ला हज़रत सय्यद मुहम्मद अशरफ़ मारहरवी ने अपने गिराँ क़द्र कलेमात में जिन 17 मकासिद व उमूर की निशान दही फ़रमाई है, अगर तवज्जोह से उन्हें सामने रख कर पाबन्दी से यह रिसाला तरतीब दिया जाता रहा तो बहुत जल्द उसकी मक़बूलियत का ग्राफ़ ऊँचा होगा और कांरेईन का इश्क़ बन जायेगा। इसका नक्शे अव्वल जैसा है हम मज़ीद बेहतरी की दुआ करते हैं और आपकी पूरी इदारती टीम को मुबारकबाद पेश

करते हैं। तमाम सुन्नियों से गुज़ारिश है कि यह कीमती तोहफ़ा दिल से कुबूल करें और इसको फैलाने में हिस्सा लें।

तौफीक अहसन बरकाती, मुम्बई।

(एडीटर माहनामा सुन्नी दावते इस्लामी)

★★★

मुकर्रमी एडीटर साहब।

सलाम मसनून

“बरकत नामा” का पहला शुमारा 28 नवम्बर 2015 ई० को मौसूल हुआ। देख कर बड़ी मसरत और दिली इत्मिनान हुआ। इस अजीम ख़ानवादे से हम जैसे मुब्तादियों के लिये भी मालूमात आसान और सहल अन्दाज़ में पहुँचाई गयीं। हालाँकि मेरी मादरी ज़बान उर्दू है इसलिए पहली नज़र में हिन्दी रिसाला कुछ अजीब सा लगा, मगर उसे पढ़कर अन्दाज़ा हुआ कि सिर्फ़ रस्मुल ख़त हिन्दी है वरना ज़बान सलीस उर्दू है, जिसमें मख़ारिज की भी काफ़ी रिआयत की गई है। अलहम्दुलिल्लाह ख़ानकाहे बरकातिया की यह कोशिश दीन की तब्लीग़ के सिलसिले में एक बहुत नेक क़दम है। अल्लाह तआला से दुआ है कि हुज़ूर ग़ौसे पाक के वारिसों को और तरक्कियाँ अता फ़रमाए। मेरी दुआ है कि यह सिलसिला कायम रहे और यह मालूमात एक तहरीक की शक्ल में अवाम तक पहुँचाई जायें।

(पूर्व) प्रो० मसऊद हुसैन सिद्दीकी।

(जे.एन मेडिकल कॉलेज ए.एम.यू, अलीगढ़।)

अस्सलामु अलैकुम वरहमतुल्लाह

अल्लाह तआला की हृदय व जाने रहमत पे लाखों सलाम के बाद उस मुकद्दस खानदान का जिक्र जो तकरीबन 400 सालों से अपनी इल्मी, रुहानी व तसनीफी खिदमात से बर्रे सगीर और दूसरे ममालिक में इल्म की रौशनी फैला रहा है। जिसकी माज़ी की करीब तरीन मिसाल हज़रत सय्यदी ताजुल उलमा का तसनीफी व तालीमी मिशन, जिसको आज बढ़ाए हुए मौजूदा सज्जादा नशीन सरकार अमीने मिल्लत और उनके बिरादराने गिरामी क़द्र ने अलीगढ़ में एक दीनी व असरी इदारा अलबरकात ऐजुकेशनल इंस्टीट्यूट और उसकी कई शाखें बहुत ही कम वक़्त में कायम कर दीं और सरकार अमीने मिल्लत ने अपनी ज़िन्दगी का मक़सद मिल्लत को इल्मी दौलत से माला-माल करने का बना लिया है। जिसके लिए उन्होंने मारहरा शरीफ़ में जामिया अहसनुल बरकात के नाम से बहुत ही शानदार दीनी इदारा कायम फ़रमा दिया है जो मुख़्तसर अर्से में एक अज़ीम क़िले की शक्ल इख़्तियार कर चुका है।

सरकार ताजुल उलमा की याद को कायम रखते हुए करीब 23 साल से हर साल उर्से कासमी के मौक़े पर “अहले सुन्नत की आवाज़” मालूमात और मज़ामीन से भर पूर नायाब रिसाला अवाम को अ़ता फ़रमा रहे हैं। अपने बुजुर्गों की इन खिदमात को आज बढ़ाते हुए सय्यदी शाह अमान मियाँ (वली-ए-अहद सज्जादा नशीन) ने उर्से कासमी 2015 में “बरकत नामा” के नाम से एक तिमाही शानदार रिसाला जारी फ़रमाया।

उनकी यह पहली कोशिश देखकर ही उनकी

और पूरी टीम की मेहनत व काविश बिलकुल ज़ाहिर है। जिसके टाईटल पेज से लेकर छपाई और मज़ामीन का इन्तख़ाब तक उनकी मेहनत की अक्कासी कर रहा है। दिल की गहराईयों से दुआ गो हूँ कि मौला तआला उनको और उनकी पूरी टीम को ख़ूब-ख़ूब इल्मे नाफ़े और सेहत व तन्दरुस्ती के साथ उम्रे दराज़ अ़ता फ़रमा कर ज़्यादा से ज़्यादा दीनी खिदमात से अवामे अहले सुन्नत को फ़ैज़याब फ़रमाए। (आमीन)

उस्मान ग़नी बरकाती व अब्दुल कादिर बरकाती पोरबन्दर (गुजरात)। ★★★

मुकर्रमी सलाम मसनून!

आपका मुवक्क़र रिसाला मौसूल हुआ मा‘शाअल्लाह मज़ामीन बड़े अच्छे हैं, अकाइद व मामूलात और मशाइख़ के ताल्लुक़ से उम्दा और बुनियादी बातें जमा करदी गई हैं। ज़बान भी सादा और आसान है। हिन्दी ज़बान में इतना मालूमाती रिसाला पहली बार नज़र से गुज़रा, उम्मीद है कि हिन्दी दाँ हज़रत इससे ज़्यादा मुस्तफ़ीज़ होंगे और यह उनकी ज़रूरत भी थी जिसे आप मशाइख़े मारहरा ने पूरा किया। अल्लाह तआला इस रिसाले को दवाम बख़्शे। मज़ीद एक दुआ के कॉलम का इज़ाफ़ा हो जाए तो बहुत बेहतर होगा जिसमें दुआ की एफ़ादियत के साथ अह्दादीस में वारिद दुआयें मआ तर्जुमा व मतन शाए हों, उम्मीद है कि तवज्जोह फ़रमायेगे।

वस्सलाम

मुहम्मद नईम कादरी अज़हरी (प्रिन्सिपल अल जामियातुल हाशिमिया, बीजापुर, कर्नाटक)।

★★★

मुश्किल अलफ़ाज़ की तशरीह

इस शुमारे के जिन मज़ामीन में मुश्किल अलफ़ाज़ आए हैं उनके मअानी और तशरीहात को यहाँ लिखा जा रहा है।

उमूर: अम्र की जमा, काम।

मुहकम: कुरआने पाक की वह आयत जिसका माअना साफ़ व वाज़ेह हो।

खुजूअ: आजिज़ी, गिड़गिड़ाना।

कुरा: क़ारी की जमा, इल्मे क़िरत के मुताबिक़ कुरआन पढ़ने वाला।

फ़ुक्हा: फ़कीह की जमा इल्मे दीन के जानने वाले।

मुक़्तदी: इमाम के पीछे खड़ा होने वाला।

हामिला: वह औरत जिसके पेट में बच्चा हो।

संगसार करना: यह एक इस्लामी क़ानून है जिसमें बलात्कार करने वाले को कमर तक ज़मीन में गाड़ कर और पत्थर मार कर हलाक़ किया जाता है।

तावील: ज़ाहिरी मतलब से किसी बात को फेर देना।

हादिस: नई चीज़ जो पहले न हो, फ़ानी।

बअस: मुदौ का दुबारा ज़िन्दा होना, क़यामत।

नार: आग, जहन्नम

ग़िलमान: जन्नत के कम उम्र ख़ादिमा।

मुसल्लम: तस्लीम किया गया, साबित।

मा'रेफ़त: पहचान, खुदा सनाशी।

श्म्सी निज़ाम: सूरज के इर्द-गिर्द सय्यारों के चक्कर लगाने का तरीक़ा।

कुतर: सम्त, किनारा, वह ख़ते मुस्तक़ीम जो दायरे के मरकज़ से गुज़रता हुआ दोनों तरफ़ मुहीत तक चला जाए।

तसदीक़: सच होने की ताईद।

मादी: असली, कुदरती, तबई।

ग़ारत: लूट, तबाही व बरबादी।

सवानेह निगार: किसी शख्स के ह़ालाते ज़िन्दगी को लिखने वाला।

नज़र अन्दाज़ करना: तवज्जोह न देना।

रौनक़ अफ़रोज़ होना: तशरीफ़ लाना, किसी बड़े आदमी का आना, बैठना।

ताबेअ: फ़रमाँबरदार

अक़ीक़: एक क़ीमती पत्थर।

मशरब: मज़हब, मिल्लत, तरीक़ा।

ख़ूरेज़: खून बहाने वाला।

चख़्र: आसमान, चक्कर।

अकारत: बरबाद, ला ह़ासिल, बेफ़ायदा।

सुख़नवर: फ़सीह व बलीग़, शायर, मुक़र्रिर

ख़लियात: जिस्म का मुख़्तसर तरीन खाना (अंग)।

तरक़की पज़ीर: बढ़ने वाला, तरक़की क़बूल करने वाला।

सपास नामा: तहरीरी इज़हारे शुक्र।